ॐ

समर्पण

श्रीमान् दानवीर तीर्थभक्तशिरोमणि रायबहादुर

राज्यभूषण रावराजा सर नाईट

सेठ हुकमचंदजी साहब

के

करकमलों में

श्री दानवीर रायबहादुर राज्यभूषण रावराजा सर

सेठ सरूपचंदजी हुकमचंद दिगंबर जैन

पारमार्थिक संस्थाओं की

प्रबंधकारिणी कमेटी

द्वारा

६० वें वर्ष के

हीरक जयन्ति महोत्सव के

सुअवसर पर सादर सप्रेम

समर्पित

आषाढ सुदी १. सम्वत् १९९१. वीर सं. २४६०.

अनुक्रमणिका.

फोटू की सूची.

पृष्ठ

निवेदन.

महान् पुरुषों के जीवन चरित्र पढ़ने से प्रत्येक व्यक्ति को अनेक प्रकार की शिक्षाएं प्राप्त होती हैं, उस समय की स्थिति का अनुभव प्राप्त होता है, सद्गुणो के अनुकरण करने की भावनाएं तथा उत्साह की वृद्धि होती है इसी कारण बड़े बड़े पुरुषों के जीवन चरित्र प्रकाशित होते हैं। श्रीमान् दानवीर रायबहादुर राज्यभूषण रावराजा सर सेठ हुकमचंदजी सा० भी महान् पुरुषों में से ही हैं आपके जीवन के अनेक गुण संसार को अनुकरणीय हैं। सौभाग्य से मेरा संबंध श्रीमान् दानवीर रावराजा सर सेठजी सा० से आज २७ वर्ष से है, समय समय पर आपके जीवन की विशिष्ट बातें जो मुझे मालूम होती रहीं उनको अपनी डायरी में अंकित करता रहा। और इच्छा थी कि सेठ साहब के जीवन चरित्र को हिंदी में संकलित कर पुस्तकाकार रूप मे प्रकाशित किया जावे। हर्ष है कि वह इच्छा पूर्ण होने का यह सुअवसर प्राप्त हुआ। संकलित जीवन चरित्र को आधुनिक भाषा शैली में हमारे मित्र श्रीयुत् बा. सुखसंपत्तिरायजी भंडारी ने जिन्होंने हिन्दी की कई उत्तमोत्तम पुस्तकें लिखी हैं बृहद् रूप लिखने का परिश्रम उठाया है जो यथावसर प्रकाशित किया जावेगा जिसके लिये हम भंडारीजी के अत्यंत आभारी हैं।

चूंकि श्रीमान् दा. रा. सर सेठजी साहब की हीरक जयंति उत्सव मनाने का प्र० का० ने निश्चय किया है और इस अवसर पर श्रीमान्

सेठजी साहब का जीवन चरित्र भी प्रकाशित करना स्वीकृत किया है अतएव जीवन चरित्र को संक्षिप्त रूप में तयार कर प्रकाशित किया जा रहा है।

इस कार्य मे श्रीयुत् बा. मानमलजी काशलीवाल बी. कॉम., ने विशेष सहयोग दिया है जिसके लिये हम आपके आभारी है। इसी प्रकार श्री. स्या. वा. प. खूबचदजी शास्त्री, श्री. प्रोफेसर पं. श्रीनिवासजी चतुर्वेदी एम. ए., श्री. बा. बसतलालजी कोरिया बी. ए, एलएल. बी. प्रायवेट सेक्रेटरी तथा श्री. पं. नाथूलालजी जैन न्या. तीर्थ ने समय समय पर इसके कार्य मे सहायता दी है जिसके लिये उन्हे धन्यवाद है।

इस प्रस्तावना के अन्त में हम श्री जिनेंद्र देव से यह प्रार्थना करते है कि समाज मे सेठजी साहब सरीखे परोपकारी महान् व्यक्ति दीर्घायु हो और आपकी सुयशरूपी छत्रछाया चिरकालतक विस्तृति बनी रहे।

निवेदक,

हजारीलाल जैन.

॥ श्री ॥

जिनेंद्र देव के शासन में इस संसार क्षेत्र में समय समय पर महान् आत्माओं का प्रादुर्भाव होता रहा है। वास्तविक इतिहास इन महान् पुरुषों के महत्कार्यों का ही संग्रह है। संसार में नित्य प्रति करोडों मनुष्य जन्म लेते हैं और करोडों ही संसार का परित्याग करते हैं पर जिन पुरुषों के कारण संसार की धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक तथा वैज्ञानिक गति विधि पर नया प्रकाश पडता है, जो संसार को अपनी अलौकिक प्रतिमा, अपूर्व बुद्धिमत्ता, अनुपम साहस और प्रबल पुरुषार्थ से चमत्कृत करते हैं उन्हींका गौरवशाली नाम इतिहास के उज्वल पृष्ठों पर अभिमान के साथ लिखा जाता है। ऐसी महान् आत्माओं से ही संसार में नया जीवन, नया उत्साह और नई शक्ति का संचार होता है। ऐसे ही परोपकारी, उदार और प्रभावशाली महापुरुष की जीवनी संसार में प्राणियों को सन्मार्ग की ओर अग्रसर करती हुई उनका उपकार कर सकती है। आज जिस महानुभाव की जीवनी पर हम ये पंक्तियां लिख रहे हैं वे भी संसार की एक विभूति हैं। उनका आदर्श जीवन अनेक महत्ताओं और सफलताओं का एक प्रतिबिंब है। उनके व्यक्तित्व में दिव्य शक्ति है। वे जहां जाते हैं वहीं आशा और उत्साह की वर्षा होती जाती है। व्यापारी जगत् के वे महापुरुष हैं। हिन्दुस्थान के इस छोर से उस छोर तक उनके नाम की प्रख्याति है। विलायत अमेरिका के व्यापारिक क्षेत्र पर भी आपकी पूरी धाक है। प्रसन्नता और स्वस्थपना

उनके जीवन का [illegible] है। निराशा और बुजदिली उनके पास फट-कने नहीं पाती। कठिन से कठिन परिस्थिति में भी आप सागर के समान गंभीर और हंसमुख रहा करते हैं। आशावाद के तो मानो आप अवतार हैं। अविचल सहिष्णुता, ब्रह्मचर्यनिष्ठा, उदारता, निरभिमानता, धार्मिकता एवं परोपकारिता तथा मितव्ययता आपके असाधारण गुण हैं! अर्थोपार्जन करना व उसका सद्व्यय करना ये दोनों शक्तियां भिन्न भिन्न होते हुए भी श्रीमान् सेठ साहब में दोनों ही समान रूप से विद्यमान हैं। जिस तरह श्रीमान् द्रव्य उपार्जन करना जानते हैं उसी तरह उसके सदुपयोग करने में भी श्रीमान् प्रवीण हैं। श्रीमान् की उदारता, अपनी समाज व जाति में ही सीमित नहीं है किन्तु जैन व जैनेतर सभी समाज आपके द्वारा समय समय पर उपकृत हुए हैं। आजतक श्रीमान् ने अपने बाहुबल से द्रव्य उपार्जन कर जो लगभग ८० लाख रुपये धार्मिक एवं सामाजिक कार्यों में केवल धर्म व परोपकार बुद्धि से खर्च किये हैं, तथा समय समय पर राज्य भक्ति से प्रेरित होकर वारलोन, कुपनफंड, इत्यादि में श्रीमान् ने जो अतुलनीय महती उदारता का परिचय दिया है वह सब श्रीमान् की इन शक्तियों का प्रत्यक्ष प्रमाण है। इन्हीं सब कारणों से प्रेरित होकर श्रीमान् का एक संक्षिप्त जीवन चरित्र प्रकाशित करना अत्यंत उपयोगी एवं सुमार्ग प्रदर्शक समझकर, श्री दानवीर राज्यभूषण, रायबहादुर, रावराजा, सर सेठ सरूपचंदजी हुकमचंदजी दि. जैन परमार्थिक संस्थाओं की प्रबंध-कारिणी कमेटी की ओर से, हीरक जयन्ती महोत्सव कमेटी ने यह आयोजन किया है। हमें पूर्ण आशा है कि श्रीमान् का यह जीवन चरित्र हमारे नवयुवक समाज को व सर्व साधारण जनता को पूर्ण लाभप्रद सिद्ध होगा क्योंकि:—

"Lives of great men all remind us,
We can make our lives sublime,
And departing leave behind us,
Footprints on the sands of time."

सेठ साहब का जन्म और कौटुम्बिक जीवन
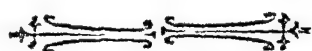
व्यापार जगत् में उथल पुथल मचानेवाले, अपने बुद्धिकौशल, साहस व पुरुषार्थ से करोडों की सम्पत्ति पैदा करने वाले हमारे चरित्र-नायक सेठ साहब के पूर्वजों की जन्मभूमि मारवाड राज्यान्तर्गत लाडनू जिले में मैंडासिल नामक ग्राम था। संवत् १८४४ में आपके पूर्वज सेठ पूसाजी ने अपने दोनों पुत्र श्यामाजी व कुशलाजी के साथ इन्दौर में आकर अपना व्यवसाय शुरू किया। उस समय इन्दौर में श्रीमंत महाराजा हरिराव होलकर बहादुर का सुशासन था। यहां आने के बाद सेठ श्यामाजी के यहां सेठ माणकचंदजी का जन्म हुवा। सेठ माणकचंदजी के यहां क्रम से सेठ मगनीरामजी, सेठ सरूपचंदजी, सेठ ओंकारजी, सेठ मन्नालालजी और सेठ तिलोकचंदजी इस तरह पांच पुत्र और दो लड़-कियां उत्पन्न हुई। दुर्दैव से सेठ मन्नालालजी का छोटी उम्र में ही देहान्त हो गया। संवत् १९०७ में सेठ मगनीरामजी ने अपने पिता की सम्मति से सेठ माणकचंदजी मगनीरामजी के नाम से साहूकारी दुकान खोली। उस समय मालवे में अफीम का व्यापार ही मुख्यतः था। भाग्य ने आपका साथ दिया और संवत् १९२० के लगभग आप लखपति सेठों में गिने जाने लगे। दुर्भाग्य से संवत् १९२२ में सेठ माणकचंदजी व संवत् १९२९ में सेठ मगनीरामजी का स्वर्गवास हो गया। किन्तु दुकान का काम सेठ गंभीरमलजी पीपल्यावालों की पाती में सेठ गंभीरमलजी तिलोकचंदजी के नाम से अच्छी तरह चलता रहा। संवत् १९३१ की आषाढ शुक्ला प्रतिपदा

मान दानवीर- तीर्थभक्त शिरोमणि-राय बहादुर-राज्य=भूषण-रावराजा-सर सेठ हुकमचंदजीसाहेबका -
सेठ
पूसाजीसाहेब
सम्बत १८४४
आगमन हुवा
इन्दोरमें
गोत्र
ग्राम मेंडशल मारवाड.
जाति
खंडेल-
वाल
काशलीवाल,धर्म दिगम्बर जैन.
औरस
दत्तक
रचयता-लाला हजारीलाल जैन.
ज्ञानसागर लीथो प्रेस खटाववाडी,मुंबई न. ४.

की आवश्यकता नहीं कि भाग्य सेठ साहब के साथ था। दिनोंदिन लक्ष्मी बढने लगी। यहां तक कि संवत् १९५६ में आपका फर्म २५, ३० लाख का गिना जाने लगा। इस बीच में संवत् १९५० में आपके पूज्य पिताजी सेठ स्वरूपचंदजी का समाधिमरण पूर्वक देहावसान हो गया। और सेठ ओंकारजी व सेठ तिलोकचंदजी के सन्तान नहीं होने से क्रमशः सेठ कस्तूरचंदजी व सेठ कल्याणमलजी मारवाड से दत्तक लाये गये। संवत् १९५७ में दूरदर्शिता से विचार कर तीनों भाइयों ने बैठ कर आपस में बटवारा कर लिया। किसी को कानों कान खबर नहीं हुई। सेठ सरूपचंदजी हुकमचंदजी, सेठ ओंकारजी कस्तूरचंदजी, व सेठ तिलोकचंदजी कल्याणमलजी इस तरह तीन दुकानें हो गईं। बम्बई की दुकान तीनों भाइयों के शामिलात में रही, तीनों भाइयों के हिस्से में लगभग दस दस लाख रुपये आये। आगे चलकर आपने अपने अपूर्व बुद्धि कौशल, असाधारण व्यापारिक प्रतिभा और प्रचंड साहस आदि गुणों के कारण अपने ही हाथों से सात आठ करोड की विशाल सम्पत्ति का उपार्जन किया। संसारभर के रुई और सोने के बाजारों को हिला दिया, और भारतवर्ष के औद्योगिक विकाश में बडी भारी सहायता पहुंचाई।

सेठ साहब को क्रमशः चार विवाह करने पडे। पहला विवाह संवत् १९४२ में सेठ भोपजी सम्भूरामजी मंदसौर वालों के सेठ जोधराजजी की पुत्री के साथ हुवा। उनसे एक कन्या पैदा हुई जिसका नाम रत्नप्रभाबाई रक्खा गया। दुर्दैवसे इस कन्याको केवल ७ दिन की ही छोडकर आप परलोक सिधार गईं और कन्या के लालन पालन का भार सेठ साहब की मातेश्वरी को सम्भालना पडा। रत्नप्रभाबाई साहब का विवाह झालरापाटन के श्रीमान् सेठ विनोदीरामजी बालचन्दजी की

फर्म के मालिक वाणिज्य भूषण, रायसाहब सेठ लालचंदजीके साथ हुवा। इस विवाह में सेठ साहब की ओर से लगभग एक लाख रुपया खर्च किया गया। झालरापाटनवाले भी बरात बडी धूमधाम से लाये थे।

सेठ साहब का दूसरा विवाह संवत् १९५६ में चित्तौडगढ के सेठ समर्थलालजी की सुपुत्री के साथ हुवा, जो संवत् १९६२ में पेट की बीमारी से स्वर्गवासिनी हो गईं। तीसरा विवाह संवत् १९६३ में भोपाल के सेठ फौजमलजी की सुपुत्री के साथ हुवा जो वर्तमान में मौजूद हैं। आपका शुभनाम श्रीमती सौ. कंचनबाई है। आप साक्षात् लक्ष्मी का अवतार हैं और सेठ साहब से संबंधित होकर मानों लक्ष्मी को अपने साथ ही खींच लाई हैं। आप बडी सुयोग्य, धर्मात्मा विदुषी और परोपकारिणी महिला रत्न हैं। पतिभक्ति और गृहकार्य में आप अद्वितीय हैं। श्री कंचनबाई श्राविकाश्रम, प्रसूतिगृह, शिशुस्वास्थ्यरक्षा इत्यादि संस्थाओं के कार्य का आप स्वयं निरीक्षण करती हैं। आजकल आप महान् तात्विक ग्रंथ श्री गोम्मट्टसार पढ रही हैं। आपको भारत की श्री दिगंबर जैन स्त्री समाज ने दानशीला की पदवी दी है।

असाता वेदनीय कर्म के उदय से, श्रीमती सेठानीजी को भयंकर बीमारी होने के कारण, और खुद सेठानीजी साहब की उत्कट प्रेरणा से विवश होकर, मानों ग्रह योग की पूर्ति के लिये ही सेठ साहब को चतुर्थ विवाह सेठ पन्नालालजी मल्हारगंज इंदौर वालों की सुपुत्री के साथ करना पडा परन्तु खेद है कि १ वर्ष के बाद ही मदरास में आपका विषमज्वर से स्वर्गवास हो गया।

यह कहावत प्रसिद्ध है कि संसार में संतान सुख की प्राप्ति बडे पुण्य योग से होती है। खास कर श्रीमंत पुरुषों के यहां तो पुत्र पौत्र का

की आवश्यकता नहीं कि भाग्य सेठ साहब के साथ था। दिनोंदिन लक्ष्मी बढने लगी। यहा तक कि संवत् १९५६ में आपका फर्म २५, ३० लाख का गिना जाने लगा। इस बीच में संवत् १९५० में आपके पूज्य पिताजी सेठ स्वरूपचंदजी का समाधिमरण पूर्वक देहावसान हो गया। और सेठ ओंकारजी व सेठ तिलोकचंदजी के सन्तान नही होने से क्रमशः सेठ कस्तूरचंदजी व सेठ कल्याणमलजी मारवाड से दत्तक लाये गये। संवत् १९५७ में दूरदर्शिता से विचार कर तीनों भाइयों ने बैठ कर आपस में बटवारा कर लिया। किसी को कानों कान खबर नहीं हुई। सेठ सरूपचंदजी हुकमचंदजी, सेठ ओंकारजी कस्तूरचंदजी, व सेठ तिलोकचंदजी कल्याणमलजी इस तरह तीन दुकानें हो गई। बम्बई की दुकान तीनों भाइयों के शामिलात में रही, तीनों भाइयों के हिस्से में लगभग दस दस लाख रुपये आये। आगे चलकर आपने अपने अपूर्व बुद्धि कौशल, असाधारण व्यापारिक प्रतिभा और प्रचंड साहस आदि गुणों के कारण अपने ही हाथों से सात आठ करोड की विशाल सम्पत्ति का उपार्जन किया। संसारभर के रुई और सोने के बाजारों को हिला दिया, और भारतवर्ष के औद्योगिक विकाश में बडी भारी सहायता पहुंचाई।

सेठ साहब को क्रमशः चार विवाह करने पडे। पहला विवाह संवत् १९४३ में सेठ रूपजी सरभूरामजी मंदसौर वालों के सेठ जोधराजजी की पुत्री के साथ हुवा। उनसे एक कन्या पैदा हुई जिसका नाम रत्नप्रभाबाई रक्खा गया। दुर्दैवसे इस कन्याको केवल ७ दिन की ही छोडकर आप परलोक सिधार गई और कन्या के लालन पालन का भार सेठ साहब की मातेश्वरी को सम्भालना पडा। रत्नप्रभाबाई साहब का विवाह झालरापाटन के श्रीमान् सेठ विनोदीरामजी बालचन्दजी की

फर्म क मालिक वाणिज्य भूषण, रायसाहब सेठ लालचंदजीके साथ हुवा। इस विवाह में सेठ साहब की ओर से लगभग एक लाख रुपया खर्च किया गया। झालरापाटनवाले भी बरात बडी धूमधाम से लाये थे।

सेठ साहब का दूसरा विवाह संवत् १९५६ में चित्तौडगढ के सेठ समर्थलालजी की सुपुत्री के साथ हुवा, जो संवत् १९६२ में पेट की बीमारी से स्वर्गवासिनी हो गई। तीसरा विवाह संवत् १९६३ में भोपाल के सेठ फौजमलजी की सुपुत्री के साथ हुवा जो वर्तमान में मौजूद हैं। आपका शुभनाम श्रीमती सौ. कंचनबाई है। आप साक्षात् लक्ष्मी का अवतार है और सेठ साहब से संबंधित होकर मानों लक्ष्मी को अपने साथ ही खीच लाई हैं। आप बडी सुयोग्य, धर्मातमा विदुषी और परोपकारिणी महिला रत्न हैं। पतिभक्ति और गृहकार्य में आप अद्वितीय हैं। श्री कंचनबाई श्राविकाश्रम, प्रसूतिगृह, शिशुस्वास्थ्यरक्षा इत्यादि संस्थाओं के कार्य का आप स्वयं निरीक्षण करती हैं। आजकल आप महान् तात्विक ग्रंथ श्री गोम्मट्टसार पढ रही हैं। आपको भारत की श्री दिगंबर जैन स्त्री समाज ने दानशीला की पदवी दी है।

असाता वेदनीय कर्म के उदय से, श्रीमती सेठानीजी को भयंकर बीमारी होने के कारण, और खुद सेठानीजी साहब की उत्कट प्रेरणा से विवश होकर, मानों ग्रह योग की पूर्ति के लिये ही सेठ साहब को चतुर्थ विवाह सेठ पन्नालालजी मरहारगंज इंदौर वालों की सुपुत्री के साथ करना पडा परन्तु खेद है कि १ वर्ष के बाद ही मदरास में आपका विषमज्वर से स्वर्गवास हो गया।

यह कहावत प्रसिद्ध है कि संसार में संतान सुख की प्राप्ति बडे पुण्य योग से होती है। खास कर श्रीमंत पुरुषों के यहां तो पुत्र पौत्र का

लाख विरले पुण्यवान् के यहां ही देखा जाता है। कहने की आवश्यकता नहीं कि हमारे चारित्र नायक सेठ साहव के पुण्य के प्रभाव से संतान-सुख भी यथेष्ट प्राप्त हुवा है। बडी पुत्री श्रीमती सौभाग्यवती रत्नप्रभा बाई साहव का जिक्र ऊपर आही चुका है। सन् १९५६ में मातेश्वरी की विशेष प्रेरणा से सेठ साहब कुंवर हीरालालजी भैयासाहब को अजमेर से दत्तक लाये क्योंकि सेठ साहब की माताजी की पौत्र के मुंह देखने की प्रवल इच्छा थी।

संवत् १९७३ में कुं॰ हीरालालजी का विवाह १७ वर्ष की आयु में सेठ परसरामजी दुलीचंदजी के सेठ फतेलालजी की सुपुत्री श्रीमती विनोद कुमारी बाई के साथ बडे समारोह के साथ हुवा जिसमें सेठ साहब की ओर से लगभग सवा लाख रुपया खर्च किया गया।

संवत् १९८३ में सेठ कल्याणमलजी साहब का असामयिक स्वर्गवास हो जाने से उनकी उभय सेठानी साहब को संतुष्ट करने के लिये भैया साहब हिरालालजी संवत् १९८४ में उनके यहां गोद दे दिये गये। आप बडे शांत, विचारशील, उदार एवं कार्यकुशल धर्मपरायण सज्जन हैं। आपकी राजभक्ति और अनेक सद्गुणों पर मुग्ध होकर श्रीमंत भारत सरकार ने "रायबहादुर" और श्रीमंत होल्कर सरकार ने "राज्यभूषण" ऐसी उच्चतम पदवियों से आपको विभूषित किया है। आप इस समय रायबहादुर, राज्यभूषण सेठ तिलोकचंदजी कल्याणमलजी की फर्म, कल्याणमल मिल्स लिमिटेड, व राजकुमार मिल्स लिमिटेड का कार्य संचालन करते हैं।

संवत् १९६५ में श्रीमती सौभाग्यवती सेठानी जी कंचनबाईजी के कन्यारत्न का जन्म हुवा, जिनका नाम तारामतीबाई रक्खा गया। आप
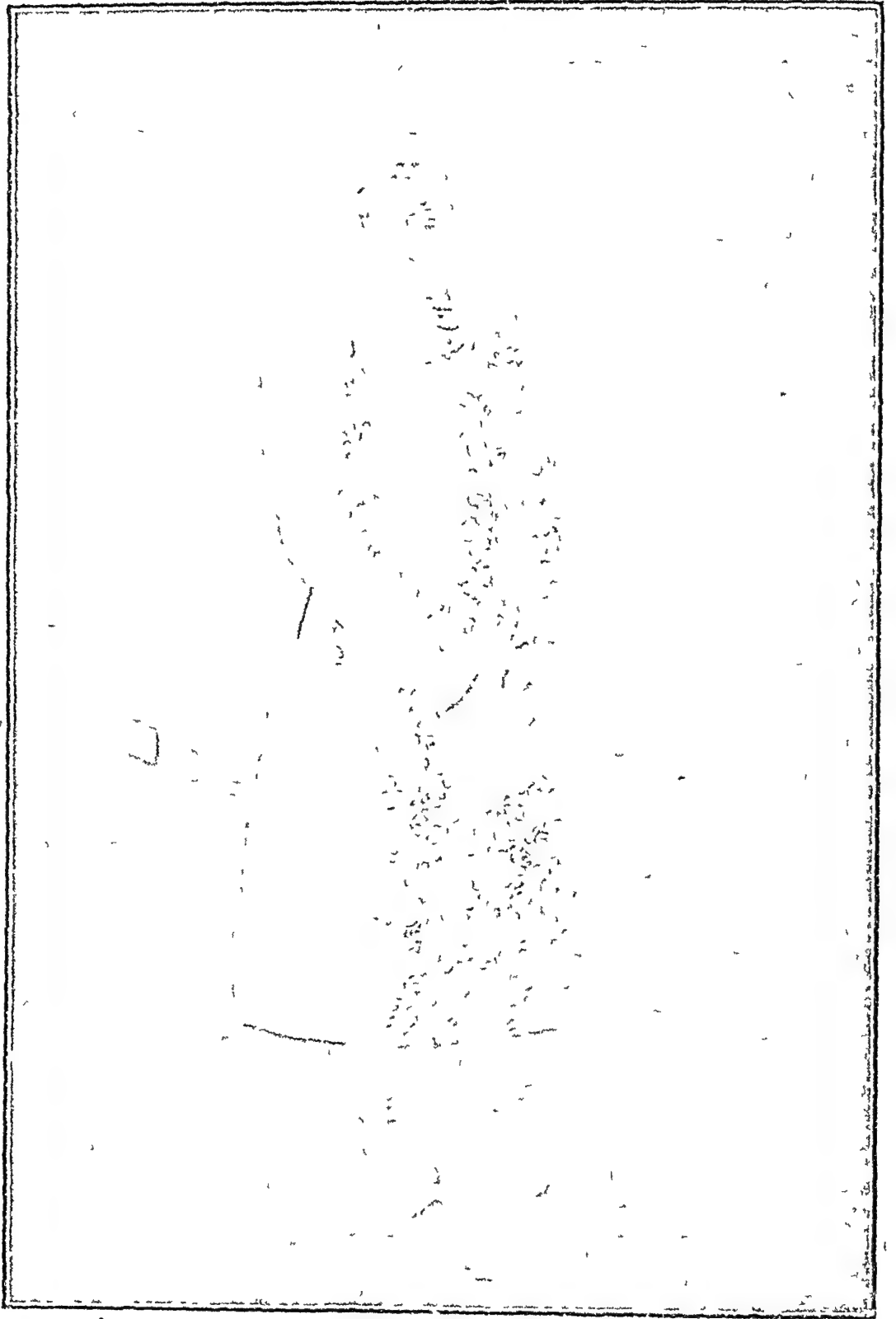
श्रीमान् भैया साहब राज्यभूषण रायबहादुर हीरालालजी

बाल्यकाल से ही बड़ी धर्मात्मा, सहनशील और विदुषी थीं। आपका विवाह संवत् १९७७ में अजमेर क सुप्रसिद्ध सेठ रायबहादुर टीकमचंदजी के सुयोग्य पुत्र कुंवर भागचंदजी के साथ बडे राजसी ठाठबाट से सम्पन्न हुवा। इंदौर के अतिरिक्त धार, देवास, जावरा आदि रियासतों से भी इस विवाह के सन्मानार्थ खास लवाजमा आया था। विवाहोत्सव के लिये जो मण्डप बना था वह बड़ा विशाल, भव्य और दर्शनीय था और रात के समय बिजली के उज्ज्वल प्रकाश में अनुपम छटा को प्रकट करता था। उधर अजमेर से बरात भी बड़ी ठाठबाट से आयी थी। जोधपुर, भरतपुर, धौलपुर आदि कई रियासतो का लवाजमा बरात के साथ था। मह्रू के इंपीरियल बैंड और भरतपुर के केव्हेलरी बैंड ने बरात की सजधज में अनूठा रंग ला दिया था। बरात के ठहराने के लिये सेठ साहब ने एक लाख रुपया लगाकर मोतीमहल बनवाया था, इसी में बरात ठहराई गई। श्रीमंत महाराजा साहब, श्रीमंत सौ. महाराणी साहिब, श्रीमंत धार नरेश और श्रीमान् ऑनेरबल एजन्ट टू दी गवर्नर जनरल इन सेंट्रल इंडिया ने भी अपने शुभागमन से इस विवाह की शोभा को बढ़ाया था।

काल की कराल गति से संवत् १९८५ में एक बालक और एक बालिका को अपनी स्मृति स्वरूप यहां छोड़कर श्रीमती तारामती बाई बड़े शान्त परिणामों के साथ परलोक सिधार गईं। सेठ साहब ने आपकी मृत्यु के समय रु. ६०००) का दान पुण्य किया।

संवत् १९७० में श्रीमान् कुंवर राजकुमारसिंहजी का जन्म हुवा। आपके जन्म से सारे कुटुंब तथा इष्टजनों को अत्यंत आनंद हुवा और सेठ साहब ने भी पुत्र जन्म के हर्षोपलक्ष्य म दिल खोल कर खर्च किया

और दान दिया। श्रीमान् भैयासाहब राजकुमार सिंहजी बडे बुद्धिमान होनहार सुशिक्षित और उत्साही नवयुवक हैं। कुमार अवस्था में आपका विद्याध्ययन डेली कॉलेज में मध्य भारत के अन्य राजपुत्रों के साथ हुवा है। आप इस समय बी. ए. फाइनल में अभ्यास कर रहे है। आपका विवाह सिवनी निवासी सेठ फूलचंदजी की सुपुत्री विदुषी राजकुमारीबाई के साथ संवत् १९८४ में हुवा है।

संवत् १९७२ में श्रीमती चंद्रप्रभा बाई का जन्म हुवा, इनका विवाह इंदौर के श्रीमान् सेठ नानकरामजी रिखवदासजी मोदी के सुपुत्र कुंवर रतनलालजी के साथ संवत् १९८४ में हुआ है।

संवत् १९७५ में सेठ साहब की सब से छोटी सुपुत्री का जन्म हुवा जिनका नाम स्नेहराजाबाई रक्खा गया। आपका शुभ विवाह श्रीमान् सेठ परसरामजी दुलीचंदजी के सुपुत्र कुंवर लालचंदजी के साथ सुसम्पन्न हुआ है।

उपरोक्त तीनों विवाह सेठ साहब ने संवत् १९८४ में एक साथ ही अपूर्व ठाठबाट के साथ किये। इन विवाहों के बानों का जुलूस बड़ा ही दर्शनीय होता था। इंदौर राज्य से सेठ साहब को स्पेशल फर्स्ट क्लास लवाजमा मिला था। इसके अतिरिक्त धार, देवास, जावरा आदि कई रियासतों से लवाजमें और बैंड आये थे। प्रत्येक बाने के समय ७ हाथी, ५० सवार, १०० सिपाही, ९ बैंड, १०० मोटर बग्गियां और २००।४०० गैस साथ रहते थे। बाने का प्रोसेशन और विवाह मंडप की अद्भुत सजावट को देखने के लिये हजारों आदमी दूर दूर से आते थे। इन विवाहों में सेठ साहब की ओर से १८ रसोईयां पांच पांच सात सात हज़ार आदमियों की दी गई तथा एक बड़ी रसोई

श्रीमान् नित्यानन्द ब्रह्मचारिजी

लगभग २५००० स्त्री पुरुषों की साड़ा बारह न्यात चौरासी की दी गई। दीतवारिया बाजार में ही एक खास बगीचा लगवाकर एक विशाल गार्डन पार्टी की योजना की गई थी, जिसमें राज्य के एवं सेंट्रल इंडिया एजेन्सी के तमाम ऑफीसर लोग सम्मिलित हुए थे। मध्य भारत के माननीय ए. जी. जी. महोदय व रतलाम, देवास सीनियर, देवास जूनियर, सैलाना खिलचीपुर व झाबुआ के सन्मान्य नरेशों ने भी सेठ साहब के निमंत्रण को स्वीकार करके विवाह की शोभा बढ़ाई थी। इसके अतिरिक्त ग्वालियर, बूंदी, झालावाड़, सीतामऊ, बड़वानी, दतिया आदि राज्यों की तरफ से उनके प्रतिनिधि विवाह की रस्म लेकर पधारे थे। सब मिला कर लगभग १००० बड़े बड़े मेहमान पधारे थे और सब के आराम व सुभीते का बढ़िया प्रबंध किया गया था। इन विवाहों में सेठ साहब की ओर से लगभग ५२५०००) पांच लाख पच्चीस हजार रुपये खर्च हुए जिसमें लगभग रु. ५००००) के दान में दिये गये। इंदौर में ये विवाह अपने ढंग के बिलकुल अनूठे थे और बड़े बूढ़े लोग भी यही कहते हैं कि उनने जीवन भर में ऐसे विवाह नहीं देखे।

सेठ साहब के पुण्योदय से संवत् १९८७ में भैयासाहब राजकुमार-सिंहजी के पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। इस खुशी में सेठ साहब ने बड़ा उत्सव मनाया और खूब दान पुण्य किया व इनाम इकराम दिये। सब मिलाकर इस संबंध में लगभग ५००००) पचास हजार रुपये व्यय हुए। संवत् १९८८ में भैया साहब राजकुमार सिंहजी के द्वितीय पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। इस प्रकार हमारे सेठ साहब को धर्म के प्रसाद से कौटुम्बिक और संतान सुख परिपूर्ण प्राप्त है।

सेठ साहब का व्यक्तित्व

संसार में भाग्यशाली पुरुषों को ही जबर्दस्त व्यक्तित्व प्राप्त होता है। कहने की आवश्यकता नहीं कि लाखों मनुष्यों में सेठ साहब का व्यक्तित्व अपना सानी नहीं रखता। जिस तरफ सेठ साहब निकल जाते हैं उस तरफ समाज की दृष्टि स्वाभाविकरूप से आकर्षित हो जाती है। हजारों मनुष्यों की सभा में सेठ साहब का व्यक्तित्व सूर्य की तरह चमकता है। उनका विशाल शरीर, उनकी भव्य मुखमुद्रा, उनका भाग्यशाली ललाट, उनका स्वाभाविक हास्यमयी मुखमंडल, उनकी विभिन्न शारीरिक चेष्टाएं, लाखों जन समूह को गुंजा देनेवाली उनकी गंभीर और जोरदार ध्वनि उनके अलौकिक व्यक्तित्व के बाह्य रूप हैं।

अंतरंग जगत् में सेठ साहब के दान, शील, ब्रह्मचर्य, धैर्य, वात्सल्य, उत्साह, विवेक, सरलता, निर्भीकता, निरभिमानतादि सद्गुण उनके अलौकिक व्यक्तित्व को कई गुणा अधिक प्रकाशित करने वाले है। दान और उदारता के लिये तो सेठ साहब सर्वोपरि प्रसिद्ध ही हैं। धर्म और परोपकारी कार्य्यों में जो लगभग ४० लाख का दान किया है वह अद्वितीय है। इस दान की सूची आगे प्रकाशित की जा रही है। हजारों लाखों रुपया खर्च करके सेठ साहब द्वारा किये गये जन्मोत्सव, शादियों के जलसे, कई नरेशों व अनेक उच्चतम अधिकारियों के आतिथ्य व सम्मानार्थ समय समय पर दी हुई बड़ी बड़ी पार्टिया आदि सब सेठ साहब की महती उदारता के प्रत्यक्ष उदाहरण है।
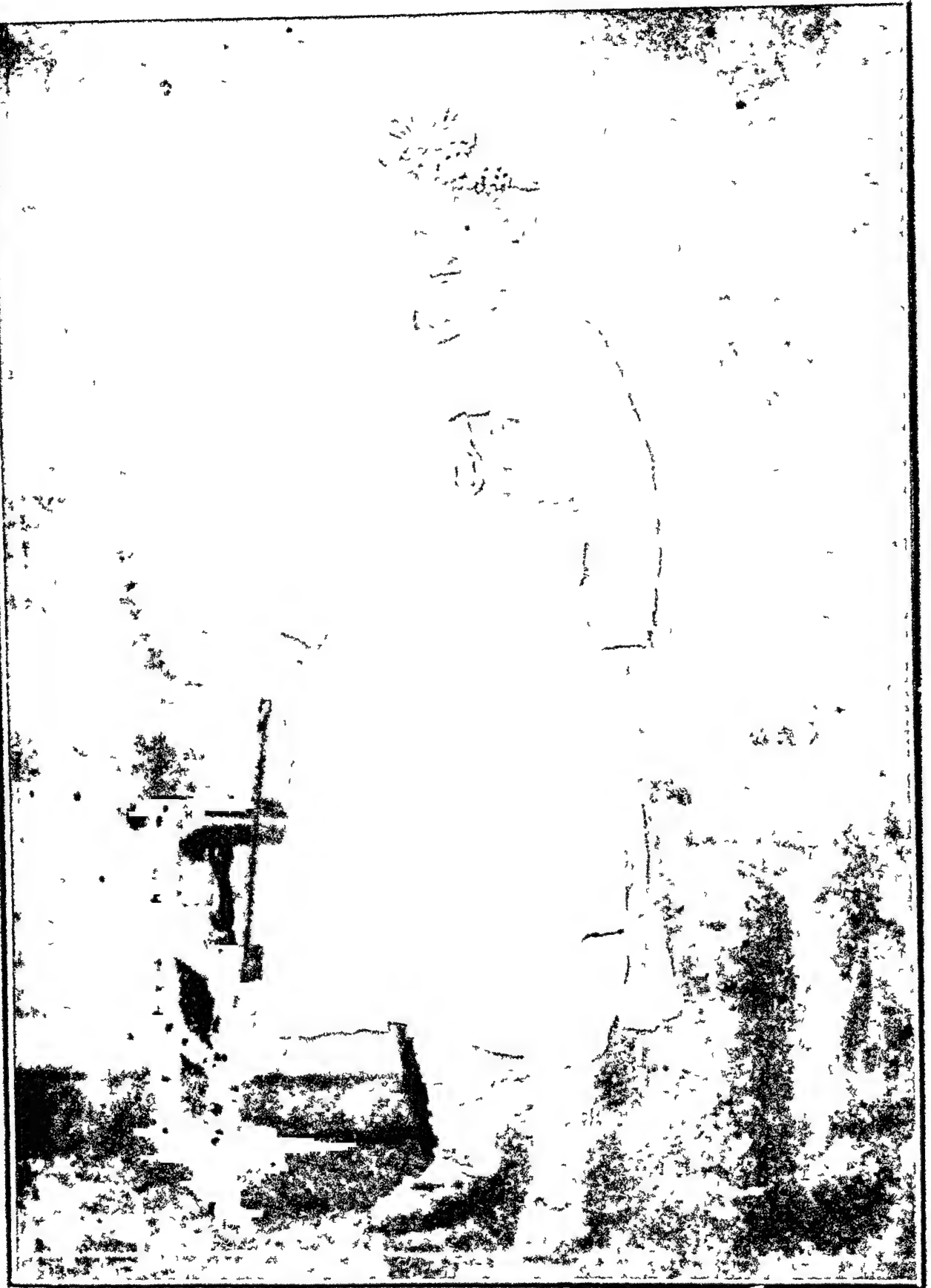
श्रीमान दानवीर, तीर्थ भक्त शिरोमणि रायबहादुर, राज्यभूषण रावराजा सर सेठ हुकमचंदजी नाईट. (आपकी ६० वीं वर्षगांठ के उपलक्ष में हीरक जयन्ति उत्सव पर यह जीवन चरित्र प्रकाशित किया.)

शील और संयम के लिये सेठ साहब आज धनिक समाज में आदर्श माने जाते हैं। प्रायः देखा जाता है कि जहां अतुलनीय धन वैभव होता है वहां विलास प्रियता का भी दौरदौरा रहता है किन्तु सेठ साहब इसमें अपवाद स्वरूप हैं। यद्यपि सेठ साहब राजसी ठाठ में रहते हुए, अपने पुण्योदय से प्राप्त लक्ष्मी का यथेष्ट उपभोग करते हैं किन्तु कठिन से कठिन अवसर प्राप्त हो जाने पर भी श्रीमान् ने अपने शीलव्रत पर कभी आघात नहीं पहुंचने दिया है! इस शीलव्रत के प्रभाव से ही व निरंतर व्यायाम के अभ्यास से आपकी शारीरिक संपत्ति आज ६० वर्ष की अवस्था में भी आज कल के नौजवानों से कहीं अधिक सुदृढ़ है। और आपके चेहरे पर एक प्रकार की दिव्य कांति और तेज सदैव चमकता रहता है।

सेठ साहब को बाल्य काल से ही धर्म शास्त्र पढ़ने व धर्म चर्चा करने की बहुत रुचि रही है। धर्मात्मा पुरुषों के मिलने से आपका हृदय पुलकित हो जाता है। उनसे धर्म चर्चा करते हुये आपको बड़ा आनंद प्राप्त होता है। आपका और उदासीन सेठ अमरचंदजी व मास्टर दर्यावसिंहजी का समागम बहुत दिनतक रहा है और अभी भी आप विद्वानों का समागम सदैव बनाये रखते हैं। आपने स्वयं कितने ही शास्त्रों का अध्ययन किया है और जैनधर्म के वास्तविक मर्म पर पूर्णतया विचार करते रहते हैं।

सेठ साहब आधुनिक साहित्य के भी बड़े प्रेमी हैं। आपने हिंदी व गुजराती की हजारों पुस्तकों का अवलोकन किया है और सदैव नई नई पुस्तकें पढ़ते रहते हैं। हिंदी गुजराती के मुख्य मुख्य सभी समाचार पत्र आपके यहां आते हैं और उनके देखने में आपकी दिन चर्या का

बहुत बड़ा समय खर्च होता है। श्रीमान् की धारणाशक्ति भी इतनी प्रबल है कि एक बार जो बात किसी पुस्तक वा अखबार में पढ़ लेते हैं वह आपको सदा याद बनी रहती है।

सेठ साहब की सरलता और निरभिमानता इसीसे प्रकट होती है कि साधारण से साधारण आदमी भी सुगमता के साथ आपके पास पहुंच सकता है और आपसे भली प्रकार वार्तालाप कर सकता है। सेठ साहब अपने आपको जनता का सेवक समझते है और जनता की प्रत्येक सेवा के लिये हर समय तैयार रहते है। विश्वव्यापी युद्ध के समय इंदौर में साधारण जनता को वारलोन लेने के लिये प्रेरणा की जारही थी और जब टाउन हॉल में इस सम्बन्धी मीटिंग की गई थी उस समय जनता की कठिन परिस्थिति को लक्ष्य करके आपने अदम्य साहस व अनुपम उदारता से घोषित किया था कि इन्दौर की ओरसे मै स्वयं पांच लाख के वारलोन के बजाय दस लाख का वारलोन लेता हूं सर्व साधारण को इस के लिये कष्ट देने की आवश्यकता नहीं है।

इसी प्रकार संवत् १९७३ में जब कि अनाज के भाव अत्यंत महंगे हो गये थे और गरीब जनता को बड़ी कठिनाई का सामना करना पड़ रहा था उस समय आपने आगे बढ़कर स्वयं एक लाख का घाटा उठा कर जनता को सस्ते भाव में अनाज मिलने का आयोजन किया था।

इसी प्रकार छोटे सराफे में चांदी सोने के व्यापार पर जब सरकार द्वारा कर बढ़ाये गये थे और इसके लिये कुछ कड़े नियम बनाये गये थे जिससे कि इन्दौर के चांदी सोने के व्यापारको बड़ा धक्का पहुंचना संभव था, उस समय आप चांदी सोने के व्यापारियों की कठिनाई को दूर कराने के प्रयत्न में भी अग्रसर हुवे थे।

इसी प्रकार सन् १९३१ में रुई अड्डे में म्युनिसिपल अधिकारी वर्ग का रुई के दलाल के साथ झगड़ा होने पर और रुई के दलाल व व्यापरियों के आपके पास शिकायत लाने पर आपने आगे बढ़कर उच्च-तम अधिकारियों के पास पहुंच कर उनकी तकलीफों को मिटाया था।

हाल ही में म्युनिसिपालटी द्वारा कर वृद्धि, दलालों के ऊपर टैक्स व छूत आदि के रोगियों के संबंध में उग्र नियमों के बनाने से जो प्रजा में अशान्ति उत्पन्न हुई थी उसको दूर कराने के प्रयत्न में आप ही अग्रसर थे। इस तरह श्रीमान् ने अनेक बार जनता की तन, मन और धन से निःस्वार्थ सेवा की है।

सेठ साहब की निर्भीकता और उनका दृढ़ संकल्पी गुण भी विशेष उल्लेखनीय है। आप जिस कार्य के करने का एक वक्त इरादा कर लेते हैं चाहे जितना ही वह काम कठिन हो, चाहे जितना ही उस कार्य के लिये आर्थिक व शारीरिक कष्ट उठाने का मौका आवे आप उसमें कभी पीछे नहीं हटेंगे और अन्ततः उसको पूर्ण करके ही रहेंगे। इसी तरह व्यापारिक बुद्धि में स्वार्थ साधन और अस्थिरता भी आप में स्वाभाविक गुण है। निर्भीकता के संबंध में लोगों को सन् १९११ की अलाहबाद प्रदर्शनी में आपका हवाई जहाज में बैठना अब तक स्मरण है। जब कि बड़े बड़े यूरोप भ्रमण कर आने वाले रईस लोग भी उस समय के हवाई जहाज में घूमने की जोखम उठाने को तय्यार नहीं थे उस समय सेठ साहब ने बिला किसी संकोच के उसमें बैठ कर प्रदर्शनी की तीन प्रदक्षिणा लगाईं। पिछले साल आप दिल्ली से इंदौर तक भी हवाई विमान में ही आये थे, इसी प्रकार आपने डा॰ जार्ज वारनेफ के कायाकल्प ऑपरेशन का हाल पढ़कर उसका प्रयोग खुद अपने और

सेठानी जी साहब के ऊपर कराने में किसी प्रकार का संकोच विचार नहीं किया और बात की बात में लगभग दो लाख रुपये खर्च करके दुनिया के ऑपरेशन संबंधी रेकार्ड को मात कर दिया। सेठ साहब की असाधारण व्यापारिक सफलता का रहस्य इन्हीं उपरोक्त गुणों में छिपा हुवा है।

सेठ साहब का मानव प्रकृति का ज्ञान बहुत चढ़ा बढ़ा है। आप चेहरा देख कर ही आदमी के गुण दोष व उसकी योग्यता को मालूम कर लेते हैं और उसे जिस कार्य के योग्य समझते हैं उसी पर नियुक्त करते हैं सेठ साहब का मानव प्रकृति का ज्ञान ही सेठ साहब की प्रबंध शक्ति को चमत्कृत कर देता है और यही कारण है कि आपकी प्रबंध शक्ति को देखकर बड़े बड़े नरेश और उच्चतम अधिकारी भी चकित हो जाते हैं। इन्दौर कलकत्ते आदि में आपके बड़े २ रुई, जूट, स्टील के कारखाने (मिल्स) हैं और बम्बई, उज्जैन वगैरह शहरों में बड़ी बड़ी कोठियां है. इस तरह आपका करोड़ों का व्यापार देश विदेश में फैला हुवा है ओर सैकड़ों हज़ारों आदमी उनमें काम करते है। इतने विस्तृत कारोबार के प्रबंध पर दृष्टि रखना कोई आसान बात नहीं है। बड़े बड़े विद्वान आदमियों के इसमें छक्के छूट जाते हैं किन्तु सेठ साहब अपने शीश-महल में बैठ कर अपनी कुशाग्र बुद्धि द्वारा सम्पूर्ण कार्य योग्य और विश्वस्त अधिकारियों में विभक्त करते हुए और छोटी से छोटी शिकायत का भी यथेष्ट निर्णय करते हुए अपने सारे कारोबार का बड़ी आसानी के साथ संचालन करते हैं। अपनी दुकानों व मिलों के पैसे २ के हिसाब पर आपकी नजर रहती है। क्या मजाल कि कोई एक पैसा भी खा जाय या व्यर्थ ठग ले जाय। किसी विद्वान का कथन है कि धन कमाने से धन की रक्षा करना अधिक कठिन है। श्रीमान् सेठ साहब

में यह विशेषता है कि जहां उन्होंमें धन कमाने की ऊंची से ऊंची कला का विकाश हुआ है वहां उसकी रक्षा करने का सर्वोत्तम ज्ञान भी उनने प्राप्त कर लिया है। ज्योतिष का ज्ञान भी आपको अच्छा है। बहुतेरे ज्योतिषी आपके पास आते हैं परन्तु जो उनकी कठिन परीक्षा में पास हो जाता है वही इनाम पाता है। साधारण कच्चे पक्के को तो सेठ साहब के सामने रोब से ही घबराहट हो जाती है। इसी प्रकार दान देने में भी सेठ साहब पात्र अपात्र की परीक्षा करके ही देते हैं जिसके देने में धन का दुरुपयोग नजर आवे ऐसे लोगों को पास भी नहीं फटकने देते।

सेठ साहब का व्यापारिक जीवन

यह पहिले बताया जा चुका है कि श्रीमान् सेठ साहब का नाम उनकी लगभग ६ वर्ष की अवस्था से ही दुकान के नाम के साथ जोड़ दिया गया था और आपकी दुकान दिनदूनी रात चौगुनी उन्नति करती जाती थी, यहां तक कि संवत् १९५७ में जब कि आपका अपने भाइयों के साथ बटवारा हुआ था, उस समय आपके हिस्से में लगभग १०,००,००० दस लाख रुपये आये थे। सेठ साहब का वास्तविक व्यापारिक जीवन इसी समय से प्रारंभ हो जाता है। उस समय किसने सोचा था कि कुछ ही वर्षों में सेठ साहब अपने व्यापारिक पराक्रम से इन लाखों रुपयों को करोड़ों में परिणत कर दिखावेंगे। इतना ही नहीं बल्कि उसका सदुपयोग करते हुए अपनी अद्भुत कुशाग्रबुद्धि का परिचय ऐसे मनोहर रूपमें देंगे। आपके व्यापारिक जीवन का इतिहास बड़ा मनोरंजक है उसमें कई ऐसे तत्व हैं जिनसे हमारे नवयुवक व्यापारी बड़ा लाभ उठा सक्ते है, हम उनमेंसे कुछ नीचे लिखते हैं।

सेठ साहब का मानसिक वातावरण प्रायः सफलता के विचारों से ओतप्रोत रहता है। आधुनिक मानस शास्त्रियोंने यह तत्व आविष्कृत किया है, कि जैसे विचार मनुष्य के मानसिक जगतमें रहते है, वैसेही तत्व बाह्य जगत् से भी उसकी ओर आकर्षित होते है। जिस मनुष्य के मनः प्रदेश में सफलता ही के विचार खेलते रहते है उसकी ओर बाहरी जगत् से भी सफलता ही के तत्व खिंचते रहते है। सेठ साहब का जीवन इस बातका प्रत्यक्ष उदाहरण है। उनके विचार में सदैव

आनंद, उत्साह और सफलता के विचार लहराते रहते हैं। कैसे भी कठिन समय में आप उनके पास चले जाइये। आपको वे सुखी और प्रसन्न चित्त मालूम पड़ेंगे। निराशा और बुजदिली के खयाल तो उनके पास फटकने तक नहीं पाते। सेठ साहब के जीवन की सफलता का प्रधान कारण उनका परम आशामय मानसिक वातावरण है।

सेठ साहब की सफलता का दूसरा कारण उनका संसार भरके बजारों का मनन पूर्वक अध्ययन है। तार, टेलीफोन आदि आधुनिक वैज्ञानिक साधनों द्वारा संसार के भिन्न भिन्न देश इतने मिल जुल गये हैं कि एक देश की व्यापारिक गति विधि का प्रभाव दूसरे देशपर पड़े बिना नहीं रहता। आज कल हम देखते हैं कि इंगलेंड, अमेरिका, फ्रान्स इत्यादि देशों के हुंडिया मण (Exchange) की घटा बढ़ी से हिन्दुस्थान के रुई व सोने चांदी के बाजारों में उथल पुथल मच जाती है। सफल व्यापारी बनने के लिये संसार भर के बाजारों की गति विधि का ज्ञान प्राप्त करने के लिये आप सदैव सचेष्ट रहते है। उनके पास जगह २ के तार, समाचारपत्र, और व्यापारिक रिपोर्टे आया करती हैं। इन सब को तौल तालकर वे अपने व्यापार की रुख बैठाते हैं। यह भी उनकी व्यापारिक सफलता का एक मुख्य कारण है।

उनकी सफलता का तीसरा कारण उनका अविचल साहस और पुरुषार्थ है। व्यापारी जगत् का यह नियम है कि जो आदमी जितनी ही अधिक जोखम उठायगा उतना ही अधिक अनुकूल अवसर पर व्यापार में लाभ प्राप्त कर सकता है। हमारे सेठ साहब भी अनुकूल समय पर जोखिम उठाने में सिद्ध हस्त है। वे अपने जीवन में बड़े बड़े व्यापारिक साहस के कार्य कर गुजरे है और भाग्यने सदैव उनका साथ दिया है।

उनके व्यापार की सफलता का चौथा कारण बाजार के परिवर्तन के साथ अपने व्यापार का परिवर्तन कर लेना है। व्यापार में वे कभी हटवादी नहीं रहे। बाजारों पर कई प्रकार के प्रभाव काम किया करते हैं। इस लिये कभी कभी बड़े सूक्ष्मदर्शी व्यापारी की रुख भी गलत हो जाती है। ऐसे समय बाजार की गतिविधि की कोई परवाह न कर जो अपने रुख पर ही अड़ा बैठा रहता है वह भारी नुकसान उठाता है। सेठ साहब की व्यापारिक नीति यह नहीं है। वे व्यापार में हट करना सीखे ही नहीं! ज्यों ही बाजार की रुख बदली त्योंही अपनी रुख भी बदल देते हैं। इसी नीति से अनेकों प्रसंगों पर आपने बड़ा लाभ उठाया है।

हमने ऊपर सेठजी के व्यापारिक जीवन के खास खास सिद्धांतों पर प्रकाश डालने की चेष्टा की है। अब हम उन के जीवन के व्यवहारिक पहलूकी ओर अपने पाठकों का ध्यान आकर्षित करना चाहते हैं।

हमने ऊपर दिखलाया है कि अदम्य साहस और पुरुषार्थ तथा बाजारकी परिस्थिति का सूक्ष्म अध्ययन सेठ साहब की सफलता के प्रधान कारणों में से हैं। यह प्रायः सब को विदितही है कि कोई २९।३० वर्ष के पहिले मालवे में अफीम का व्यापार बड़े जोर शोर पर था, और इन्दौर के बड़े बड़े व्यापारियों के कोठों पर हजारों पेटिया रहती थीं। अफीम का व्यापार ही उस समय मालवे का प्रधान व्यवसाय था। इस का सट्टाभी खूब चलता था। सेठ साहबभी इसके व्यापार मे खूब रंगे हुए थे। अफीम के व्यापार में आपने बड़े बड़े खेल खेले परन्तु हम यहां एक ऐसी घटना का उल्लेख करते है

जिसमें सेठ साहब के अपूर्व व्यापारिक साहस और संसार के बजारों के उत्थान पतन के गम्भीर ज्ञान का पता चलता है। हमारे जिन पाठकों ने अफीम के व्यवसाय का अध्ययन किया है वे जानते हैं कि यूरोप के कुछ देशों और चीन में अफीम के व्यसन के विरुद्ध बडे जोरों का आन्दोलन उठा था। चीन इस व्यसन में सब से अधिक ग्रसित था। वहांके नवयुवकों ने यह समझ कर कि यह व्यसन चीन के राष्ट्रीय जीवन के लिये प्राणघातक है, इसके खिलाफ बडी बुलन्द आवाज उठाई। दूसरे देशोंके अनेक सुधारकोंने उनका साथ दिया। अमेरिका और यूरोप के बहुत से समाचार पत्रोंने अंग्रेज सरकार पर खुल्लम खुल्ला यह आरोप रक्खा, कि वह चीन को अफीमची बनाने में सब से अधिक हिस्सा ले रही है। इसके लिये यूरोप में एक अन्तर राष्ट्रीय कान्फ्रेंस हुई, और उसमें यह निश्चय हुवा कि धीरे २ अफीम की खेती और अफीम का व्यापार कम कर दिया जाय। यह निश्चय ब्रिटिश सरकार को भी मानना पडा। सेठ साहब भी इस गति विधि को देख रहे थे और उन्हें निश्चय होगया था कि निकट भविष्य में ही चीन में अफीम का जाना कम होजायगा। ईस्वी सन १९०९ १९१० में जब कि भारत सरकार ने मालवेकी अफीम के निकास पर अंकुश रखने की गरज से एक्सपोर्ट लाईसेंस (रवन्ना) देना शुरु किया था, उस समय बहुत से व्यापारियों को तो यह विश्वास ही नहीं हुवा कि सरकार सचमुच अफीम का व्यापार घटा देना चाहती है क्यों कि वे संसार की गतिविधि से परिचित नहीं थे। इसके विपरीत हमारे सेठ साहब को इस आन्दोलन का ज्ञान था। बस फिर क्या था, आपने बीस पच्चीस लाख की हुंडिया लगादीं, इस समय भाग्य ने सेठ साहब का पूरा साथ दिया। अफीम के रवन्ना का भाव आश्चर्यजनक रूप में बढ़ने लगा। इस ओर सेठ साहब ने अपनी हुंडी के परिणाम से भी

अधिक अफीम खरीदने के लिए जगह जगह मुनीम गुमास्ते भेजे। लाखों रुपये की अफीम खरीदी गई। अफीम का भाव चीन में चमत्कारिक रुप से तेज होतागया, यहां तक कि पहले जहां एक पेटी का भाव १२००) से १४००) रुपये तक था वहां धीरे धीरे कुछ दिनों में दस हजार से पन्द्रह हजार तक होगया। बस फिर क्या था सेठजी के घर में सोने चांदी की वर्षा होने लगी। उन्होंने दो तीन करोड़ रुपया कमा लिया। सारे भारत के व्यापारी समाज में वे सूर्य की भांति चमकने लगे। उस समय बम्बई के प्रसिद्ध दैनिक पत्र "टाइम्स आफ इन्डिया," ने अपने १३ मार्च सन १९१० के अंक में आपको Merchant Prince of Malwa अर्थात् मालवेके व्यापारियों का राजा लिखा था। वही समय सेठजी के अभ्युदय का प्रभात काल था। इसी समय सेठजी ने अपने जीवन से यह प्रगट किया था कि संसार की व्यापारिक गतिविधि से निश्चित किये हुए धोरण, साहस तथा पुरुषार्थ से मनुष्य थोडेही समय में कहां से कहां पहुंच जाता है।

व्यवसाय परिवर्तन

हमने पहले बतलाया है कि सेठ साहब समयकी गति के साथ जानेवाले है। संवत् १९६८ में जब उन्होंने देखा कि अफीम का व्यापार मृतप्राय होगया है तब उन्होंने अपने व्यवसाय में परिवर्तन करनेका निश्चय किया। बहुत सोचने और विचारने के बाद उन्होंने रुई, अलसी, चांदी और सोने का व्यवसाय आरम्भ किया। सेठ साहब साहसी तो थे ही। उन्होंने इसमें भी गजब ढहा दिया। उदीयमान आत्मा जिस क्षेत्र में प्रवेश करती है, वहीं अपना प्रकाश फैला देती है। सेठ साहब का नाम इन व्यवसायों में भी सूर्य की भांति प्रकाशमान हो

उठा। आपकी कीर्ति यूरोप और अमेरिका के व्यापारिक क्षेत्रों में भी फैल गई।

सम्वत् १९७० में सेठ साहब ने बड़े जोरों का व्यापार किया। भारत, अमेरिका और विलायत तक आपके व्यापार की धूम मच गई। संवत् १९७१ और ७२ में आपके व्यापार की गति और भी बढ़ी। प्रति दिन १०।२० लाखकी हार जीत कर लेना आपके लिये बायें हाथ का खेल था। इस समय इनकी खरीद फरोख्त से भारत के बाजारों का उतार चढाव होता था। अगर आप खरीद करते तो बाजार में १०।१५ रु. की तेजी और बेचते तो १५ रु. की मंदी हो जाती थी। लोग सेठजी के दलाल बनने के लिये तरसते थे। क्योंकि महिने में लाख दो लाख की आमदनी हो जाना मामूली बात थी। इसी समय युद्ध के कारण शेअरों का भाव भी बहुत बढ़ गया था। इस में भी सेठ साहब ने अनाप सनाप रुपया कमाया।

कलकत्ते की दुकान

सेठजी के व्यापारकी उन्नति दिन दूनी और रात चौगनी होने लगी, आपके व्यापार का क्षेत्र अधिकाधिक व्यापक और विस्तृत होने लगा। संवत् १९७२ के कार्तिक मास में सेठ साहब कलकत्ता पधारे। वहां आपको अपनी एक कोठी खोलने की आवश्यकता प्रतीत हुई। बस फिर क्या था। कलकत्ते में कोठी खोल दीगई। और अफीम की पेटी, कपड़ा, शक्कर, अलसी और जूट पाट का काम आरंभ कर दिया गया, यह दुकान अब तक है और कलकत्ते की फ़र्मों में इसका बहुत उच्च स्थान है।

एक करोड की कमाई

प्रभात काल के सूर्य की तरह सेठ साहब का व्यापारिक वैभव दिन दूना रात चौगुना बढ़ने लगा। संवत् १९७२ में महायुद्ध के कारण व्यापार में बड़ी उथल पुथल मची हुई थी। ऐसे समय सेठ साहब दूने जोश के साथ व्यापार करने लगे। इस समय तो आपने हदकर डाली। बड़े बड़े सटेरिये समुदाय बना कर आपके मुकाबिले पर खड़े हुए, किन्तु औंधे मुँह गिरे।

इस वर्ष रुई, चांदी, गेहूँ, अलसी की तेज़ीने भयंकर रूप धारण कर लिया। रुई की खंडी का भाव ७०० तक पहुंच चुका था। सेठजी ने दिलखोल व्यापार किया। इस साल आपने एक करोड़ रुपये कमाये। भारत, यूरोप और अमेरिका के व्यापारिक क्षेत्रों में आपका नाम अधिक तेज़ीसे चमकने लगा।

गेहुँ का ख्याला

इस समय सेठ साहब व्यापारिक क्षेत्र के भाष्म पितामह बन गये। जिधर वे झुक जाते थे उधर ग़ज़ब ढ़ाह देते थे। इस साल गेहूँ, रुई, अलसी और चांदी की महंगाई बहुत हो चुकी थी, भारत सरकार के पास कई व्यापारियों के इस आशय के तार पहुंचे थे, कि इस मंहगाई के प्रधान कारण सेठजी ही है, इस पर से भारत सरकार के होम मेम्बर को स्वयं बम्बई आना पड़ा। बम्बई के गव्हर्नरके पास सेठजी बुलाये गये। आप से कहा गया कि गेहू संसार का खाद्य पदार्थ है इसका व्यापार आपको इस रूप में नहीं करना चाहिये कि वह इतना महंगा हो जाय। इसका ख्याल करना लोक हित के विरुद्ध है। सेठ साहब ने गव्हर्नर

महोदय की यह बात मानली और अपना गेहूं का सौदा बराबर कर लिया। इससे गेहूं का भाव पौने दस से उतर कर सवा आठ रह गया। इस कार्य के लिये गर्वनर महोदय ने सेठ साहब को धन्यवाद दिया। गेहूं की भांति सेठ शाहब नें चांदी के पाट भी बहुत बडी संख्या में खरीदने शुरू कर दिये थे। चांदी के इस ख्याले के लिये भी भारत सरकार के होम मेम्बर महोदय ने सेठ साहब को ख्याला न करने का अनुरोध किया। इतना ही नहीं, आप से यह भी कहा गया कि आपके पास जो बीस हजार पाट हैं वे भी आप सरकार को उचित मूल्य पर दे दें। सेठ साहब ने यह अनुरोध भी स्वीकार कर लिया और आपने खरीदे हुए बीस हजार पाट सरकार को दे दिये। इससे आगे होने वाली चांदी की तेजी रुक गई। कहने की आवश्यकता नहीं कि इस कार्य से सरकार पर सेठजी का अच्छा वज़न पडा।

नमक के रवन्ना

उसी प्रकार आपने साम्भर नमक के लगभग दस हजार बागन के रवन्ना भर दिये। इससे नमक के भाव में उथल पुथल मचगई। इस पर से साल्ट कमीश्नर (Salt Commissioner) तथा आगरा यू. पी. के गवर्नर साहब की तरफ से उनके सेक्रेटरी आपके पास भेजे गये। उक्त सेक्रेटरी महोदय ने कहा, कि "नमक" मनुष्य और पशुओं का खाद्य पदार्थ है इसका इतना बड़ा व्यापार आपको नहीं करना चाहिये। आप अपना भरा हुवा रुपया कृपा करके वापिस ले लेवें। सेठ साहब ने यह बात स्वीकार करली और रुपया वापिस ले लिया जिससे नमक का भाव ठिकाने आगया।

पौन करोड़ का लाभ

संवत् १९७४ में सेठ साहब ने भडोंच जीन का बड़ा भारी व्यापार किया। इसमें आपको लगभग पौन करोड़ का लाभ हुवा। इस समय आपने अपने क्षेत्र में बड़ा भारी नाम पाया। बड़े बड़े व्यापारी और सटोरिये आपकी धारणा की बाट जोहते रहते थे। इस समय रुई आदि की तेजी मंदी का बहुत बड़ा आधार सेठ साहब का व्यापार था। इन्दौर और बम्बई के बड़े बड़े व्यापारी और दलालों में इनके व्यापार की बड़ी धूम रहती थी। लाख लाख गांठ का माथे पोते का व्यापार कर लेना सेठ साहब के लिये एक आसान बात हो गई थी। चांदी, सोना, अलसी आदि के व्यापार भी बहुत बड़े पैमाने पर चालू थे।

संवत् १९७७ में सेठ साहब का सितारा और भी तेजी से चमकने लगा इस साल आपने रुई का बहुत बड़ा सट्टा किया। पहिले पहल बाजार के एक रुख पर चले जाने से आपको ५० लाख का नुकसान नजर आने लगा। बम्बई के बड़े बड़े व्यापारी आपके विरुद्ध खड़े होगये, पर आपने अपना साहस और धैर्य नहीं छोड़ा। इसके बाद यकायक बजार की रुख पलटी, बजार एक रुख से तेज होने लगा। विरुद्ध दलवालों के छक्के छूट गये। परिणाम यह हुवा कि जहां आपको ५० लाख का घाटा था वहां ९० लाख का फायदा हो गया।

सट्टे से घृणा और उसका त्याग

यह कहने की आवश्यकता नहीं कि सेठ साहब का सट्टे का व्यापार बहुत चढ़ा बढ़ा हुवा था। उनकी खरीदी और बेचवाली से

हिन्दुस्थान के कई बाजार उठते और गिरते थे, केवल इतनाही नहीं, यूरोप और अमेरिका तक उनकी ख्याति पहुंच चुकी थी। किन्तु इतना सब कुछ होते हुए भी सेठ साहब को अंतःकरण में सट्टे से अरुचि थी। वे उसकी भलाई बुराई को भली भांति जानते थे। संवत् १९७९ में इन्दौर में अग्रवाल महासभा का चतुर्थ अधिवेशन बड़ी धूमधाम के साथ हुवा था। उस अवसर पर सट्टे के विरुद्ध एक प्रस्ताव रक्खा गया था उसका सेठ साहब ने बड़े जोरदार शब्दों में समर्थन किया था। इससे यह स्पष्ट है कि सेठ साहब सट्टे में रंगे हुए होने पर भी वास्तव में उससे घृणा करते थे, पर अब तक आपने सट्टा छोडा नही था।

संवत् १९८२ में आप किसी व्यापार के लिये बम्बई पधारे। वहां आपको सट्टे के त्याग के लिये आत्म-प्रेरणा हुई और फल स्वरूप आपने पांच वर्ष के लिये सट्टा त्याग देने की घोषणा कर दी। दुनिया भर के बाजारों में उथल पुथल मचा देनेवाले इस महापुरुष की इस घोषणा से लोगों में बड़ा आश्चर्य हुवा। सेठ साहब के हितैषियों को इससे बड़ा संतोष हुवा और लोग समझने लगे कि यह आसामी अब पर्वत की चट्टान की तरह दृढ़ हो गई। बम्बई व अमेरिका के विरोधी पक्ष के बड़े २ सटोरिये हाथ मलते रह गये। सेठ साहब ने भाव के तार मंगाने तक बंद कर दिये। पांच वर्ष तक सेठ साहब ने अपनी प्रतिज्ञा का भली भांति पालन किया। अच्छा होता यदि सेठ साहब पांच वर्ष के बाद भी अपनी प्रतिज्ञा के काल को और बढ़ा लेते परन्तु ऐसा नहीं हुवा। आपने पुनः सट्टा आरंभ कर दिया। इस बार परिणाम लाभदायक नहीं हुवा, जब जब व्यापार किया नुकसान उठाया। कदाचित् प्रकृति की ही यह इच्छा थी कि सेठ साहब फिर से इस कार्य में

प्रवृत्त न हों। यदि प्रकृति सेठ साहब के विरुद्ध न होती और इस बार भी उन्हें लाभ हो जाता तो फिर उनसे जन्म भर यह व्यसन न छूटता। हर्ष की बात है कि मित्रों और हितैषियों के कहने, सुनने और सट्टे से आत्मग्लानि होने से आपने पिछले वर्ष से आजीवन के लिये सट्टे का परित्याग कर दिया है और अब उस तरफ लक्ष भी नहीं देते।

कुछ भी हो, सेठ साहब ने अपने व्यापारिक बुद्धि कौशल्य, व्यवसायिक दूरदर्शिता तथा साहस और पुरुषार्थ से करोड़ों की संपत्ति उपार्जित की और खोई भी, परंतु आपके चित्त पर हर्ष व विषाद के चिन्ह कभी नजर नहीं आये।

आज हुकमचंद मील नं. १, २., राजकुमार मील, जूट मील और कई बड़े २ कारखाने तथा शीश महल, इन्द्रभवन, इतवारिया का मंदिर जैसी भव्य इमारतें उनके वैभव की पताका उड़ा रही है। बम्बई और कलकत्ते में भी आपकी कई दर्शनीय इमारतें है। आपके पास करोड़ों की जवाहरात है। आज आपके निमित्त लगभग पन्द्रह बीस हजार आदमियों का निर्वाह हो रहा है।

सेठ साहब के व्यापारिक साहस पर, कवि चुन्नीलालजी डोड़िया, प्रतापगढ़ निवासी ने अपनी कविता में इस प्रकार प्रकाश डाला है :—

॥ कवित्त ॥

चेरो तूँ चेड़ेरो श्री जिनेन्द्र वीतराग को है,
कोटिध्वज दानवीर सुबुधि विशाल को।

सर सेठ हुकमचन्द साँचो रायबहादुर,
सोहे राज्यभूषण तूँ होल्कर नृपाल को ॥
कीरति नवेली संग केलि को करैया तोसो,
जैन वंश मांझ अन्य है न भव्य भाल को ।
हेरि के उदारताई तेरी यह सिंधुसुता,
चेरी होय तेरे गल गेरी वरमाल को ॥ १ ॥

॥ सवैया ॥

सम्पत्ति तोहि मिली सुरराज कि मत्त करीवर द्वार पै घूमे,
विक्रम पुंज शरीर सबल्ल को पेखि के मल्ल धरै चख भूमें ।
तोष सदा अपनी महिला महँ हुक्म शसी परतीय न झूमे,
वज्रसि छाति व्यापार में तेरी निहारि युरोपि पदाम्बुज चूमे ।

कवि चुन्नीलाल डोड़िया, दिगम्बर जैन,
प्रतापगढ़ (राजपूताना)
संमत १९८७ ज्येष्ठ शु. १

सेठ साहब का औद्योगिक जीवन
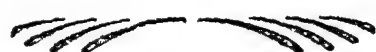
गत जनवरी मास में इंदौर में स्वदेशी प्रदर्शनी का उद्घाटन करते समय भारत के सुविख्यात देशभक्त संसार के प्रसिद्ध वैज्ञानिक आचार्य सर पी. सी. राय महोदय ने सेठ साहब के संबंध में निम्न लिखित वाक्य कहे थे:—

" सर सरूपचंदजी हुकमचंदजी, जिनकी अध्यक्षता में इस प्रदर्शनी की आयोजना हुई है, वे भारतीय उद्योग धंधों के सबसे आगे बढ़े हुए नायकों में से एक है। वे हुगलीके तीर पर बनी हुई सबसे बडी जूट मील के व्यवस्थापक, संचालक और मालिक है। कलकत्ता के उपनगर में उनका बीजली से चलनेवाला जो फौलाद का कारखाना है उसे देखकर मुझ जैसा विज्ञान का जानकार भी हैरान होजाता है। जब हम लोगों ने स्वदेशी उद्योग धंधों के महत्व को ठीक ठीक नहीं समझा था, उससे बहुत पहिले सर हुकमचंदजी की दूरदर्शिता ने कपड़े की मीलोंके महत्व को केवल जानही न लिया वरन् उन्होंने उन्हें आरंभ भी कर दिया था। उनकी औद्योगिक हलचलोंका क्षेत्र केवल महाराजा होल्कर के राज्यही तक परिमित नहीं है वरन् वह सारे हिंदुस्थान में फैला हुवा है। यही कारण है कि आज कलकत्ता और बंबई भी उनकी अखूट उत्साह शक्ति और व्यवसाय कुशलता का उतनाही परिचय देते हैं जितना कि उनका इंदौर नगर "। आचार्य सर पी. सी. राय के उपरोक्त वाक्य अक्षरशः सत्य हैं।

वास्तव में सेठ साहब ने भारत की औद्योगिक उन्नति में अग्रभाग लेकर देशका जो कल्याण किया है वह अकथनीय है। हज़ारों आदमियों को आपकी इस औद्योगिक प्रगति से उदर निर्वाह का साधन प्राप्त हुवा है और विदेशीय पद्धति के उद्योगों में भारतवासी सफल नहीं हो सकते, यह जो हौवा बैठा हुवा था, वह सदा के लिये दूर हो गया है। हमारे सेठ साहब स्वभाव से ही उद्योगशील हैं ("Born Industrialist") जब मालवे में अफीम का व्यापार प्रायः बंद हो गया उस समय आपके मन में यह विचार दौड़ने लगे कि मालवे में अच्छी रुई पैदा होती है और विलायतवाले यहां की रुई विलायत ले जाकर, वहां पर कपडा बनाकर, उसे यहां लाकर बेचते हैं, तो क्यों न अपने यहां की रुई से कपड़े बनाने के कारखाने यहीं खोले जायं। ताकि देश का बहुतसा धन देश ही में रह सके। इन्हीं उच्च भावनाओं से प्रेरित होकर ईसवी सन् १९०९ में आपने इंदौर के कुछ लोगों के सहयोग से, पन्द्रह लाख की केपिटल से, इंदौर मालवा युनायटेड नामक लिमिटेड कंपनी की स्थापना की, और उसके लिये आपने अपने नाम से जमीन भी लेली पर आपको उस समय तक मील संचालन का अनुभव नहीं था। इसलिए आपने बिना किसी संकोच के बंबई के सर सेठ करीमभाई इब्राहीम को उसके मेनेजिंग एजन्ट कायम कर दिये और आप परमनेन्ट डाइरेक्टर हो गये। इस समय तक इंदौर राज्य में लिमिटेड कंपनी के रजिस्ट्रेशन का कायदा नहीं था, इसलिए यह मील बंबई में ही रजिस्टर्ड की गई और इसका हेड ऑफिस भी वहीं रक्खा गया। समय पाकर इस मील ने आशातीत उन्नति की और महायुद्ध के समय इसके शेअर का भाव ९००) नौ सौ रुपये प्रति शेअर तक हो गया था। इस मील ने अब तक लगभग ३० करोड़

का कपडा निकाला है और आज भी यह मील हिन्दुस्थान की सुव्यवस्थित सफल मीलों में गिनी जाती है। कहने की आवश्यकता नहीं कि इस मील को जन्म देने का प्रथम श्रेय हमारे सेठ साहब को ही है।

हम पहले ही बता चुके हैं कि सेठ साहब जन्म से ही उद्योगशील है। जब आपने देखा कि दि इन्दोर मालवा मील आशातीत रूप से उन्नति कर रही है, तब आपके मन में एक अपनी निजकी एजेंसी में मिल खोलने की अभिलाषा उत्पन्न हुई। आपने सन् १९१३ में पन्द्रह लाख की केपिटल से दि हुकमचंद मिल्स नामक एक मील खोल दी। इस मील का शिलारोपण समारंभ व उद्घाटनोत्सव श्रीमंत महाराजाधिराज सवाई सर तुकोजीराव होल्कर के कर कमलोंद्वारा हुआ था। इस मीलने भी बडी प्रशंसनीय उन्नति की। महायुद्ध के समय इसके शेअर का भाव भी लगभग ९००) रुपये प्रति शेअर तक पहुंच गया था। इस मीलने अबतक लगभग बीस करोड़ का कपड़ा निकाला है। इसके कशमीरे और रंगीन मालने हिन्दुस्थान भर में नाम पाया है। यू. पी., पंजाब, बंगाल, अफगानिस्तान व बलूचिस्तान तक इस मील का माल जाता है। ईसवी सन् १९१९ में इस मील के रिझर्व फंड से एक मुनाफा मील और खोल दी गई। इसी अवसर पर इस मील के प्रारंभिक कार्यकर्ता श्रीयुत केशोरावजी पुराणिक व श्रीयुत लाला हजारीलालजी को उनके काम से संतुष्ट होकर श्रीमान् सेठ साहब ने क्रम से हुकमचंद मील के फुली पेड १०० व ५० शेअर इनाम में देनेकी उदारता की। मिल के दूसरे कर्मचारियों को भी डबल बोनस दिया गया। इस मिल में सब मिलकर ११७६ लूम्स और ४०५१२ स्पिंडल्स है और आज भी इस मीलकी गणना हिंदुस्थान की प्रथम श्रेणी की मीलों में हैं। मील का वर्तमान

प्रबंध श्रीमान् आर. सी. जाल एम. ए., एलएल. बी., महोदय के हाथों में है।

इसवी सन् १९२२ में सेठ साहब ने अपने पुत्र श्रीमान् कुं. राजकुमारसिंहजी के नामपर " दी राजकुमार मिल्स " स्थापित की जो कि वर्तमान मील उद्योग की अवनति दशा में भी चल रही है।

इस बीच में सेठ साहब एक वक्त कलकत्ते गये और वहां जूट की मिलों की तरफ दृष्टि पहुंचाई। उस समय तक बंगाल में कोई भी जूट मील अपने देशवासियों के हाथों में नहीं थी। सब मिलें अंग्रेजोंके ही हाथ में थीं। बहुत मनन करने के बाद सेठ साहब ने इसवी सन् १९१९ में ८० लाख कॅपिटल से " दी हुकमचंद जूट मिल " नाम का एक मील खोल दिया। श्रीमान् सेठ साहब का नाम उस समय इतना विख्यात हो चुका था कि जहां सेठ साहब के नाम का मिल खुलने की आवाज बाहर पड़ी कि शेअर भरने के लिए उपरा उपरी अर्जियां आने लगीं, यहां तक कि पांच शेअर की अर्जी पीछे एक शेअर दिया जा सका। इस मीलने भी बड़ी भारी उन्नति की इसका रुपया ७॥) का ऑर्डिनरी शेअर ऊपर में ३२ रु. तक बिका धीरे धीरे सेठ साहब ने इस मिलमें नं. २ और नं. ३ इस तरह दो मील और बढ़ा दीं। आज यह मील भी हिन्दुस्थान की उच्चश्रेणी की मिलों में गिनी जाती है।

इसी तरह श्रीमान् सेठ साहब ने कलकत्ते में एक स्टील मील और खोली जिसका कि उल्लेख आचार्य सर पी. सी. राय महोदय के वक्तव्य में आया है। इस मील का काम रेलवे कंपनीज़ को बहुत पसंद आया है और उनकी तरफ के आर्डर हमेशा सिलक में पड़े रहते हैं।

जैसा कि ऊपर बताया जा चुका है कि सन् १९२६ से सेठ साहब को स्टे्ट मे अरुचि होगई थी और इससे आप अपने उद्योग धंधे और भी बढ़ाना चाहते थे; श्रीमंत ग्वालियर दरबार का खास अनुरोध होने से आपने उज्जैन में हीरा मिल्स खोलने का निश्चय किया और सन् १९२८ में श्रीमंत महारानी साहिबा के हाथ से इस मीलका शिलारोपण महोत्सव संपन्न हुवा। इस मील में बिलकुल नये ढंग के बॉइलर व इंजिन लगाये गये है और सब मैशिनरी सब से नई डिज़ाइन (Latest Design) की लगाई गई है। यह मील लगभग बन चुका है और इसका कार्य भी बहुत जल्दी शुरू होने वाला है। इस मील का मेनेजमेंट भी श्रीमान् आर सी. जाल महोदय के हाथों में है।

सेठ साहब के उपरोक्त सब कारखानों ने अब तक कोई ७०-७५ करोड़ का माल निकाला है और प्रति दिन लगभग १५००० पंद्रह हजार आदमी आपके कारखानों के जरिये से अपना निर्वाह करते हैं।
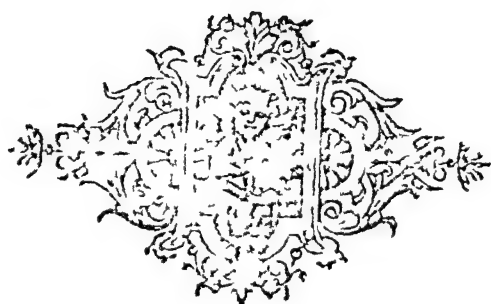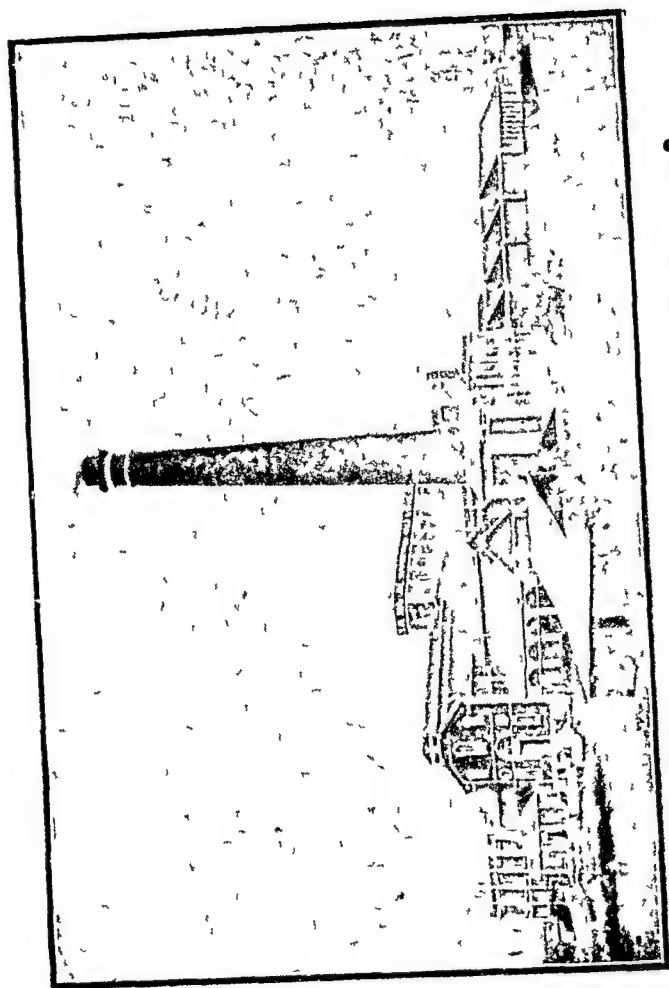
दी हुकमचंद मील जो सन् १९१५ में चालू हुई.

सेठ साहब का परोपकारी जीवन

हम पहले ही कह चुके हैं कि इस संसार में लाखों ही आदमी जन्मते हैं और लाखों ही नित्य प्रति संसार छोड़ते है पर उनके नाम को कोई स्मरण नही करता। संसार उन्हीं लोगों के नाम को गौरव के साथ स्मरण करता है जो संसार की सेवा में अपने तन, मन और धन का उपयोग करते हैं। सिर्फ लाखों करोड़ों की सम्पत्ति प्राप्त कर लेने में गौरव नहीं है; गगन चुंबी आलीशान महल बनाने में तथा मोटरों के दौड़ाने में गौरव नहीं है; सच्चा गौरव है मनुष्य जाति की सेवा करने में, अपने भाइयों के अंतः करण को ज्ञान के प्रकाश से प्रकाशित करने में और गौरव है दीन दुर्बल और अनाथों की रक्षा करने में। संसार में जितने महान् पुरुष हुए हैं वे मनुष्य सेवा ही से प्रकाशमान हुए हैं जिन महानुभावोंने अपने लाखों भाइयों के सुख दुःख में योग दिया है, जिन्होंने दया, परोपकार और मानवी सेवा को अपने जीवन का ध्येय बनाया है वे ही संसार में पूज्य और आदर की निगाह से देखे जाते हैं। कहने की आवश्यकता नहीं कि जहां हमारे सेठ साहब ने प्रचण्ड व्यापारिक पुरुषार्थ से, दूरवर्ती व्यापारिक दृष्टि से करोड़ों रुपया कमाया वहां आपने लाखों रुपया प्रसन्न चित्त होकर अपने भाइयों की सेवा में लगाया। आपकी विविध परोपकारिणी संस्थाएं आपकी कीर्ति की विजय ध्वजा फहरा रही हैं। कहीं आपकी ओर से सैकड़ों विद्यार्थियों को अन्न दान और विद्या दान दिया जा रहा है। कहीं हजारों रोग पीड़ितों को औषधिदान के द्वारा आरोग्य और शान्ति का लाभ पहुंचाया

जा रहा है। कहीं सैकड़ों मुसाफिरों को आराम करने के लिये घर से भी अधिक सुविधा की गई है। कहीं सैंकड़ों आदमियों के देव दर्शन के लिये भव्य मंदिरों की सृष्टि की जा रही है। इस प्रकार सेठ साहब के दान का विशाल प्रभाव कई दिशाओं में प्रवाहित हो रहा है। जवँरीबाग--विश्रान्ति भवन, महाविद्यालय, बोर्डिंग हाउस, श्री सौ. कंचनबाई श्राविकाश्रम, प्रिन्स यशवन्तराव औषधालय, भोजनशाला, प्रसूतिगृह आदि कई प्रख्यात संस्थाएँ सेठ साहब के उदार दान से संचालित हो रही है।

सेठ साहब के सार्वजनिक जीवन का विकाश श्री दिगंबर जैन धर्म व दिगंबर जैन समाज की सेवा से होता है। किन्तु आपके दान की दिव्य धारायें यहीं तक सीमित नहीं रहीं। अति शीघ्र उनका क्षेत्र विस्तारित होगया और जहां एक ओर सेठ साहब ने अपने धर्म और समाज के हित के लिये लाखों रुपया खर्च किया वहां सर्व साधारण जनता के हित के लिए भी आपने लाखों रुपयों के दान देने की व तन मन से सेवा करने की उदारता दिखाई है। सेठ साहब के परोपकारी कार्यों की गणना करना समुद्र की लहरोंके गिनने के समान एक दुःसाध्य काम है। ऐसा कोई दिन नहीं जाता जब कि आप किसी न किसी सार्वजानिक सेवा के कार्य में नहीं लगे हुए हों तथापि पाठकों की जिज्ञासा की पूर्ति के हेतु संक्षेप में थोड़े से खास खास कार्यों का उल्लेख यहां किया जाता है:—

अकाल में सहायता

संवत् १९५६ के अकाल में जब कि सारे देश में अन्न के अभाव में "त्राहि त्राहि" मची हुई थी उस समय सेठ साहब ने गरीब

और अनाथ लोगों के लिए अन्न और वस्त्रके दान की बड़ी ही सुव्यवस्था की थी। आपके यहांसे प्रत्येक गरीब व्यक्ति को आधासेर अनाज बांटा जाता था, आवश्यक्तानुसार कपड़ा पहनने को दिया जाता था।

प्लेग में सहायता

संवत् १९६० व संवत् १९६५ के प्लेग को इन्दौर की जनता अभी तक भूली नहीं होगी। रोग की भीषणता और क्वारंटाइन के दुःखों से लोगों में हा हा कार मचा हुवा था। सेठ साहब इस संतप्त अवसर में पीछे नहीं रहे। आपने रुपये १०००) गरीबों के झोपड़े बनाने को दिये और जवँरीबाग में कई लोगों को आश्रय दिया। क्वारंटाइन की सख्तियों के संबंध में आपने तत्कालीन प्राइममिनिस्टर साहब के सन्मुख प्रजा के कष्टों का प्रदर्शन कर क्वारंटाइन उठाने का हुकुम दिलाया। इसी प्रकार आगे भी प्लेग के जमाने में आपने जनता को सहायता पहुंचाने का पूर्ण प्रयत्न किया।

बे रोज़गार भाइयों के लिये चौका

इसी वर्ष सेठ साहब ने असहाय जैनी भाइयों के लिये रु. १००) मासिक खर्च पर एक चौका खोल दिया जिसमें हरएक बे रोज़गारी जैनी भाई उनका रुजगार लगजावे तब तक के लिए आदर के साथ भोजन पा सक्ता था। इसी वर्ष सेठ साहबने २००) रु. मासिक खर्च पर एक सार्वजनिक औषधालय स्थापित कर दिया था जो कि आगे जाकर बड़े विस्तृत रूप में कार्य करने लगा।

चार लाख का दान

संवत १९७० में पालीताना में आप श्री बंबई जैन प्रान्तिक सभा के अधिवेशन के सभापति चुनेगये उस समय आपने रुपये चार लाख

के महादान की घोषणा की। इसी दान से महाविद्यालय, बोर्डिंग हाउस, श्री सौ. कंचनबाई श्राविकाश्रम, उदासीनाश्रम जैसी महत्वपूर्ण आदर्श संस्थाओं की सृष्टि हुई है।

अन्य दान

संवत् १९७१ में इंदौर छावनी के किंग एडवर्ड हॉस्पिटल में एक वार्ड बनाने के लिये आपने रु. ४००००) चालीस हजार प्रदान किये। छावनी के लेडी ओडायर गर्ल्स स्कूल के स्थाई फंड में आपने रु. १००००) की सहायता पहुंचाई और रु. २५०००) में छावनी में मेडिकल कॉलेज के लिये बिल्डिंग खरीद ने को किंग एडवर्ड हॉस्पिटल को प्रदान किये।

संवत् १९७२ में श्री कान्यकुब्ज हितकारिणी सभा के अधिवेशन के समय उक्त सभा को आपने रु. १०००) का दान किया, इसी साल कृष्णपुरा इंदौर की जनरल लाइब्रेरी के स्थाई फंड में रु १०००) देने की उदारता दिखाई।

लेडी हार्डिंग्ज मेडिकल हॉस्पिटल में दान

संवत् १९७४ में दिल्ली में लेडी हार्डिंग्ज मेडिकल हॉस्पिटल खुला, जिसके लिये स्वयं वाइसराय लार्ड हार्डिंग महोदय ने सहायता के लिये अपील की थी। और आपको व्यक्तिगत भी पत्र दिया था। इसे बड़ी उपयोगी संस्था समझकर सेठ साहब ने रु. ४०००००) चार लाख रुपये प्रदान किये। इस सहायता से उक्त संस्था में एक वार्ड बनाया गया है और उसमें आपके नामका शिला लेख लगाया गया है। स्वयं

वाइसराय महोदय ने इस दान के लिये सेठ साहब का बहुत आभार माना था।

मिशनगर्ल्स स्कूल को दान

स्थानीय मिशन गर्ल्स स्कूल के लिये एक भवन की आवश्यकता थी और स्कूल में फंड की कमी थी। सेठ साहब को हमेशा से विद्या दान के संबंध में किसी जाति या मत का भेद नहीं है। आपके पास अपील आने पर आपने एक मुश्त रु. २५०००) देकर स्कूल के लिये मकान ख़रीद दिया। इसी साल दक्षिण एज्यूकेशन सोसायटी पूना की ओर से चंदे के लिये प्रोफेसर कर्वे आये थे सेठ साहब ने रु. १०००) चंदे में देकर उनका भी पूर्ण सन्मान किया।

संवत् १९७६ में सेठ साहब ने रु. ५०००) तत्कालीन ए. जी. जी. द्वारा और रु. ११०००) श्रीमंत कैलासवासी महाराजा ग्वालियर द्वारा सार्वजनिक हित के कार्यों में खर्च करने के लिये भिजवाये। इसी साल श्रीमान् सेठ साहब बीकानेर दरबार का निमंत्रण पाकर बीकानेर पधारे थे जहां आपका राजोचित सन्मान हुवा। लौटती वक्त सेठ साहब ने रु. ५०००) श्रीमंत बीकानेर नरेश की सेवा में इस उद्देश्य से भीजवाये कि वे किसी सार्वजनिक हित के कार्य में खर्च किये जायं। संवत् १९७७ में आपने अपनी पुत्री श्रीमती ताराबाई साहब के विवाहो-पलक्ष्य में रु. २६०००) का उदार दान घोषित किया।

औषधालय उद्घाटन

संवत् १९७५ में सेठ साहब ने जो रु. २५००००) दो लाख पचास हजार के दान की घोषणा की थी उसमें से मोहल्ले बियाबानी

में श्री 'प्रिंस यशवंतराव आयुर्वेदीय जैन औषधालय' खोला गया इसका उद्घटन समारंभ श्रीमंत महाराजाधिराज सवाई सर तुकोजीराव होलकर बहादुर के कर कमलों से कराया गया। उद्घाटन अवसर पर सेठ साहब ने एक लाखके दान की ओर घोषणाकी जिसमें रु. ६००००) औषधालय के चिरस्थायी फंड में व रु. ४००००) प्रबंध विभाग में दिये गये। इस वक्त इंदौर में यह औषधालय अपने ढंग का प्रथम है और इसने बड़ी ही उन्नति की है। इसमें रु. १७००००) संवत् १९७५ के दान में से और रुपये साठ हजार ६००००) उद्घाटन अवसरके समय का दान, इस प्रकार कुल रु. २३००००) दिये गये।

प्रसूति गृह

इसी औषधालय के पास सेठ साहब की ओर से बड़ा ही उत्तम प्रसूतिगृह बना हुवा है। यह संस्था भी सेठ साहब की परोपकारशीलता का आदर्श उदाहरण है। इसकी इमारतों में रु. ५००००) व ध्रौव्य फंड में रु. ३५०००) कुल रुपये ८५०००) लगा है।

एक लाख का दान

संवत् १९८० में सेठसाहब श्री सम्मेदशिखरजी की यात्राको पधारे थे वहां से वापिस लौटने पर आपने एक लाख के दान की घोषणा की जिसमें से रु. ५००००) महाविद्यालय के ध्रौव्य फंड में और रु. ५००००) प्रसूतिगृह में लगाया गया।

इन्दौर की गरीब प्रजा के साथ सहानुभूति

हम ऊपर बता चुके हैं कि संवत् १९७४ में इंदौर में गेहूं की बड़ी महंगाई हो गई थी इन्दौर की गरीब प्रजा को गृहस्थी का खर्च
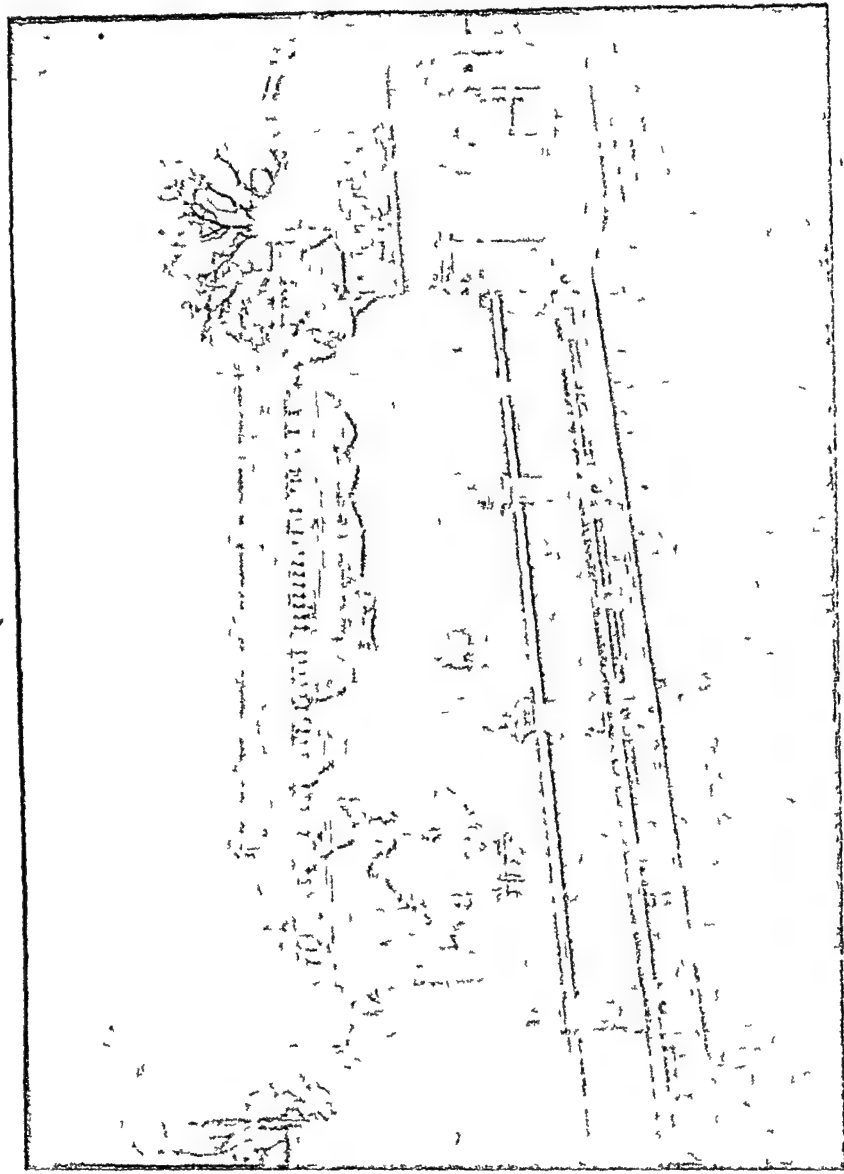
सेठजी का " प्रिंस यशवन्तराव आयुर्वेदीय जैन औषधालय " बियावानी.

और स्कालरशिप व हिन्दी ग्रन्थमाला आदि के लिये हजारों रुपये दिये और देते रहते हैं। कृष्णपुरा जनरल लायब्ररी में भी हिन्दी पुस्तकों के लिये आपने एक हजार रुपये दिये थे, हिन्दी कविता का भी आपको बड़ा शौख है; कवियों का आदर करते हैं, उनसे वार्तालाप और उनके कवित्त सुनने में आपका चित्त रंजायमान होता है। आपको भेंट की हुई कविताओं में से कवि चुन्नीलालजी की एक कविता तथा हिन्दी के प्रसिद्ध कवि अजमेरीजी की कु. राजकुमारसिंहजी के पुत्रोत्पत्ति के समय आई हुई कविता यहां उद्धृत की जाती है:—

(सुयश बधाई और आशीष.)

दोहा.

श्रीगौरीसुत सुमरिकें, घर शारद को ध्यान
हुकमचंद सर सेठ हित, मंड हुँ पत्र महान

छप्पै

सिद्धि श्री सुभ धाम, नाम इन्दौर सु-नगरी
तांमे अनुपम तुकोगंज शोभा में अगरी
तुकोगंज में इन्द्रभवन सुखमा को सागर
तहां सेठ सर हुकमचंद जू जगत उजागर
योग्य लिखी चिरगांवसों, झाँसी प्रांत प्रमानिये
कृपापात्र कवि आपको, जन अजमेरी जानिये

दोहा

जय जिनेंद्र है आपको, सहित प्रेम सम्मान
पत्र बाँचबे की कृपा, कीजे कृपा निधान

सोरठा

प्रथम सुजस परसंग, विसद बधाई बाद में
पुनि आसीस अभंग, यहि प्रकार कविता रचहुँ

पालै जैन धर्म को, प्रतापी पुन्यवान पूरो, रुरो रूप रावराजा बखत बलंद है
बुद्धि को निधान, राज्य आभूषन, दानवीर, सबल सरीर, सदा आनंद को कंद है
विमल विलासी, नीति नागर, सुसील, सोम्य, सागर सनेह को सरूपचंद नंद है
जाके गेह वास अष्ट सिद्धि नव निद्धिन को, परम प्रसिद्ध सर सेठ हुकमचंद है ॥ १ ॥

लक्ष्मी के लड़ेते सर सेठ हुकमचंद जूको, ज्येष्ठ पुत्र हीरालाल हीरा अनमोल है
मंगल को मूल, तात-मात अनुकूल सदा, बोलत झरत फूल, आयो पूर्व ओल है
दूजो लाजवारो, देवराज को कुमार मानों, राज को कुमार विद्या-बुद्धि में अतोल है
ताही लघु पुत्र कें, पिता के पुत्र-पुत्र भयो, आनंद अपूर्व छयो, बाजै नयो ढोल है ॥ २ ॥

देसीसों पथिक परदेसी प्रश्न पूछ रह्यो-आजहिं इंदौर में का काहू की अवाई है ?
कैंधों कहूँ कौन हूँ तमासो है अपूर्व आयो ! कैंधो आज कौनहुँ सुपर्व सुखदायी है ?

शीघ्र सुन्यो उत्तर-विशाल इन्द्रभौन मध्य, लाल-के सुलाल भयो,
हाल सुधि पाई है;
आनन्द के कन्द श्री सरूपचंद नंद सर, सेठ हुकमचंद के बधाई है
बधाई है ॥ ३ ॥

फूले है गुलाब-से सगोती, मित्र मोतिया से, मान्य मोगसे मन
मौज हैं मना रहे
कामदार कुंद-से, मुनीम मुचकुन्द-से है, सेवक मनव्वर-से सौरभ
सना रहे
पाटल से पंडित, कवीस केवड़ा-से और नेगी नारिकेल, जंबु जाचक
जना रहे
चंदन समान सर सेठ हुकमचंद जू को घेर के बधाई वारे बाग-सो
बना रहे ॥ ४ ॥

षट्पदी

सेठ समृद्धि विसाल लुटावत मालकि हीरालाल जवाहर
दई खुसाली दई आनंदी भई छई भीतर अरु बाहर
सुधी धर्म के धनी सुकवि अरु गुनी जहां जिहि सुनी बधाई
सब मिल सिसु के हेत असीसे देत इनामे लेत अघाई
भयो महोत्सव जबर सुनी हम खबर रह्यो नहीं सबर चित्त में
हुकमचद के छंद रचे स्वच्छंद बधाई के निमित्त से

छप्पै

श्री सर हुकमीचंद, रावराजाजू साहब
अटल तखत इंदौर, अटल साहिबी मुसाहब
अटल धर्म में सुरुचि, दानकी अटल व्यवस्था
अटल सुजस की सुरभि, अटल संपत्ति अवस्था
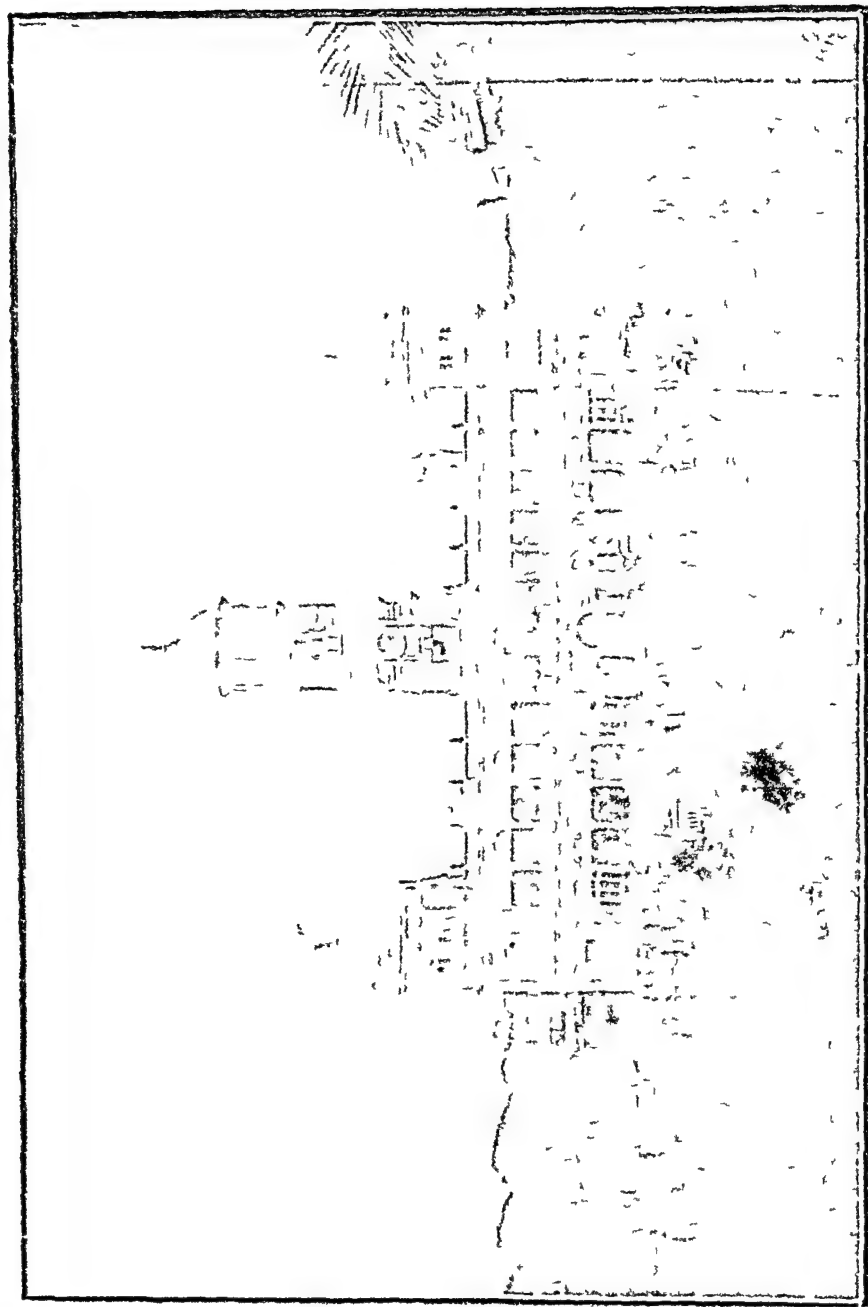
सेठजी की इमारतों में से तुकोगंज इंद्रभवन कोठी व बगीचे का दृश्य.

जिन अनुसासन रतदंपती, प्रभु पद प्रेमामृत पियो
परिवार पुत्र पौत्रन सहित, जगमगात जुग जुग जियो

दोहा

पद्य-पत्र पढ कें प्रभो, चितवहु इत की ओर
अजमेरी पै आपकी, चहिये कृपा की कोर

चिरगांव (झांसी) — कृपा पात्र
१-५-१९२१. — अजमेरी

कवित्त.

जित तित महल बलन्द नभ चुम्बित हैं,
इन्द्रभौन तेरे कौन इन्द्र भौन होर की ।
हय गय शाल रथ शाल चहुं दान शाल,
जिनकी विशाल शाल शोभित सुठौरकी ॥
नन्दन स्वरूप भव्य भूप तें घट्यो न आज,
आछे राजथान छटा हैन तुम्ह तौर की ।
हेरिके समृद्धि रावराजा हुक्मचंद तेरी,
बाढी शतचन्द आभा नगर इंदौर की ॥ १ ॥
ए हो रावराजा सर श्रेष्ठीवर्य हुक्मचंद,
रावरी विभूति को कुबेर हेरि थके हैं ।
भगति तिहाँरी पोलिटीकल निहारि अज़ों,

आछे २ होशदार होत हक बके हैं ॥
तेरे गुनव्रात स्वांत विन्दु का पियूष पाय,
कोविद कवेन्द चुम्भि चातक चहके हैं।
जैन कुल छत्र सचरित्र विज्ञ वृन्द मित्र
तेरो जस इत्र जत्र तत्र ही महके है ॥ २ ॥

आपका कृपानुरागी
कवि. चुन्नीलाल डोड़िया दि. जैन.

साहित्य सेवियों विद्वानों के समागम आप मिलाते रहते हैं। जैन ग्रंथों के लिखाने में भी आपने बड़ा धन व्यय किया है, आपके शीशमहल पर हिन्दी की एक खास लायब्रेरी है।

तिलक स्वराज्य फंड में दान

ईसवी सन् १९२१ में महात्मा गांधी ने राष्ट्रीय आंदोलन के लिये एक करोड रुपये का फंड एकत्रित करने के लिये जनता को अपील की थी और इसके लिये अजमेर से कुं. चांदकरणजी सारडा आये थे। यद्यपि सेठ साहब इस आंदोलन के पक्ष में नहीं थे तथापि आये हुए सज्जनों के सन्मानार्थ आपने इस फंड में रु. २५०१) प्रदान करने की उदारता की।

डेली कॉलेज में दान

स्थानीय डेली कॉलेज के प्रति सेठ साहब का बड़ा प्रेम है और इसमें आपने अपने सुपुत्र कुमार राजकुमारसिंहजी को पढने के लिये

भेजा था। संवत् १९८५ में इस कॉलेज की विशेष उन्नति के लिए आपने रु. २५०००) प्रदान किये जो कि कालेज की प्रबंध कारिणी कमेटी ने बहुत धन्यवाद के साथ स्वीकार किये।

प्लैंट रिसर्च इंस्टिटयूट को दान

इंदौर में प्लैंट रिसर्च इंस्टीटयूट कृषि की एक आदर्श संस्था है कृषि संबंधी वैज्ञानिक शोध में इसने बड़ा काम किया है। संस्था की उपयोगिता समझ कर सेठ साहब ने इसके विद्यार्थियों को स्कालर्शिप देने के लिये रु. ४०००) का दान दिया है।

आंख का अस्पताल

इंदौर में आंखके अस्पताल का अभाव प्रायः सब को ही खटकता था। राज्य के प्राइम मिनिस्टर रा. ब., एस. एम. बापना साहिब व तत्कालीन स्टेट सर्जन रायबहादुर सरजूप्रसादजी की सम्मति से आपने रु. ९१०००) महाराजा तुकोजीराव हास्पीटल के अंतरगत एक आंख का अस्पताल बनाने के लिए दिया और श्रीमन्त महाराजा साहब के कर कमलों से इसका उद्‌घाटन कराया इस से इंदौर की जनता की एक बड़ी भारी आवश्यकता की पूर्ति हो गई।

श्री अहिल्यामाता गोशाला पींजरा पोल

श्रीमान सेठ साहब अच्छी बातों में हमेशा दिल चस्पी लिया करते हैं। संवत् १९७७ में गौ रक्षा के संबंध में आपने एक डेप्यूटेशन की योजना की और इन्दौर में एक सुव्यवस्थित पींजरा पोल चलती रहने के लिए दुकान दुकान पर फंड एकत्रित करने के लिये स्वयं

घूमे। आपने स्वयं भी इसमें रुपये ३१०१) दिये। सेठ साहब के प्रयत्न से तुरत रु. ७००००) एकत्रित हो गये और आज यह संस्था सेठ साहब की ही देख रेख में आदर्श रूप से चल रही है।

श्री महाराजा तुकोजीराव क्लॉथ मार्केट.

इन्दौर शहर में मीलों के कारण से कपड़े का व्यापार बढ़ता देख कुछ वर्षों पहिले बग्गीखाने पायगा की जमीन पर इस मार्केट का शिलारोपण श्रीमंत महाराजा तुकोजीराव बहादुर के करकमलों द्वारा हुआ था। पश्चात् कुछ सरकारी व आपसी अड़चने आजाने से इसका कार्य रुक गया तब व्यापारी लोग निराश होकर सेठजी के पास आये और उन्होंने इस कार्य के पार लगाने की प्रार्थना की। आपने लोक सेवा का कार्य जान इसकी वागडोर हाथ में लेकर बीच में पड़ी हुई कई रुकावटों को अपने प्रभाव से दूर हटाया और कई दिन परिश्रम करके मार्केट को बसा दिया तथा दुकानों की बटनी कर दी तभी से इस कमेटी के आप सभापति है और अब तक इस मार्केट की उन्नति के लिये प्रयत्न करते रहते है।

हिन्दू विश्व-विद्यालय बनारस में जैन मंदिर व बोर्डिङ्ग.

विश्वविद्यालय के प्रश्नको लेकर सन १९२० में जब श्रीमान् पं. मदनमोहन मालवीयजी इंदौर आये थे तब टाऊन हाल में श्रीमन्त महाराजा साहब के सभापतित्व में विराट् सभा हुई थी उस समय सेठ साहब ने तीनों भाइयों की तरफ से १५०००) पन्द्रह हजार रुपये विश्व-विद्यालय में जैन बोर्डिंग और जैन मंदिर बनाने को दिये थे। मालवीयजी

जमीन के लिये लिखा पढ़ी की गई और विश्वविद्यालय के शिलारोपण समारंभ में जब सेठजी गये थे तबभी जमीन के लिये अधिकारियों से कहा था आखिर कानपुर से पिछलेसाल सेठजी स्वयं बनारस गये और मालवियिजीसे मिलकर सब जमीनें देखीं परन्तु मालवीयजी के अभी-तक जमीन का निर्णय नहीं करने से कार्य का प्रारंभ नहीं हो सका आज यह रुपया ब्याज बढते लगभग २००००) हो चुके हैं जो फिक्स डिपाजिट पर मील में जमा है। सेठ साहब शीघ्र ही छोटासा जैन मंदिर व बोर्डिंग बनाकर उसका चिरस्थाई प्रबंध करने को मालवीयजी के साथ पत्रव्यवहार कर रहे हैं। हर्ष की बात है कि सेठ साहब के दान द्वारा यहभी चिरस्मरणीय योजना शीघ्र हो जावेगी.

महाराजा तुकोजीराव अस्पताल

इस अस्पताल में सेठजी ने लोकोपयोगी और समयोपयोगी कई बिल्डिग्ज बनवा दीं जैसे महाजन वार्ड, फीमेल हास्पिटल में सौभाग्यवती इन्दिरा महारानी आउटडोर हास्पिटल, नर्सेज इन्स्टीट्यूशन, फेमीलीवार्ड, इन सब बील्डिग्ज में लगभग १०००००) एक लाख रुपये सेठजी के सार्वजनिक हितार्थ खर्च हुये।

श्रीयशवन्त क्लब तुकोगंज

इन्दौर में टाउन हाल क्लब के सिवाय कोई अच्छा अपटूडेट क्लब नहीं होने से तुकोगंज में श्रीमन्त एक्स महाराजा साहब द्वारा इस क्लब की योजना हुई उस समय इस क्लब को उपयोगी जान रुपये ५००००) और २५०००) इस प्रकार पिचहत्तर हजार रुपये सेठ साहब ने श्रीमन्त महाराजा साहब के पास भेजे जो क्लब की बिल्डिग में लगाये गये. आज कल यह क्लब अपटूडेट बनाया जा रहा है।

होल्कर राज्य के किसानों को दो लाख की सहायता

पिछले साल श्रीमंत वर्तमान महाराजा साहब ने राज्य के किसानों के कष्ट पर विचार कर सहायता करने का प्रस्ताव निकाला था सेठजी ने भी अधिकारियों द्वारा प्रेरणा होने से उपयोगी जान दो लाख रुपये श्रीमंत महाराजा साहब द्वारा किसानों को सहायता के लिये दे दिये.

इस प्रकार सेठ साहब ने लोकोपकारी कार्यों में समय २ पर लाखों रुपये का दान किया है। आपके समूचे दान की रकम लगभग रु. ४० लाख होती है जिसकी एक विस्तृत सूची आगे प्रगट की जायगी। सेठ साहब ने अनेक सम्मानित पुरुषों को उन पर दुःख पड़ने के अवसर पर हजार हजार, पांच पांच सो रुपये की सहायता की है और अभी भी करते रहते हैं। इन्हीं महान लोक सेवा के कार्य्यों के कारण आज आपका यशस्वी नाम सारे संसार में विख्यात हो रहा है और दान देने व उसके सत् प्रबंध के लिए आप आदर्श माने जाते है।
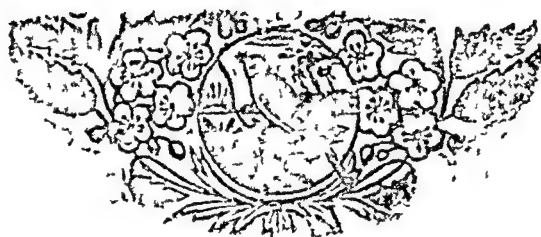
सेठ साहब का धार्मिक जीवन व जैन समाज का नेतृत्व

पहिले बताया जा चुका है कि सेठ साहब को बाल्यकाल से ही जैन धर्म के प्रति बहुत रुचि है। बचपन से ही आप सेठ अमरचंदजी, मास्टर दरयावसिंहजी सोंधिया आदि धर्म प्रेमी पुरुषों के साथ सदैव जिनेन्द्र पूजन, स्वाध्याय व धर्म चर्चा में अपना यथेष्ट समय देते रहे हैं।

इसके सिवाय धार्मिक व सामाजिक कार्यों में भी आप सदैव तत्परता के साथ योग देते रहे हैं। आपके पूर्व पुण्य प्रताप और बुद्धि कौशल से धर्म के बड़े बड़े काम सहज में ही निपट जाते हैं। जहां भी आवश्यकता पड़ती है वहां आप स्वयं अपने खर्चे से पहुंचकर अथवा तार व पत्रों द्वारा प्रभाव डालकर उस कार्य को बनाकर ही छोड़ते हैं। कई संस्थाओं के आप सभापति है, कई के कोषाध्यक्ष हैं और कई के डायरेक्टर (संचालक) व ट्रस्टी हैं. आपके द्वारा बहुत से धार्मिक और सामाजिक उल्लेखनीय कार्य हुवे हैं उनमें से कुछ कार्यों का संक्षेप में दिग्दर्शन यहां कराया जाता है।

संवत् १९५७ में शक्कर बाजार इन्दौर के मारवाड़ी दि० जैन मंदिर पर कलश चढाने में कुछ अड़चन उपस्थित हुई थी. सेठ साहब ने श्रीमंत महाराजा साहब को सारी बातें भली प्रकार समझा कर उक्त मंदिरजी पर कलश चढाने की आज्ञा प्राप्त की और उसी साल आषाढ़ मास में बड़ी धूम धाम से स्थानीय और बाहर के हजारों जैनियों के

समूह में कलशारोहण का महा उत्सव किया। इस कार्य में आपके लगभग रु. २५०००) खर्च हुवे थे।

संवत् १९५९ में आपने इंदौर और छावनी के बीच में एक लाख स्क्वेयर फीट जमीन सरकार से खरीद की और सबसे प्रथम उसके मध्य में श्री पार्श्वनाथ भगवान का भव्य जिनालय निर्माण कराया और उसके चारों तरफ यात्रियों के ठहरने के लिये १०० कोठरियां बनवा दीं। इसी साल आपने उक्त श्री मंदिरजी की पंच कल्याणक श्री बिंब प्रतिष्ठा कराई इसके प्रतिष्ठाचार्य सुप्रख्यात स्व. न्यायदिवाकर पंडित पन्नालालजी थे। हजारों भाई देश देशांतरों से इस प्रतिष्ठा महोत्सव में सम्मिलित हुए थे। यहीं पर इसी समय श्री दि. जैन मालवा प्रांतिक सभा की स्थापना की गई थी जो कि आजतक आपके ही सभापतित्व में बराबर उन्नति कर रही है. इसके प्रधान मंत्री इस समय जै. भू. लाला भगवानदासजी हैं जो कि बड़े परिश्रम से इस सभा के आश्रित अनाथालय और औषधालय आदि का कार्य संपादन कर रहे हैं।

इस प्रतिष्ठा में, मंदिरजी बनाने में और आस पास की इमारतें बनाने में करीब दो लाख रुपया खर्च हुवा। क्रमशः इस स्थान को सेठ साहब ने बहुत विस्तृत रूप दे दिया और अपनी पूज्य मातेश्वरी कंवरीबाई के नाम पर इस स्थान को कंवरीबाग नाम से प्रसिद्ध किया है।

इसी जगह में महाविद्यालय, बोर्डिंगहाउस, विश्रांतिभवन आदि संस्थाएं है।

संवत् १९६२ में आपके हृदय में विद्यादान के भाव जागृत होने से और मालवे में दि. जैन बोर्डिंग हाउस की आवश्यकता समझ कर

आपने नशियांजी में १००) मासिक के खर्च से एक दि० जैन बोर्डिंग हाउस व पाठशाला कायम कर दी यहीं से सेठ साहब की पारमार्थिक संस्थाओं की नीव प्रारंभ हुई।

संवत् १९६३ में सेठ साहब बडे संघ सहित दाक्षिण को श्री जैनबद्री, मूड़बद्री की यात्रा को पधारे। सेठ साहब की धर्मवत्सलता और संघ के भाइयों के साथ सहानुभूति जो लोग साथ में गये थे वे आज तक याद करते है। सब के ठहरने के बाद आप बची हुई जगह में ठहरते थे। सबके सवार हो जाने के बाद आप गाड़ी में सवार होते थे। संघ के किसी भी भाई के बीमार हो जाने पर उसकी सुश्रूषा का पूर्ण प्रबंध करते थे। सेठ साहब का यह गुण अत्यंत स्तुत्य और अनुकरणीय है।

संवत् १९६५ में सौभाग्य से बंबई के सुप्रसिद्ध दानवीर सेठ माणकचंदजी का इंदौर में शुभागमन हुवा। उन्होंने बोर्डिंग की व्यवस्था देखकर संतोष प्रगट किया और सेठ साहब से ९०००) रुपया मंदिरजी का खर्च चलाने के लिये और १४५००) रु. धर्मशाला के खर्च चलाने को लेकर फंड कायम किया और नशियांजी का आधा हिस्सा धर्मशाला के लिये कायम करा दिया। इसी समय इसकी ब्र. शीतलप्रसादजी के द्वारा नियमावली तय्यार करवाकर संस्थाओं का कार्य नियम बद्ध कर दिया गया और इनके मंत्री लाला हजारीलालजी जैन बनाये गये, तभीसे आजतक इन संस्थाओं के संचालन का भार मंत्रीजी के कंधों पर है.

सम्वत् १९६५ के करीब दिल्ली दरबार में सेठजी गये थे आपको खास दरबारी निमंत्रण आया था और खास बैठक मिली थी, वहां से आप आबू, तारंगा, शत्रुंजय, गिरनार यात्रार्थ पधारे थे आबू में

मास्टर दर्यावसिंहजी व अमरचंदजी के साथ स्वाध्याय करते आपने बड़े ओजस्वी वैराग्य की लहर में यह दोनों पद पढ़े थे—

स्व. पंडित भागचंदजी कृत (राग गौरी)

आतम अनुभव आवै जब निज, आतम अनुभव आवै । और कछू न सुहावै, जब निज आतम अनुभव आवै ॥ टेक ॥
रस नीरस हो जात ततच्छिन, अच्छ विषय नहीं भावै ॥आतम०॥१॥
गोष्ठी कथा कुतूहल विघटै, पुद्गल प्रीति नसावै ॥ आतम० ॥ २ ॥
राग दोष जुग चपल पक्षजुत, मन पक्षी मर जावै ॥ आतम० ॥ ३ ॥
ज्ञानानंद सुधारस उमगै, घट अंतर न समावै ॥ आतम० ॥ ४ ॥
" भागचंद " ऐसे अनुभव के, हाथ जोरि सिर नावै ॥ आतम० ॥५॥

पं. दौलतरामजी कृत (भजन)

मेरे कब है वा दिन की सुघरी । मेरे० ॥ टेक ॥ तन बिन बसन असन बिन बन मे, निवसों नासा दृष्टि धरी । मेरे० ॥ १ ॥
पुण्य पाप परसों कब विरचों परचों निज निधि चिर विसरी । तज उपाधि सजि सहज समाधी, सहों घाम हिम मेघ झरी । मेरे० ॥ २ ॥
कब थिर जोग धरों ऐसो मोहि, उपल जान मृग खाज हरी । ध्यान कमान तान अनुभव शर छेदों किहि दिन मोह अरी ॥ मेरे० ३ ॥
कब तृन कंचन एक गनों अरु मनिजड़ितालय शैलदरी । दौलत सत गुरु चरन सेव जो पुरवो आश यहै हमरी ॥ मेरे० ॥ ४ ॥

उन्हीं दिनों का एक फोटू भी स्वाध्याय करते समय का प्राप्त हुआ है जिस पर से पाठकों को उस समय के सेठजी के भावों का सच्चा दृश्य और सच्चे भावों का दिग्दर्शन का पता लगता है इसी तरह भादवे में पर्य्यूषण के दिन में मंडप में आप स्वयं शास्त्र पढते हैं तथा नेम-नाथजी की बारामासी बड़ी ओजस्वी भाषा में कहते है । श्रवण करने वालों को भी क्षणिक वैराग्य होना स्वाभाविक है.

स्वर्गीय मास्टर दर्यावसिंहजी व उदासीन अमरचंदजी, और पन्नालालजी गोधा अधिष्ठाता उदासीन आश्रम सहित सेठजी स्वाध्याय कर रहे हैं।

संवत् १९६६ में पवित्र सम्मेद शिखर पर्वतराज पर अंग्रेजों ने बंगले बनाने का विचार किया जिससे सारी जैन समाज में हलचल मच-गई। इसके विरोध में हजारीबाग के डिप्टी कमिश्नर साहब के पास से जगह जगह तार पहुंचे, उनसे जैनियों के डेप्युटेशन भी मिले आखिर बंगाल के छोटे लाट साहब ने मौका देखने की सूचना प्रगट की और सन् १९०७ की २३ वीं अगस्त को शिखरजी पर मौका देखने को आने का निश्चय हुवा।

इस समय जगह जगह के जैन समाज के मुखिया लोग भी हजारों की संख्या में एकत्रित हुवे।

इन्दौर से हमारे सेठ साहब श्री श्री सेठ कस्तूरचंदजी व कल्याण-मलजी, सेठ अमोलकचंदजी, सेठ बालचंदजी, सेठ झुन्नालालजी, सेठ मांगीलालजी आदि मुखियाओं को लेकर शिखरजी पहुंच गये।

जिस समय लाट साहब पर्वतराजपर आये उस वक्त पहाड़ के उपर हजारों जैनी भाई नंगे पांव मोजूद थे. सेठ साहब भी नंगे पांव लाट साहब के साथ घूम रहे थे हमारे सेठ साहब ने बड़ी अच्छी तरह लाट साहब के हृदय पर यह बात अंकित की कि इस पर्वत पर का कंकड़ कंकड जैनियों के लिये पवित्र और पूज्य है। यदि जैनियों के विरोध का खयाल न कर यहां पर बंगले बनाये जावेंगे तो सारे भारतवर्ष के जैनियों के अंतःकरण में भयंकर विरोध की अग्नि सिलग उठेगी।

कहने की आवश्यक्ता नहीं कि सेठ साहब की बातों का लाट साहब पर बहुत प्रभाव पड़ा और उन्होंने पर्वत पर बंगले बनाने का प्रश्न उठा लिया।

इसके वाद संवत् १९६७ में वंबई में जैन समाज के मुखियाओं की एक कमेटी हुई जिसमें निश्चय हुवा कि पर्वत को खरीद लिया जाय। तदनुसार जगह जगह चंदा हुवा स्वयं सेठ माणकचंदजी इसके लिये इन्दौर पधारे उस समय उस चंदे में सेठ साहब ने खुद आगे होकर रु. ५०००) पांच हजार की रकम भरी और रु. २५०००) का चंदा इन्दौर से करा दिया।

संवत् १९६७ में श्री सम्मेदशिखरजी पर सिवनीवाले स्व. सेठ पूरनसहायजी की तरफ से बिंब प्रतिष्ठा महोत्सव हुवा और उसी समय वहां पर श्री भारतवर्षीय दि. जैन महासभा का अधिवेशन हुवा। श्रीमान् सेठ साहब इस अधिवेशन के सभापति चुने गये थे। आपका वहां पर बड़ा भारी स्वागत हुवा, हाथी पर सवारी निकाली गई। महासभा में आपने जो सभापति का भाषण दिया वह बड़ा ओजस्वी, सारगर्भित और सामयिक था। आपके भाषण से सारी सभा स्थम्भित सी रह गई और समाज के अन्यतम नेता होने का गौरव आपको उसी दिन से प्राप्त हो गया। सेठ साहब ने वहीं पर महासभा के स्थायीकोष में रु. १००००) दस हजार प्रदान किये।

संवत् १९७० में सेठ साहब उपरोक्त महासभा के अधिवेशन में मथुरा पधारे वहां महासभा ने आपको "दानवीर" के उच्चपद से विभूषित किया। यहीं पर महासभा की ओर से आपको एक अभिनंदन पत्र अर्पण किया गया जिसमें आपकी दानशीलता, व्यापारिक साहस एवं अनेक सत्कार्यों की बड़ी प्रशंसा की गई। इस समय भी सेठ साहब ने महासभा के चालू खाते में रु. २५००) प्रदान करने की उदारता दिखाई।

संवत् १९७० में श्री ऋषभ ब्रह्मचर्याश्रम हस्तिनागपुर का प्रचारार्थ इंदौर आना हुवा। आश्रम के लिये फंड की अत्यंत आवश्यकता थी। विना रुपये के आश्रम के टूट जाने का भय था। सेठ साहब की हवेली के सामने ही सभा हुई। श्रीमान् सेठ साहब ने ब्रह्मचर्याश्रम की उपयोगिता को विचार कर चंदे के लिये स्वयं अपील की और खुद आपने रुपये १०२००) प्रदान किये। थोड़ी ही देर में कुलचंदा रुपये ११५००) का होगया जिससे ब्रह्मचर्याश्रम के स्थायी फंड को बड़ी मदद मिली।

संवत् १९७० में सेठ साहब को स्वाध्याय पूजन का बहुत अभ्यास था। उसी साल आपने स्वर्गीय मास्टर दरयावसिंहजी कृत श्रावक धर्मसंग्रह ग्रंथ छपाने को रु. ४००) देकर उदारता दिखाई।

संवत् १९७१ में पालीताने में श्री. दि. जैन प्रान्तिक सभा बंबई के अधिवेशन, और उसमें सेठ साहब के सभापति होने का वर्णन पहिले किया जा चुका है। यहां पर ही सेठ साहब ने जो रुपये चार लाख के महादान की घोषणा की वही वास्तव में श्री दानवीर रा. भू., रा. ब., रावराजा सर सेठ सरूपचंदजी हुकमचंदजी दि. जैन पारमार्थिक संस्थाओं की जड़ जमाने में कृतकार्य हुई।

संवत् १९७१ में ही सेठ साहब बंबई पधारे। वहां पर उस समय पहले वाला दि. जैन मंदिर जीर्ण हो जाने से भोलेश्वर में नया मंदिर बनाने की बातचीत हो रही थी। सेठ साहब के पास डेप्यूटेशन आते ही आपने सहर्ष रु. १००००) देने की उदारता दिखाई और स्वयं प्रयत्न करके आवश्यकतानुसार रकम भरवा दी।

संवत् १९७२ में श्रीमती सेठानीजी साहिबा का कांजी बारस का व्रत उद्यापन समारोह भी बड़ी धूमधाम से किया गया। इस समय

सी आपने रु. १५०००) श्री दीतवारिया मंदिरजी में और रु. १६६२१) उपरोक्त पारमार्थिक संस्थाओं के लिये प्रदान किये।

उदासीन आश्रम तुकोगंज के लिये पालीताना में दिये हुए चार लाख में से रु. १००००) दस हजार सेठजी ने बड़े गम्भीर विचार से इस संस्था के खोलने को रक्खे थे कि एक ऐसी संस्था खोली जावे जिससे संसार से विरक्त भाई आजीविका के फिकर को छोड़कर निराकुलता से धर्म साधन कर सकें। शुभ योग से उदासीन पं. पन्नालालजी गोधा ने डेढ़ सौ रुपये माहवार की मुनीमात छोड़कर गृहत्याग किया और उनके इस संस्था का भार लेना स्वीकार करने से दस दस हजार तीनों भाइयों ने देकर तुकोगंज में यह आश्रम एक दुमंजली उत्तम बिल्डिंग बनाकर प्रारम्भ कर दिया जो इस समय बड़ी उत्तमता से चल रहा है इसका आंकड़ा एक लाख लगभग हो गया है।

संवत् १९७४ में श्रीमान् सेठ साहब सकुटुम्ब बुंदेलखंड की यात्रा को पधारे। ललितपुर, सागर, चंदेरी आदि स्थानों पर आपका बहुत बड़ा स्वागत हुवा। सागर की पाठशाला में आपने रु. ४००) पारितोषक वितरणार्थ प्रदान किये।

संवत् १९७५ में सेठ साहब को वाइसराय महोदय का, सर नाईट खिताब की इन्वेस्टिचर सेरेमनी (Investiture Ceremony) के लिये शिमले पधारने का निमंत्रण मिला। इस पर आप शिमला पधारे। वाइसराय महोदय आप से मिलकर बड़े प्रसन्न हुए। शिमला में एक दि. जैन धर्मशाला की आवश्यकता समझ आपने वहां रुपये १५०१) धर्मशाला के लिये प्रदान किये।

संवत् १९७६ में बडनगर में श्री पंच कल्याणक महोत्सव हुवा और वहीं पर श्री मालवा प्रान्तिक दि. जैन सभाका अधिवेशन हुवा। इस

सभा की जड़ पक्की कर देने के लिये एक चंदे की अपील निकाली गई। श्रीमान् सेठ साहबने स्वयं रु. २५,००) उपदेशक भंडार खाते में और रु. ११००) प्रबंध खाते में देकर बातकी बात में कई हजारों का चन्दा करा दिया जिससे आजतक यह सभा सुचारु रूपसे चल रही है।

संवत् १९७८ में श्री दिगंबर जैन मंदिर शीतवारिया का मंदिर-प्रतिष्ठा महोत्सव बड़े समारोह के साथ सम्पन्न हुवा। जबकि मारवाड़ी गोटमें मत भेद खड़ा होनेसे सेठजी ने शान्त परिणामों से धर्म सेवन करने के लिये माणकचंदजी मगनीरामजी की गोट कायम की उसी समय इस मंदिर की नींव संवत् १९६९ में डाली गई थी और इसके बनाने में कई कारीगर ठेठ ईरान से बुलाये गये और जैपुर के कारीगर भी काम कर रहे है। इन्दौर में यह मंदिर एक प्रेक्षणीय वस्तु है। इन्दौर में आनेवाले दूर दूर के यात्री सबसे पहले इस विशाल और भव्य मंदिर के दर्शन को आते है। भारत के भूतपूर्व वाइसराय महोदय हिज एक्सीलेन्सी लार्ड रीडिंग और लेडी रीडिंग व हिज एक्सीलेन्सी फिल्ड मारशल जनरल सर विलियम बर्डवुड, कमान्डर इन चीफ, श्रीमंत बड़ोदा नरेश व श्रीमंत महारानी साहिबा ग्वालियर, महाराजा साहब दतिया, महाराजा साहब प्रतापगढ़, दरबार कुशलगढ़, दरबार काछीवड़ोदा, दरबार ध्रांगध्रा, राजा साहब बासंदा गुजरात और एजेन्ट टू दी गवर्नर जनरल इन् सेन्ट्रल इन्डिया आदि बड़े बड़े प्रतिष्ठित सज्जन भी इस मंदिर के दर्शनार्थ पधारे थे और जो इन्दौर में सैर करने आते हैं इस मंदिर को अवश्य देखते है। श्रीमंत महाराजाधिराज, सर तुकोजीराव होल्कर बहादुर व श्रीमंत सौ. महारानी साहिबा ने भी इस मंदिर का निरीक्षण किया है। इस मंदिर में कांच का बहुत ही अच्छा काम किया

गया है। इसके चित्रों में सिद्धक्षेत्र, समोशरण, तीनलोक, नंदीश्वर द्वीप व स्वर्ग की रचना एवं सप्त व्यसन, अष्ट कर्म इत्यादिक भाव व निम्नलिखित जैसे उपदेशी श्लोक दोहे बहुत ही दर्शनीय हैं।

द्रव्य रहे पृथिवी विषें पशु रहैं चौपाल
भार्या द्वारे तक रहे सज्जन चलैं मसान।
देह चिता तक रहत है धर्म साथ ले मान
देख दशा संसार की कर आतम का ध्यान ॥ १ ॥

अरब खरब की संपदा उदय अस्त लों राज
धरम बिना सब व्यर्थ ज्यों पत्थर भरी जहाज ॥ २ ॥
हे रे जूवा दुर्व्यसन तुझ पर पड़ियो घात
सुघरन की उघरन लगी कुघरन की सी बात ॥ ३ ॥

सुख पावे संतोष से तृष्णा दुख का मूल
आम किले कैसे तुझे बोये पेड बबूल ॥ ४ ॥

एक जान दो तीन तज, मार चार गह पांच ॥
श्रद्धो छह अरु सात को, आठ जीत नव जांच ॥५॥

दस ग्यारह बारह धरो, कर तेरह को चाव ॥
चौदह चढि पन्द्रह तजो, धर सोलह का भाव ॥६॥

इसमें अबतक कई लाखरुपया लग चुका है और अब भी काम चालू है। इस मंदिर के साथही सेठ साहब ने दीतवारिया बाजार में जाति की रसोई वगैरह के लिये एक विशाल धर्मशाला (भोजनशाला) बनवादी है जिसमें भी खर्चा लगभग एक लाख रुपये का हुवा है।

संवत् १९७८ में ही सेठ साहब बड़वानी की यात्रार्थ पधारे। नीमाड़ के दि॰ जैन भाइयों ने आपका अपूर्व स्वागत किया। बड़वानी
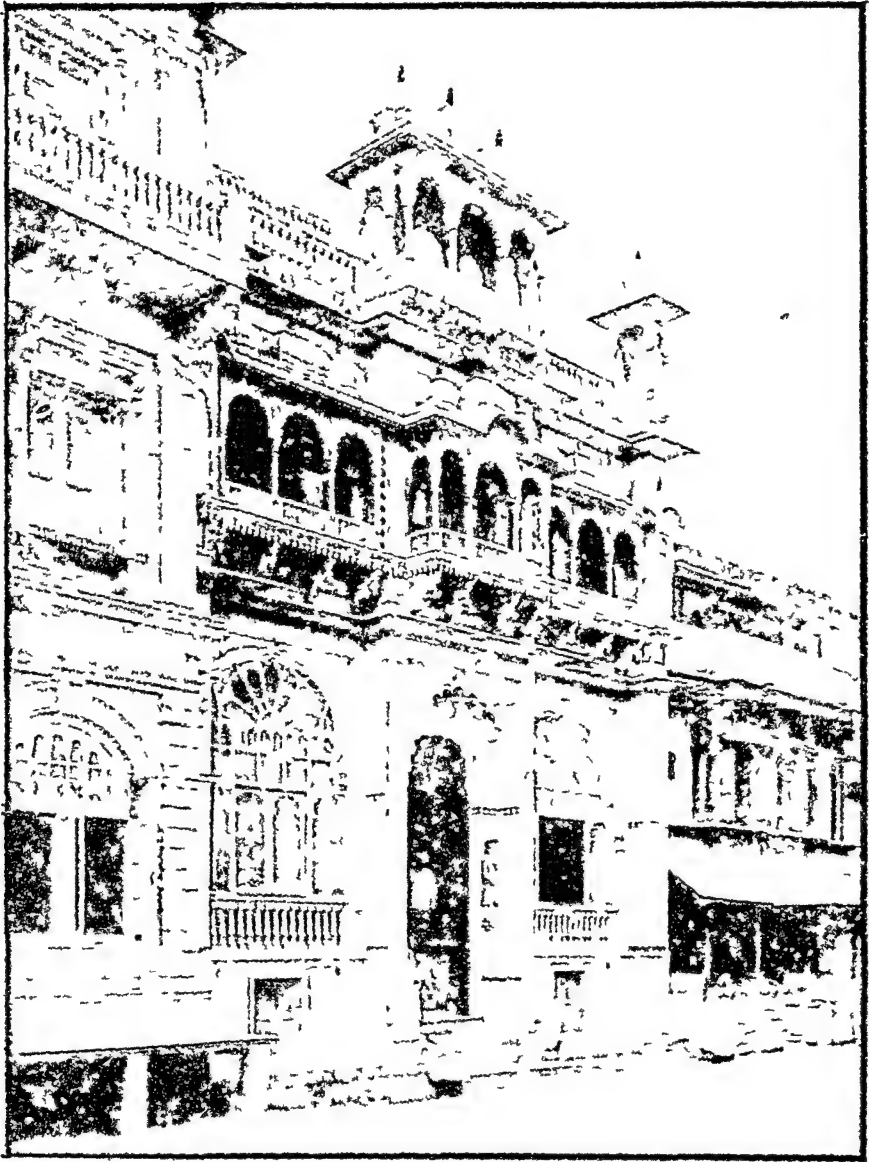
सेठजी के दीतवारा दि. जैन मंदिर का सदर द्रश्य.

क्षेत्र पर धर्मशाला की आवश्यक्ता समझ आपने रु. ४०००) धर्मशाला के लिये और रु. १०००) श्री मंदिर जीर्णोद्धार के लिये प्रदान किया। इसी समय पर बडवानी के दि. जैन समाज ने आपको अभिनंदन-पत्र भी अर्पण किया।

संवत् १९८० में दिल्ली में बडीभारी बिंब प्रतिष्ठा और पंच कल्याणक महोत्सव हुआ। लाखों की संख्या में दि. जैन भाई एकत्रित हुए श्रीमान् सेठ साहब भी सकुटुम्ब मित्र मंडली सहित पधारे। आपका केम्प प्रतिष्ठा मंडप के पास ही लगा था। दीक्षा कल्याणक के बाद भगवान का आहार आपके यहां हुवा था। सेठ साहब ने आहार दान के समय रु. ५१०००) का महादान घोषित किया जिसमें से रु. ३००००) जँवरीबाग विश्रान्ति भवन को दुमजला बनाने के लिये, रु. २००००) श्री दीतवारिया मंदिरजी के लिये व रु. १०००) दिल्ली की संस्थाओं को प्रदान किये। सेठ साहब का प्रभाव दिल्ली में खूब पड़ा। आपके दर्शनों के लिये आपके डेरे पर बड़ी भीड जमा हो जाती थी।

यहां से सेठ साहब श्री सम्मेद शिखरजी की यात्रा को पधारे। आपने रास्ते के तीर्थ क्षेत्रों पर कई जगह मंदिर धर्मशालादि बनाने की स्वीकृति दी आपने यहां से गुमास्ते भेजकर उनका निर्माण करा दिया। सब मिलाकर यात्रा में ११५०००) एक लाख पन्द्रह हजार रुपये खर्च हुवा। यात्रा से सकुशल वापिस पधारने पर आपका इन्दौर में बड़ी धूम के साथ स्वागत हुवा। जँवरीबाग से शहर तक आप पैदल ही पधारे और रास्ते में कितनी ही जगह आपको इतर पान के लिये ठहरना पड़ा। यात्रा से सकुशल लौटने के उपलक्ष में आपने जँवरीबाग में एक बड़ा प्रीति भोज दिया जिसमें लगभग ५००० आदमी स्त्रियां सम्मि-

लित हुई । इसी दिन सेठ साहब की पारमार्थिक संस्थाओं की ओर से और दिगम्बर जैन खंडेलवाल स्वयंसेवक मंडल की ओर से आपको अभिनदन पत्र अर्पण किये गये । सेठ साहब ने इस मौके पर पुनः संस्थाओं को रु. १०००००) एक लाख का दान किया जिसमें ५००००) महाविद्यालय और बोर्डिंग के चिरस्थायी फंड में और ५००००) प्रसूति-गृह कायम करने में रखे गये । इस यात्रा में जो लोग संग गये थे और कलकत्ते में बीमार हो गये थे उनकी सेवा सुश्रूषा के लिये सेठजी की सहानुभूति ने उन लोगों को चिर ऋणी बना दिया ।

संवत् १९८२ में सेठ साहब सकुटुम्ब श्री गोम्मटस्वामी महामस्तकाभिषेक उत्सव पर पधारे थे । मैसूर राज्य के श्रवण बेलगोला स्थान में श्री १००८ बाहूबली स्वामीजी की ६६ फुट ऊंची विशाल प्रतिमा है । उनका महामस्तकाभिषेक हर बारहवें वर्ष बड़े समारोह के साथ हुवा करता है । इसमें स्वयं मैसूर महाराज भी पधारते है और पूजन अभिषेक मे सम्मिलित होते है । इस साल यहां लगभग २०००० जैनी भाई एकत्रित हुये थे और श्री भारत वर्षीय दि० जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी का अधिवेशन भी यहा किया गया था, जिसके सभापति का आसन भी श्रीमान् सेठ साहब ने सुशोभित किया था। मन्दारगिरि से पुल बनाने का प्रश्न सामने होने से सेठ साहब ने खडे होकर बात की बात में कलश की बोली बोलकर ३९०००) रुपये एकत्रित कर दिये । रास्ते मे व श्रवणबेलगोला में सेठ साहब का अपूर्व स्वागत हुवा और मैसूर के जैनी भाइयों ने आपको एक अभिनंदन पत्र भेंट किया ।

संवत् १९८४ में आपने श्री मकसीजी तीर्थ क्षेत्र पर दि० जैन धर्मशाला बनाने के लिये रु. ५०००) प्रदान किये । श्री मकसीजी तीर्थ-क्षेत्र का निरक्षण प्रायः आपके ही हाथ में हैं और आप उस

क्षेत्र के लिये सतत प्रयत्न करते रहते हैं और आपके प्रभाव से ही झगड़ों में सफलता प्राप्त होती रही है।

संवत् १९८५ में श्री तारंगाजी सिद्धक्षेत्र के संबंध में श्वेतांबरी दिगंबरी भाइयों में बहुत दिन से झगड़ा चलरहा था। सेठ साहब ने इस झगड़े को निपटाने के लिये महीकांठा के पोलिटिकल एजेंट से लिखापढ़ी की आखिर बंबई में दोनों पार्टी के मुखिया लोग इकट्ठे हुए और महीकांठा के एजंट महोदय की उपस्थिति में आपस में फैसला हो गया।

संवत् १९८३ में सेठ साहब ने रु. ५००००) पचास हजार लगाकर जो स्वर्णमय श्वेत अश्वों का इन्द्र विमान (भगवान का रथ) बनवाया था वह तय्यार हो गया इसी समय जँवरीबाग में पारमार्थिक संस्थाओं का द्वादश वर्षीय महोत्सव मनाया गया इस अवसर पर रथ यात्रा निकाली गई और जवरीबाग में एक भव्य मंडप में मांडालिक पूजन विधान किया गया। इसका जलूस बडाही दर्शनीय था राज्य की ओर से फर्स्ट क्लास लवाजमा मिला था। दूर दूर से लगभग ५००० आदमी एकत्रित हुये थे और कई भजन मंडलियां बुलाई गई थीं। इसी अवसर पर श्री महाविद्यालय के विद्यार्थियों को तत्कालीन ए. जी. जी. सर रेजिनाल्ड ग्लांसी महोदय की अध्यक्षता में और इन्दौर की संपूर्ण जैन अजैन कन्याओं को लेडी ग्लांसी महोदय की अध्यक्षता में पारितोषक वितरण किया गया। उत्सव के अंत में श्रीमान् सेठ साहब की ओर से एक बड़ा प्रीतिभोज दिया गया।

संवत् १९८४ में सेठ साहब बागीदौरा की श्री जिन बिंब प्रतिष्ठा महोत्सव में सम्मिलित हुए। बागीदौरा के पंच आपको आग्रह पूर्वक लिवाने आये थे। यद्यपि आप कई आवश्यक कार्यों में व्यग्र थे परंतु

लोगों का आग्रह आपसे नहीं टाला गया और आप उत्सव में पधारकर शरीक हुए।

संवत् १९८५ में उदयपुर राज्यान्तर्गत श्री ऋषभदेवजी नामक महान् तीर्थस्थान पर श्वेतांबरी दिगंबरी भाइयों के झगड़े ने ध्वजादंड चढाने के अवसर पर बहुत ही उग्र रूप धारण कर लिया। श्वेतांबरी भाइयों ने राज्य के श्वेतांबरी हाकिमों की मदद से मंदिरजी के अंदर ही दिगंबरी भाईयों पर लकडियों द्वारा आक्रमण किया जिससे तीन दिगंबरी भाईयों की मंदिरजी के अन्दर ही मृत्यु हो गई। इस पर श्री दि० जैन समाज में बडी खलबली मचगई और सेठ साहब के पास चारों तरफ से तार आने लगे। कई डेपुटेशन उदयपुर गये किन्तु राज्य में श्वेतांबरियों का विशेष प्रभाव होने से सफलता नहीं मिल सकी। आखिर सेठ साहब व अजमेर वाले रायबहादुर सेठ टीकमचंदजी साहब वहां पधारे। सेठ साहब को स्टेट गेस्ट तरीके ठहराया गया और आपकी सुविधाओं का यथेष्ट प्रबंध राज्य की तरफ से किया गया। इतना होने पर भी श्रीमंत महाराणा साहिब से समक्ष में मिलना दुश्वार था। आखिर सेठ साहब ने युक्ति निकाल महाराणा साहिब से दौरे में ही मुलाकात की और बड़े ओजस्वी शब्दों में दिगंबरी भाइयों पर किये हुए अत्याचार की घटना सुनाई। श्रीमंत महाराण साहब ने सब बात सुन कर यथेष्ट न्याय करने का आश्वासन दिया। और जो कुछ न्याय मिला यह सेठ साहब की ही मुलाकात का प्रभाव था।

यों तो संवत् १९६५ से ही जब स्वर्गीय दानवीर सेठ माणकचंदजी के साथ सेठजी प्रतापगढ़ गये थे बंडीलालजी दिगंबर जैन कारखाना जूनागढ़ गिरनार कमेटी की बागडोर आपके हाथ में है। सेठजी इस कमेटी के द्रव्य की रक्षा करते हैं, व्याज उपजाते है और जब २ झगड़े इस क्षेत्र

पर खड़े हुए अपने प्रभाव से विजय प्राप्त कराते रहते हैं। कई बार गिरनार क्षेत्र पर दिगम्बरियों के हक की रक्षा के लिये प्रयत्न किये और करते रहते हैं।

संवत् १९८४ में सेठ साहब मोटरों द्वारा श्री सम्मेदशिखरजी पधारे। वहां पर आचार्य श्री शांतिसागरजी महाराज का संघ पधारा था और बंबई के सेठ घासीलालजी पूनमचंदजी की तरफ से श्री बिंब प्रतिष्ठा महोत्सव समारोह था। इसी अवसर पर वहां श्री दि. जैन महासभा व तीर्थ क्षेत्र कमेटी के अधिवेशन थे। सेठ साहब तीर्थ क्षेत्र कमेटी के अधिवेशन के सभापति थे। पंडित पार्टी और बाबू पार्टी में जोश पैदा होने पर आपने दोनों ही दल को सम्हाल कर बड़ी युक्ति से सभा का कार्य सम्पन्न किया और अपनी ओर से रु. ५१००) प्रदान कर श्री दि. जैन तीर्थ क्षेत्र कमेटी के लिये अच्छी तादाद में फंड इकट्ठा कर दिया।

ब्यावरा (राजगढ स्टेट) में जैनियों का जलूस निकलना ब्राह्मणों के विवाद से बंद कर दिया गया था ब्यावरा के जैनी सेठजी के पास आये सेठजी स्वयं दरबार राजगढ़ से मिले। राजगढ़ दरबार साहब ने ६ सितम्बर सन् १९१८ को पत्र द्वारा जैनियों का जलूस सेर बाजार निकलने की इजाजत दे दी जिसमें जैनियों के जलसे सम्बन्धी रुकावट की बाधा मिट गई।

संवत् १९८५ में बयाना में रथयात्रा पर और राजाखेड़ा ग्रामों में जो दि. जैनियों पर व मुनि संघ पर अत्याचार हुवा था उसके संबंध में सेठ साहब ने उन राज्यों के प्राइम मिनिस्टर्स, पोलिटिकल एजंट्स व ए. जी. जी. से मिलकर जोरदार कार्रवाई की और अखीर में आप पूर्णतया सफल हुए। इसी प्रकार श्री पावापुरजी तीर्थ क्षेत्र पर जल मंदिरजी संबंधी मुकद्दमे

में गवाही देने के लिये आप स्वयं पटना पधारे और धर्म के प्रसाद से वहां भी सफलता प्राप्त की।

संवत् १९८७ में सेठ साहब के समधी सेठ फतेहलालजी साहब (मालिक दुकान परसरामजी दुलीचंदजी) ने बड़वानी में श्री पंच कल्याणक जिन बिंब प्रतिष्ठोत्सव कराया। आपने इस प्रतिष्ठा कार्य का सारा संचालन भार श्रीमान् सेठ साहब के सुपुर्द कर दिया था। श्री बड़वानी सिद्धक्षेत्र से श्री श्री १००८ इन्द्रजीत और कुंभकर्ण तथा बहुतसे अन्य मुनि मोक्ष पधारे है तथा पहाड़ में श्री आदिनाथ भगवान् की ७२ फीट ऊंची विशाल प्रतिमा प्राचीन है। इन प्रतिमाजी का श्रीयुत् सेठ हरखुखजी साहब सुसारी व लाला देवीसहायजी साहब बड़-वानीवालों के अश्रान्त परिश्रम से जीर्णोद्धार हुवा था और इसीके उपलक्ष्य में उपरोक्त प्रतिष्ठा महोत्सव किया गया था। सेठ साहब ने इस कार्य को अपनी अद्वितीय प्रबंध शक्ति द्वारा आशातीत सफलता पूर्ण सम्पन्न किया। बडवानी शहर के पास एक विशाल सभा मंडप बनाया गया था और हजारों की संख्या में केम्प, तम्बू वगैरह लगाये गये थे। बिजली व गेस की रोशनी का अत्युत्तम प्रबंध था और बड़वानी अथवा निमाड़ प्रान्त में अभुतपूर्व लाउड स्पीकर्स का प्रबंध किया गया था। जिससे सभा मडप में बेठी हुई जनता ही नहीं सैकड़ों डेरों पर भी सभा मंडप में दिया हुवा भाषण स्पष्टतया सुनाई पड़ता था। सेठ साहब के लिये बड़वानी स्टेट की तरफ से खास दरबारी डेरे और मिलिटरी पहेरे का बदोबस्त किया गया था। इसी अवसर पर बड़वानी शहर से पहाड़ तक पक्की सड़क बनवा देने का प्रश्न उपस्थित हुवा सेठ साहब ने तुरंत श्री बावनगजाजी (आदिनाथ भगवान) के महामस्तकाभिषेक की कलशों की बोली बोलकर लगभग ३००००) तीस हजार रुपये एकत्रित कर दिये जिसमें से आधे पक्की सडक बनाने को बड़वानी स्टेट

को दिये गये। इसी अवसर पर यहां श्री मालवा प्रान्तिक दि. जैन सभा का अधिवेशन था जिसके सभापति सेठ साहब थे। श्रीमान् सेठ साहब की अपूर्व तीर्थ-भक्ति को देखकर सभा के साधारण अधिवेशन में उपस्थित सम्पूर्ण जनता ने अत्यंत प्रेम और भक्ति पूर्वक आपको "तीर्थ भक्त शिरोमणि" की पदवी अर्पण की।

संवत् १९८८ में सेठ साहब ने इंदौर में श्री व्रत-उद्यापन महोत्सव कराया। श्री दीतवारिया धर्मशाला में एक बहुत ही मनोज्ञ और दर्शनीय तीन लोक के मंडल की रचना की गई थी और तीन सुवर्णमयी वेदियों में श्री जिनेन्द्र भगवान विराजमान किये गये थे। एक तरफ अत्यंत आकर्षक श्री दीवान बिधीचंदजी के मंदिरजी जैपुर से अकृत्रिम चैत्यालय की रचना मंगाकर लगाई गई थी। दूर दूर से लगभग ५००० भाई और जैन समाज के प्रायः सब विद्वान पंडित गण पधारे थे। दीतवारिये में एक विराट सभा मंडप बनाया गया था जोकि शाम से ही खचाखच भर जाता था। बिजली और लाउड स्पीकर्स का अत्युत्तम प्रबंध था और जनता बड़ी ही शान्ति के साथ शास्त्र श्रवण करती थी। इसी समय सायंकाल के बाद शहर की पब्लिक जनता भी महोत्सव देखने के लिये उमड़ी पड़ती थी। वास्तव में वह दृश्य हृदय को पुलकित कर देता था। बाहर से आये हुए यात्रियों के ठहरने के लिये रंग महल आदि कई स्थानों पर उत्तम प्रबंध था। दूर २ से खास प्रबंध करके उत्तमोत्तम भजन मंडलियें बुलाई गईं थीं। सेठ साहब ने इस उत्सव में एक लाख रुपया नगदी और रुपये २५०००) के सोने चांदी के उपकरण श्री दीतवारा मन्दिरजी में भेट किये और दूसरे सब मन्दिरों में भी चांदी के उपकरण भिजवाये। कुल मिला कर इस महोत्सव में आपका और सेठ कल्याणमलजी हीरालालजी साहिब का २॥ ढाई लाख रुपया खर्च हुआ।

बड़नगर तेरापंथी गोट का विसम्वाद मिटाना

बड़नगर तेरापंथी जैन समाज में कई वर्षों से पंचायती झगड़ा चला आरहा था। मंदिर की आमदनी व खर्च का कोई हिसाब का पता नहीं चलता था रस्तेसिर किसी के भी पास हिसाब नहीं था। आपसी द्वेष के कारण मुकद्दमे बाजियां हो रही थीं जिसके कारण आर्थिक हानि के साथ साथ पंचायती संगठन शिथिलसा हो रहा था और परस्पर वैमनस्य की ज्वाला दिनों दिन वृद्धिंगत हो रही थी इस तरह मन्दिर के द्रव्य का व समाज शक्ति का व्यर्थ में नाश होते देख दोनो ओर के लोगोंने अपनी बागडोर सेठ साहब के हाथों में सोंप दी। श्रीमान् सर सेठ साहब ने कई वार बडनगर जा जा कर और कितनी ही कठिनाईया होतेहुए भी अपने व्यक्तित्व के प्रभाव से बड़नगर पचायती के आपस का वैमनस्य दूर कर शांति स्थापित करदी और मंदिर के आय व व्यय की सुव्यवस्था करदी तबसे उक्त समाज की पंचायत व मन्दिर का कार्य सुचारू रूप से चलने लगा है।

सोनकच्छ जैन समाज में पड़े हुए आपसी विरोध का दूर करना

सोनकच्छ में बहुत दिनों से मन्दिरजी के हजारों रुपये की रकम का गुटाला चला आता था वहा के जैनियों के सेठ साहब से प्रार्थना करने पर व त्यागीजी केशरीमलजी साहिब के अधिक आगृह करने पर ता. ९।१।३३ को सेठ साहब सोनकच्छ पधारे और वहांके मन्दिर का सब हिसाब नक्खी कराया, जिन जिन की तरफ रकम बाकी थी उनसे बाकायदा लिखा पढ़ी कराकर मंदिरजी के रुपयों का पूरा प्रबंध किया जिनकी भूल जान पड़ी उनपर दंड किया अन्त में अपने बुद्धि बल से सबको सन्तुष्ट करते हुए समाज में एकयता स्थापित करदी।

मालेगांव की हिन्दू प्रजा का संकट निवारण.

ऊपर के प्रकरणों से पाठक जान गये होंगे कि सेठ साहब के परोपकारी विचार सब के लिए एकसा है। परोपकार में जाति धर्म का पक्ष नही रखते। कुछ ही वर्षो पहिले की घटना है कि दक्षिण मालेगांव में हिन्दुओं पर कर आदि के कारण अधिकारियों से विवाद खड़ा हुआ था और हिन्दू लोग दुखी होकर मालेगांव छोड़ कर इधर उधर जा रहे थे उस समय मालेगांव से हिन्दुओं का डेप्यूटेशन उनके संकट निवारने की प्रार्थना लेकर सेठ साहब के पास आया आपने उनकी दुःख कथा सुन कर सहानुभूति दर्शाई और बम्बई के बड़े बड़े लोगों को पत्र लिखकर और स्वयं बम्बई गवर्नर महोदय से मिलकर मालेगांव वालों का कष्ट दूर कराया जिसके लिये मालेगांव की प्रजा आज तक आपके नाम का गुणगान करती है।

गुजरात काठियावाड़ बाढ़ पीड़ित रिलीफ फंड

उपरोक्त कमेटी का काम भी सेठ साहब के हाथ में है आपने इस फंड में स्वयं अच्छी रकम दी और लोगो को प्रेरणा करके रकम एकत्र की और उसका उपयोग सुचारू रुप से किया। इसी साल पंजाब रोहतक और नीमाड़ के बाढ़ पीडित लोगों की सहायता भी इसी फंड से की गई।

भा. दि. जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी की अध्यक्षता व मुनि धर्म रक्षा

स्वर्गीय दानवीर सेठ माणिकचंदजी साहब के बाद से ही तीर्थ-क्षेत्र कमेटी के सेठ साहब सभापति हैं। आपने जबसे कमेटी की बागडोर

हाथ में ली है तीर्थ क्षेत्रों पर जब जब जो जो आपत्तियां खड़ी हुईं आपने भरसक प्रयत्न कर उनको दूर कराया आवश्यकता होने पर आप स्वयं अधिकारियों से मिले। इस तरह तन मन धन से तीर्थों की सेवा आपने की है और करते रहते है। शिखरजी, गिरनारजी, तारंगाजी, रिखबदेवजी, पावापुर आदि पर आपके प्रभाव से जो जो समय समय पर सफलता मिली वह समाज से छिपी नहीं है इसी तरह मुनिसंघकी रुकावटों के सम्बन्ध में जब जब मौके आये आपने तारों द्वारा व स्वयं जाकर सफलता प्राप्त की। कलकत्ते में खुद गये, रुपये दिये और कमेटी की बागडोर हाथमें ली। हालमें हैदराबाद में मुनिधर्म पर रुकावट के विरोध में इन्दौर में जैनियों की सभा में आपने खुले शब्दों में ये कहदिया कि सबसे पहिले मै हैदराबाद चलने को तैयार हूं। सब जगह से हजारों की संख्या में हैदराबाद चलकर मुनि धर्म की रक्षा करने के आपके वीरत्व भाव देखकर समाज में जोश आगया था अच्छा हुआ आपके तारों के प्रभाव से ही निजाम सरकार ने रुकावट हटाली वरना सेठ साहब तो आखरी तैयारी से पीछे हटने वाले नहीं थे। धन्य है ऐसी धार्मिक निर्भीकता को।

सेठ साहब का त्याग.

संवत् १९६२ से ही सेठ साहब अपनी पारमार्थिक संस्थाओं को प्रति वर्ष प्रत्येक मौकों पर कुछ न कुछ देते ही रहे है परन्तु सम्वत् १९७८ में आपने संसारकी असारता पर विचार करते हुए अपनी संस्थाओं को चिरस्थाई बनाने के ध्येय से और दान को सार्थक करने के हेतु ८६५०००) का ट्रस्ट फंड रजिस्टर कर सात जनों की कमेटी को ट्रस्टी बनाकर २१ मेम्बरो की प्रबन्धकारिणी कमेटी के सुपुर्द संस्थाओं का कार्य करके आप संस्थाओं की तरफ से निराकुलित हो गये। आज

ये संस्थाएं सेठजी साहब के दिये हुए समयोचित दान से ११,२५०००) पर पहुंच गई है इस दूर दर्शिता के लिये सेठ साहब की जितनी प्रशंसा की जाय थोड़ी है क्योंकि इधर के सेठ लोगों में यह त्याग सबसे प्रथम सेठ साहब ने ही किया।

सेठ साहब और स्त्री शिक्षा

अंग्रेजी के सुप्रसिद्ध लेखक स्माइल्स साहब का कथन है कि किसी देश की उन्नति का दारोमदार महिलाओं की उन्नति पर निर्भर है। माताएं राष्ट्र की निर्माता समझी जाती हैं। संसार विख्यात वीर नेपोलियन का कथन है कि "जिस देश की स्त्रियां मूर्ख हैं वह कभी उन्नति नहीं कर सकता।" गृहस्थी रूपी गाड़ी के दो पहिये होते हैं—एक पुरुष और दूसरी स्त्री अर्थात् दोनों पहिये एक साथ चलें तभी गाड़ी सुचारु रुप से मंजिल पार कर सकती है। माताएं ही संतान में अच्छे बुरे संस्कार डाल सकतीं हैं। इसलिये जगतजननी माताओं को सुधारने की भावना भी प्रारंभ से ही सेठजी के भावों में चली आ रही थी। सुयोग से सेठ साहब की धर्मपत्नी भी, सोने में सुगंधवत्, श्रीमती कंचनबाई सरीखी विदुषी मिलगईं। जिस समय पालीताने में सेठ साहब ने चार लाख के दान की घोषणा की थी उसी समय सभा में ही सेठानी जी ने एक लाख रुपया स्त्री शिक्षा के लिये देने का प्रस्ताव रख दिया था जिसको सेठ साहब ने सहर्ष स्वीकार कर लिया। उसी एक लाख से इन्दौर नरसिंह बजार में 'श्री कंचनबाई दिगम्बर जैन श्राविकाश्रम' सम्बत १९७२ में खोल दिया गया। १५०००) से मकान खरीदा गया और ८५०००) ध्रुव द्रव्य रखा गया; जिसके व्याज से इसका खर्चा चलता है। इसका उद्घाटन समारम्भ श्रीमंत् सौभाग्यवती महाराणी चन्द्रावती साहिबा के कर कमलों से हुआ था। श्रीमंत महाराणी साहिबा

ने उस समय अपने भाषण में स्त्री शिक्षा की आवश्यकता बतलाते हुए सेठानी साहब के इस आवश्यक प्रशंसनीय कार्य की बड़ी सराहना की थी और स्वयं स्त्री शिक्षा के कार्य में सहयोग देते रहने का वचन दिया था उसी अवसर पर कुन्जीलालजी बनारस वालों ने एक कविता छात्राओं द्वारा पढवाई थी; वह समयोपयोगी होने से यहा उद्धृत की जाती है। इस संस्था द्वारा आज तक बहुतसी अध्यापिकाएं तैयार होकर भारत के अनेक ग्राम, शहरों में स्त्री शिक्षा का प्रचार कर रही है। श्रीमती सौ. सेठानीजी स्वयं इस संस्था का संचालन बड़ी उत्तमता से करती है इसी से जैन महिला परिषद से आपको "दानशीला" का पद दिया हुआ है।

लावनी

अटल रहे सौभाग्य तुम्हारा रहे कीर्ति जग में छाई।
यही हमारी कामना कुशल रहो कंचनबाई ॥
नारि जात पर पूर्ण दया करि श्राविक आश्रम खुलवाया।
देश देश की छात्राओं ने जिससें आ आश्रय पाया।
शिल्प कला बहु भांति पठन पाठन प्रबन्ध बहु करवाया ॥
कुल वधुओं को नित्य गृह-कर्म धर्म सब सिखलाया।
भला किया अबला जन का अरु उन पर करुणा दरसाई ॥
॥ टेक ॥ १ ॥

जैन तत्व सिद्धान्त शास्त्र में निस दिन ध्यान लगाया है।
प्रिय वचनों से अहर्निसि हमको यही सिखाया है ॥
प्रखर बुद्धि विद्या के बल से धर्म तेज दर्साया है।
अबलाओं की भवँर त नैया पार लगाया है ॥
धर्म सहित हम निराश्रयों ने अन्नपूर्णा ही पाई ॥ टेक ॥ २ ॥

सदा तुम्हारा परहित में ही जीवन का सदव्यय होता ।
कीर्ति पताका देख तव सज्जनगण हर्षित होता ॥
लक्षावधि लक्ष्मी सारी अर्पण कर लोभ तजा धन का ।
धन्य धन्य हो तुम ही ने सफल किया पाना धन का ॥
नारी रत्न शील प्रतिमा सौन्दर्य शशी तुमने पाई ॥ टेक ॥३॥
दानवीर सर सेठ राज्यभूषण चिरजीवी हो न्याई ।
दिन २ दूनी प्रतिष्ठा बढ़े कीर्ति जगहो छाई ॥
पुत्र पौत्र पुत्री चिरजीवी हो आज्ञाकारी न्याई ।
यावज्जीवन रहे दाम्पत्य तुम्हारा सुखदाई ॥
रहे सदा सुबुद्धि आपकी 'कुञ्ज' वाटिका हरि आई ॥ टेक ॥४॥

इस प्रकार श्रीमान् सेठजी साहब ने अपने धर्म व तीर्थों की रक्षा के लिये, मनुष्य मात्र की सेवा के लिये, विद्या प्रचार के लिये, दीन दुखियों के दुःख दूर करने के लिये और रोगियों की सुश्रुषा के लिये तन, मन, धन से सहायता की है और कर रहे हैं।

जैन धर्म के मार्मिक व तात्त्विक भाव आप में बाल्यकाल से ही भरे हैं धार्मिक श्रद्धा में आप अडिग हैं बड़े बड़े विद्वानों से धार्मिक तत्वों पर तर्क व चर्चा करते रहते है, धर्मात्मा और चारित्रवान पुरुषों का आदर सत्कार करते हे क्योंकि सेठ साहब धर्म के स्वरूप और चारित्र के लाभ को खूब जानते हैं और अनेकों ग्रंथ व पुस्तकों से आपने पूर्ण ज्ञान पाया है और सच्चा ज्ञान प्राप्त करने का सतत प्रयत्न करते रहते है। आजकल भी सिद्धान्त शास्त्री स्याद्वाद वारिधि पं. खूबचंदजी व चार पांच उदासीन त्यागियों के साथ अध्यात्मिक ग्रंथों का स्वाध्याय और नित्य पूजन करते रहते है। लक्ष्मी की चंचलता व संसार के स्वरूप को आप अच्छी तरह जान रहे हैं और यह भी जानते है कि कल्याण का मार्ग एक

धर्म ही है। ऐसे धार्मिक भावना वालों का ही संसार में कल्याण हो सकता है।

सेठ साहब की राज्य भक्ति व राज्य मान्यता

हम पहले ही बता चुके है कि श्रीमान् सेठ साहब की जन्म कुंडली में उच्च राजयोग पड़ा हुआ है। आपने जिस तरह करोड़ों रुपये कमाये हैं और करोड़ों ही रुपये खर्च किये हैं उसी प्रकार आपका यश और सन्मान भी सदैव प्रखरता की उच्च कोटिपर रहा है। जिस किसी भी पुरुष से सेठ साहब मिलते है सेठ साहब के महान् व्यक्तित्व का प्रभाव उसपर पड़े बिना नही रहता। सेठ साहब श्रीमंत होल्कर सरकार की प्रजा है और श्रीमंत होल्कर राज्य के प्रति सेठ साहब की पूर्ण भक्ति है। राज्यभक्ति के व्यावहारिक प्रदर्शन में भी सेठ साहब हमेशा अग्रसर रहे है।

श्रीमंत महाराजा सर तुकोजीराव बहादुर के राज्यारोहण के शुभ अवसर पर उनके भयंकर बीमारी से आरोग्य लाभ करने पर व विलायत यात्राओं से सकुशल पधारने पर आपने स्वयं उपस्थित होकर व बड़ी २ रकमें सार्वजनिक कार्यों में उपयोग करने के लिये श्रीमंत को भेंट कर, समय समय पर आप अपनी उत्कृष्ट भक्ति को प्रदर्शित करते रहे है।

श्रीमंत तुकोजीराव महाराज के सिंहासन-त्याग के पहिले आपने इन्दौर की जनता की विराट् सभा के सभापति होकर तथा उच्चतम अधिकारियों से प्रत्यक्ष में मिलकर श्रीमंत महाराज के प्रति जो प्रगाढ़ भक्ति का प्रदर्शन किया था वह चिरस्मरणीय रहेगा। समय समय पर आपने महाराजा तुकोजीराव हास्पिटल में, यशवन्त क्लब में व प्रजा की

ओर से स्वयं वारलोन लेने में व किसानों की मदद आदि राज्य-सेवा के कार्यों में लाखों रुपये खर्च कर राज्य-भक्ति का परिचय दिया है और देते रहते है। श्रीमंत वर्तमान महाराज के प्रति भी सेठ साहब की उतनी ही अगाढ़ भक्ति है और यथेष्ट अवसरों पर आपने उसे श्रीमंत के प्रति प्रगट भी की है।

सेठ साहब के घराने की सेवाओं से प्रसन्न होकर श्रीमंत होल्कर राज्य भी आपके घराने को उचित सन्मान प्रदान करती रही है। यह आपके ही पुण्य प्रताप का फल था कि संवत् १९४३ में जुडिशियल मिसलेनियस नं ३८-२३ जुलाई सन् १८८५ के द्वारा तत्कालीन इंदौर नरेश श्रीमंत तुकोजीराव द्वितीय होल्कर बहादुर ने अधकरी (सायर का आधा महसूल) का परवाना देकर आपकी फर्म का सन्मान बढाया था। सेठ साहब ने वयस्क होने पर अपने अलौकिक व्यक्तित्व द्वारा अतुलनीय राज्य मान्यता प्राप्त की है।

समय समय पर श्रीमंत महाराजा साहेब ने सेठ साहब की संस्थाओं का उद्घाटन समारंभ करके तथा सेठ साहब के द्वारा दी गई पार्टियों में व थाले वगैरा के लिये पधार कर सेठ साहब का जो गौरव बढाया है उसका सविस्तार वर्णन करना इस संक्षिप्त चारित्र में संभव नहीं है। हम यहां श्रीमान् सेठ साहब को समय समय पर जो विशेष विशेष राज्यमान्य अधिकार तथा बड़ी बड़ी सन्मानित पदवियां प्राप्त हुई हैं उन्हीं का दिग्दर्शन मात्र करा देना चाहते है।

इन्दौर में ग्यारह पंच नामकी एक व्यापारिक संस्था स्थापित है इस संस्था के मेंबरों की नियुक्ति में होलकर सरकार का हाथ रहता है। सरकार ने इस संस्था को इन्सालवेंसी कोर्ट के अधिकार भी दे रक्खे हैं। संस्था के ग्यारह ही सदस्यों को दरबार में बैठक दी जाती है और

इन्दौर के व्यापारियों की यह प्रतिनिधि संस्था मानी जाती है। संवत् १९५० में श्रीमान् सेठ साहब की फर्म को भी इस संस्था का सदस्य होने का सन्मान प्राप्त हुवा। आज कल इस संस्थाका संचालन चेयरमेन के पदपर आपही कर रहे है।

ईसवी सन १९१६ में श्रीमंत तुकोजीराव महाराज ने अपनी वर्ष-गाठ के दरबार में सेठ साहब को दो सन्मान प्रदान किये। पहिला यह कि सेठ साहब को दरबार में उंची बैठक मिली। दूसरा यह कि सेठ साहब को हाथी की सवारी रखने का सन्मान दिया गया।

ईसवी सन १९१८ में श्रीमंत तुकोजीराव महाराज ने श्रीमंत की वर्षगांठ के दरबार में सेठ साहब को दो सन्मान और भी प्रदान किये:—

(१) सेठ साहब को यह इज़्ज़त बक्षी गई कि वे कलम नं. ६४ मुजब दीवानी कोर्ट में न तो बतौर मुद्दई मुद्दायले और न गवाही के तौरपर समंस द्वारा बुलाये जावे। जब जब काम पड़े तब तब जज वगैरह सेठ साहब के घर पर आकर ही काम चलावें। इस बाबत चीफ मिनिस्टर साहब ने पत्र नं. १६९७ ता. २७ फरवरी सन् १९२० द्वारा दाखला दिया था।

(२) जब जब सेठ साहब के यहां उत्सव आदि कार्यों का काम पड़े तब तब फर्स्ट क्लास लवाजमा दिया जाया करे।

ईसवी सन १९१९ मे श्रीमंत महाराजा साहब ने वर्ष गांठ के दरबार में सेठ साहब को "राज्य भूषण" की उच्चतम पदवी प्रदान कर सन्मान बढ़ाया और दसेरा सवारी में हाथी पर बैठक अता फरमाई।

ईसवी सन १९२० में श्रीमंत महाराजा सर तुकोजीराव बहादुर ने अपनी वर्ष गांठ के दरबार में सेठ साहब को पैर में सोना पहनने का सन्मान प्रदान किया। श्रीमंत ने बड़े प्रेम से अपने हाथों से आपको स्वर्ण लंगर प्रदान किया। श्रीमंत की इस कृपा से सेठ साहब का हृदय गदगद हो गया। आपने सन्मान प्राप्ती की इस खुशी में श्रीमंत महाराजा साहब को एक थाल भरके सोना भेंट किया.

ईसवी सन १९२४ में श्रीमंत महाराज साहब ने सेठ साहब को दरबार में सरदारों के लाईन में उच्च स्थान में बैठने का सन्मान प्रदान किया।

ईसवी सन १९३० में वर्तमान होल्कर नरेश श्रीमंत महाराजा यशवंतराव होल्कर बहादुर ने श्रीमंत की वर्षगांठ के दरबार में सेठ साहब को "रावराजा" की अत्युच्च पदवी प्रदान कर सेठ साहब का गौरव बढाया।

इस प्रकार प्रायः बाल्यकाल से ही सेठ साहब का सन्मान श्रीमंत होल्कर राज्य में दिन दिन अधिक होता रहा है। सेठ साहब ऑनरेरी मॅजिस्ट्रेट, चेम्बर ऑफ कामर्स के प्रेसीडेन्ट, लजीस लेटिव कमेटी के मेम्बर म्युनिसीपालिटी के कोन्सिलर रह चुके है। इन्दौर बैंक के आप डायरेक्टर व प्रेसीडेन्ट है यह सब पद सेठ साहब की राज्यमान्यता के गौरव को बढ़ा रहे हैं।

ब्रिटिश सरकार द्वारा सम्मान

श्रीमान् सेठ साहब ने अपनी नीति और कुशाग्र व्यापारिक बुद्धि का उपयोग करते हुए सम्पूर्ण राज्यकीय वातावरण से अलग रहते हुए

ब्रिटिश सरकार की भी समय समय पर पूर्ण सेवा की है और अपनी राज्य-शक्ति के प्रदर्शन में किसी से भी पीछे नहीं रहे है। इन्दौर छावनी के अस्पताल, मेडिकल स्कूल, मिशन गर्ल्स स्कूल व लेडी हार्डिंग हास्पिटल दिल्ली आदि के लिये आपने जो राजसी रकमें प्रदान की है तथा इसी तरह समय समय पर व्यापारिक मौकों पर गवर्नमेन्ट के उच्च अधिकारियों की बात को मान्यता देकर नुकसान नफे की परवा नहीं की उनका उल्लेख पहले किया ही जा चुका है। विश्वव्यापी युद्ध के समय जब कि सरकार को आदमियों की जितनी जरूरत थी उससे भी कहीं अधिक रुपयों की आवश्यक्ता थी उस समय हमारे सेठ साहब भी सरकार की सहायता करने को आगे बढ़े और आपने एक करोड़ दस लाख का वॉर लोन खरीदकर सारे संसार को आश्चर्य जनक कर दिया। कहना नही होगा कि व्यक्तित्व रूप में वारलोन खरीदने वाले पुरुषों में आपका नाम सर्वोपरि था। इसके सिवाय सेठ साहब ने वॉर रिलिफ फंड व एम्बूलेंस-कोर अवरडे आदि विविध युद्ध फंडों में भी काफी दान दिया।

इसमें संदेह नहीं कि सेठ साहब की इन महान् सेवाओं का प्रभाव ब्रिटिश सरकार पर भी खूब पड़ा। ईसवी सन १९१५ में श्रीमत सम्राट की वर्ष गाठ के समय भारत सरकार ने आपको "राय बहादुर" की उपाधि से बिभूषित किया।

ईसवी सन १९१९ में सेठ साहब की उच्चतम सेवाओं से प्रसन्न होकर भारत सरकार ने सेठ साहब को "सर नाईट" की सर्वोच्च पदवी प्रदान की और इसी साल के सितम्बर महिने में इस पदवी के इन्वेस्टिचर सेरेमनी (Investitute Ceremony) के लिये सेठ साहब को शिमले पधारने का निमन्त्रण दिया। सेठ साहब नियत समय पर शिमले पहुंचकर माननीय वाईसराय महोदय की इवनिंग पार्टि में

सम्मिलित हुए जहां कि आपको बड़े समारोह के साथ इस उच्चतम सन्मान से विभूषित किया गया। इसके सिवाय गवर्नमेन्ट की तरफ से दिल्ली दरबार में ऊंची बैठक छावनी के दरबारों में बैठक द्वारा मौके मौके पर सन्मान प्राप्ति होते रहे हैं अंग्रेज अफसरों से सेठजी अक्सर मिलते रहते हैं आप के यहां समय समय पर पार्टियों में एजेन्ट टू दी गवर्नर जनरल सेंट्रल इंडिया आदि ब्रिटिश अधिकारी पधारते रहते हैं.

गवालियर राज्य में सम्मान

श्रीमान् सेठ साहब का भूतपूर्व गवालियर नरेश श्रीमंत कैलाशवासी महाराजा माधवरावजी सिंधिया के साथ बड़ाही अच्छा संबंध था। आप सेठ साहब पर बड़ा प्रेम रखते थे और आपको अपने यहां के इकानामिक बोर्ड के मेम्बरों में चुना था जिसके अब तक सेठ साहब मेम्बर हैं।

इसीको स्मरण रखकर श्रीमंत गवालियर महारानी साहबा ने भी सेठ साहब को उनके राज्य के फाइनेंस संबंधी ट्रस्ट बोर्ड का मेम्बर बनाया है। सेठ साहब ने इस बोर्ड के मेम्बर होने पर निःस्वार्थ भाव से इसकी सेवा करते रह कर अपने व्यापारी अनुभव और प्रतिभा का पूर्ण परिचय दिया। सन् १९२८ में दि हीरा मिल्स की शिलारोपण विधि सम्पादन करने को भी श्रीमंत महारानी साहबा ने पधारने की कृपा की थी। सेठ साहब ने भी स्वर्गीय गवालियर नरेश के पास ११०००) ग्यारह हजार रुपये प्रजा हित के कार्य में लगाने को भेजे थे और अपनी उदारता का परिचय दिया था आप मीटिंगों में अक्सर गवालियर जाते रहते हैं स्टेट के तरफ से आपका अच्छा सन्मान है वर्तमान महाराज भी आपका सन्मान रखते हैं।

इसी प्रकार श्रीमान् सेठ साहब का हिन्दुस्थान के दूसरे राजा महाराजाओं के साथ भी अच्छा संबंध है। श्री ऋषभदेवजी अतिशय क्षेत्र के मामले में जब सेठ साहब उदयपुर पधारे थे तब वहां के सुप्रसिद्ध स्वर्गीय महाराणा साहब श्री फतेहसिंहजी ने आपको योग्य बैठक का सम्मान प्रदान किया था और राज्य के फर्स्ट क्लास मेहमान की तरह आप ठहराये गये थे।

महा मस्तकाभिषेक के अवसर पर जब आप मैसूर पधारे थे तो वहां के महाराजा साहब ने भी आपका बड़ा आदर किया था। अभी २ वर्ष पहिले श्रीमंत बीकानेर महाराजा साहब ने जो गंगा नहर का उद्घाटनोत्सव बड़ी धूमधाम के साथ किया था उसमें हिन्दुस्थान के बड़े बड़े राजा महाराजा और अधिकारी वर्ग के साथ साथ श्रीमान् सेठ साहब को भी आग्रह पूर्ण निमंत्रण भेजा था। पहले बाईजी साहिबा के विवाह में भी श्रीमंत बीकानेर महाराजा ने बड़े आग्रह के साथ आपको निमंत्रण भेजा था किन्तु कई अनिवार्य कारणों से आप उस समय जा नहीं सके। इस वार महाराजा साहब का आग्रह पूर्ण तार पाकर सेठ साहब बीकानेर के लिये रवाना होगये। बीकानेर स्टेशन पर स्वयं बीकानेर महाराजा साहब, बड़े राजकुमार साहब, तथा राज्य के अधिकारियों ने आपका स्वागत किया और आप एक स्पेशल कैंप में ठहराये गये जहां आपके लिये खास प्रवन्ध था तारीख ९ मार्च को महाराजा साहब की औरसे बेंकवेट दिया गया जिसमें नवाब साहब रामपुर, महारावल साहब डुंगरपुर, महाराजा साहब दत्तिया, जाम साहब नवानगर, महाराजा राणा साहब झालावाड़, महाराजा साहब राज पिपल्या, महाराजा साहब नरसिंहगढ़, सर अप्पाजीराव सितोले साहब, सर हस्मतुल्लाखा साहब, सर सी. पी. रामस्वामी अय्यर के. सी. आई. ई.,

इत्यादि सब मेहमान सम्मिलित हुये थे। श्रीमंत बीकानेर दरबार ने इस भोज में सब मेहमानों को धन्यवाद देते हुए सेठ साहब का भी बडा आभार माना था। आपने अपने श्रीमुख से फरमाया कि "सेठ हुकमचन्दजी हमारे खास मित्रों में हैं भारत के व्यापारियों में ये बडे भारी व्यापारी हैं। हमारा इनका व्यवहार बहुत दिनों से चला आरहा है। राजाओं कासा इनका भी काम है" इन्होंने सन १९२० में बीकानेर की पब्लिक के लिये रु. ५०००) पांच हजार भेजे थे ब्याज सहित यह रुपया पब्लिक थियेटर बनाने में लगाये हैं जिसके लिये सेठ साहब को बीकानेर नरेश ने धन्यवाद दिया था। इसके दूसरे दिन श्रीमंत बीकानेर महाराज अपने मेहमानों को गजनेर, सुरतगढ़, विजय-नगर आदि स्थानों में सैर करने के लिये ले गये। जब सेठ साहब बिदा के लिये पूछने गये महाराजा साहब ने आपको नई दिल्ली में उनकी विशाल कोठी देखने को चलने का अनुरोध किया और अपने साथही स्पेशल ट्रेन में सेठ साहब को दिल्ली ले गये। श्रीमंत बीकानेर महाराज की विशाल कोठी देखकर श्रीमान् सेठ साहब एक स्पेशल हवाई जहाज द्वारा रु. १४००) का रिटर्न टिकिट लेकर इन्दौर आये परेड के मैदान में इंदौर की हजारों जनता आपको देखने एकत्र हुई थी।

इसी प्रकार श्रीमंत महाराजा साहब धार, महाराणा झालावाड, महाराजा देवास, महाराजा झाबुआ, महाराजा सीतामऊ, सैलाना महाराजा नरसिंहगड, राजगड दरबार, बांसवाडा दरबार आदि कई नरेशों ने समय समय पर आपका बडा सम्मान किया है। श्रीमान् राजकुमार सिंहजी के विवाह पर उपरोक्त कई नरेशों ने पधारने की तथा पोशाक भेजने की कृपा की थी जिसका उल्लेख पहले हो चुका है।

कानपूर की जनता में सेठजी का गौरव

राय साहब सेठ जगन्नाथजी छावनी वाले के पोते के विवाह में सेठजी कानपुर पधारे थे वहां गवर्नर की आज्ञासे कानपूर वालों ने सेठजी के लिये ४ घोडे की वग्गी में सेठजी को प्रोसेशन में बिठाया था, कानपुर में उसरोज हडताल होते हुये भी हजारों जनता सेठजी को देखने को बजारों में एकत्र हुई थी कई बड़े बड़े रईसों की तरफ से सेठजी को भोज, एँट होम, अतर पान आदि देकर गौरव बढ़ाया गया था। हेद्राबाद, दिल्ली, बनारस, पटना, आदि बड़े बड़े शहरों में जहा भी सेठजी गये है दर्शकों की भीड लग जाती है बड़े बड़े रईस आपका उचित सन्मान करते है इंदौर की नगर हितकारणी सभा ने भी सेठजी को ही सभापति चुना था यह सब आपके पुन्य के प्रभाव और व्यक्तित्व का ही फल है।

सेठ साहब की दिव्य उदारता व पुण्य के प्रभाव

हम पहिले सेठ साहब की धार्मिक, सार्वजनिक और महोत्सव संबंधी उदारताओं का वर्णन कर ही चुके है। इस अध्याय में हम सेठ साहब की उन खास उदारताओं का वर्णन करना चाहते हैं जो कि सेठ साहब के हृदय की विशालता और उनके शुद्ध अन्तःकरण को दिव्यरूप में प्रकट करती है।

सेठ साहब ने अपनी सार्वजनिक संस्थाओं के लिये जो बड़ी बड़ी दान की रकमें समय समय पर प्रदान की थीं उन्हें सेठ साहब ने अच्छे से अच्छे समझे जाने वाले शेअरों में लगा दी थी जिनके कि व्याज से संस्थाओं का खर्च चलता था। इन्हीं शेअरों में रु.

३८५०००) के टाटा आयर्न के प्रिफरेंस शेअर्स थे। टाटा कंपनी के शेअरों की उस समय संसारभर में धूम थी और इसके प्रिफरेंस शेअर बिल्कुल निर्जोखिम ब्याज उत्पन्न करने के साधन समझे जाते थे।

समय के प्रभाव से इन शेअरों में भी एकदम मंदी आई। १०० रुपये के प्रिफरेंस शेअर का भाव रु. ४०) का होगया और लगभग दो तीन वर्ष तक कतई ब्याज भी नहीं बांटा गया। इस समय इन संस्थाओं का भाविष्य अंधकार मय होरहा था। सेठ साहब इस अवस्था को देख कर अपने अन्तः करण की उदार प्रवृति से तुरंत आगे बढे और टाटा के सब शेअर आपने लागत मूल्य पर अपने घरु खाते रख कर संस्थाओं को पूरे रुपये प्रदान कर दिये और दो वर्ष से जो ब्याज नहीं आरहा था वह भी आपने स्वयं देकर इन संस्थाओं को नवजविन प्रदान किया। इसमें सेठ साहब को लगभग १॥ डेढ़ लाख रुपयों की हानि उठानी पडी। अगर हम दूसरे शब्दों में यों कहें कि इस समय सेठ साहब ने अपनी संस्था ओं को हानि से बाचाने के लिये डेढ़ लाख रुपयों का दान दिया तो कुछ अत्युक्ति न होगी।

संवत् १९८४ में राजकुमार मील के शेअरों का भाव बजार में बहुत घट गया था। विश्वव्यापी मंदी का असर इन अत्यंत तेज भावों में बनाई हुई मीलों के ऊपर विशेष रुप से पडा और कई गरीब लोग जिन्होंने इस मील के शेअर खरीद रखे थे बड़ी विपत्ति में आगये। सेठ साहब के उदार हृदय को यह बात सह्य नहीं हुई। आपने तुरंत अपनी दुकान पर हुकम भेज दिया कि राजकुमार मील के शेअर जो भी बेचने आवे उसके प्रत १०० के भाव में खरीद लिये जावें। इस प्रकार सात आठ लाख के शेअर घरू ले लिये।

एकवार संवत् १९८७ में रुई का बजार बहुत घट गया था। मौसम का टाइम नही होने से और बजार आगे मौसम पर संभव है तेज रह जावे इस धारणा से श्रीमान् सेठ साहब ने अपनी मीलों के लिये उनकी वार्षिक आवश्यक्ता (Annual Consumption) के मुवाफिक वायदे का माल (Futores) खरीद लिया। दैवयोग से बजार और भी मंदा चला गया और उपरोक्त वायदे के व्यापार में लगभग रु. ११०००००) ग्यारह लाख रुपये का नुकसान लगा। सेठ साहब ने उपरोक्त सारा नुकसान उनके (सेठ साहब के) नामें मांड देने का मिलों को हुक्म भेज कर सब को आश्चर्य में डाल दिया। वास्तव में उदारता की पराकाष्ठा होगई। सेठ साहब की यह दिव्य उदारता मिलों के इतिहास मे सदा के लिये सुवर्णाक्षरों में लिखी रहेगी।

सेठ साहब की जैसी दिव्य उदारवृत्ति है उसी तरह उनके पुण्य का भी अद्भुत प्रभाव है। प्रायः देखा जाता है कि बड़े आदमियों को ठगने और उनका द्रव्य हरण करने के लिये दुनियां में बहुत से पुरुष प्रयास करते है। यह हम पहले ही बता चुके है कि सेठ साहब हमेशा राजसी ठाठवाट में रहते हुए उनके अतुल ऐश्वर्य का यथेष्ट उपभोग करते है। सेठ साहब के गले में अत्यंत वेश कमित हीरे अथवा पन्ने का कंठा सदा शोभा देता रहता है। वैवाहिक अथवा दूसरे उत्सवों में आप हीरे, माणक, मोती के दूसरे कंठे भी पहनते रहते है। इसी प्रकार श्रीमती सेठानीजी साहब, श्रीमान् भैया साहब, वगैरह भी बहु मूल्य आभूषणों को व्यवहार में लाते रहते है। सेठ साहब के पुण्य में कुछ ऐसा अतिशय है कि इस प्रकार ऐश्वर्य का पूर्ण उपभोग करते रहने पर भी बहुत कम नुकसान का मौका आया है। और जब कभी कोई चीज खोई भी गई है तो वह विना प्रयास ही वापिस मिल गई है। इस संबंध में कुछ उदाहरण नीचे दिये जाते हैं:—

एक समय आप सकुटुम्ब जाति भोज में सम्मिलित होने को चन्द्रावलगंज गये। चन्द्रावलगंज से फतियाबाद स्टेशन कुल ३--४ फर्लांग है इससे रात्रि को लगभग ६-७ बजे टहलते हुए श्रीमती सेठानीजी साहब ५-७ दूसरी स्त्रियों के साथ स्टेशन पर आरहीं थीं। रास्ते में चोरों ने आक्रमण किया। सेठ साहब के सातिशय पुण्योदय से चोरों ने सेठानीजी साहिब के मोतियों के जेवर को रात्रिमें चांदी का जेवर समझ आपको सर्वथा निरापद निकल जाने दिया, दूसरी स्त्रियां लूट ली गईं।

श्रीमती तारामतीबाई के मुकलावे पर एक बार सेठ साहब का एक लाख का मोती का कंठा चोरी गया, कई दिन बाद याद आया। सेठ साहब फौरन ताड गये उनके स्वभाव में जल्दी बहुत है वैसे तो जल्दी हानि कर मानी है परंतु यह जल्दी काम कर गई सेठजी फौरन ढोलनियों के घर पहुंच गये और आवश्यक कारवाही करने पर सारा माल ज्यों का त्यों मिल गया। इसी प्रकार संवत् १९८७ में सेठ साहब का पन्नेका डेढलाख का कंठा तुकोगंज सड़क पर गिर गया। उसके लिये १०००० के इनाम का इश्तिहार भी निकाला गया किंतु कंठा नहीं मिला। लगभग छह महिने बाद बनारस का एक जौहरी उस कंठे की कुछ मणियां लेकर सेठ साहब के पास बेचने को आया। सेठ साहब तुरन्त पहचान गये और सारा माल घर बैठे बिना प्रयास पकडा गया।

इसी प्रकार एक बार हुकमचंद मील में पंद्रह सोलह हजार के नोट रोकड टूट कर चोरी हुए थे, करीब एक महिने पीछे चोर खुद आकर पूरे नोट ज्यों के त्यों सेठ साहब को दे गया। बड़वानी जाते समय आपकी हीरे की अंगूठी दस हजार रुपये की खुरमपुर डाक बंगले

के कम्पाउण्ड में गिर पड़ी । आप बडवानी चले गये वहां जाकर याद आई मोटर भेजी तो अंगूठी चमकती हुई पड़ी मिल गई ।

सेठ साहब को उनके बुंदेलखण्ड, बागीदौरा और दूसरी यात्राओं में कई वक्त चोर डाकूओं द्वारा आक्रमण होने की शंका संभावना का मौका आया किन्तु सेठ साहब की निर्भिकता, विशाल काया शरीर, और बुलंद आवाज देखकर किसी को पास में फटकने की हिम्मत न हो सकी । यह सब सातिशय पुण्य के प्रभाव है नहीं तो भाग्यवान को ठगने वाले बहुत फिरते है ।

सेठ साहब का कौटुंबिक प्रेम

यह बात ऊपर कोटुंबिक अधिकार मे बताई गई है कि सेठजी के काका के बेटे दो भाई कल्याणमलजी और कस्तुरचंदजी थे तीनों का कारबार अलग होकर भी तीनों में बड़ा प्रेम था। सेठ कल्याणमलजी असमयमें स्वर्गवासी हो जाने से उस घर को अपने समान बना रहने के उद्देश से अपने सुयोग्य पुत्र हीरालालजी को उस तरफ देकर बड़ाभारी भ्रातृ प्रेम बताया इसी तरह सेठ कस्तूरचन्दजी व उनकी धर्म पत्नि भी असमय में ही स्वर्गवासी हो जाने से उनके ट्रस्ट पर ध्यान रखते आपने देवकुमारजी को मारवाड से लाकर इस घर को भी बराबरी का बना रखा है और दोनों घरों का अपने घर से भी ज्यादा पैसे पैसे का फिकर रखते हैं—इसी तरह ओर भी नजीकी रिश्तेदार वा जाति के कोई लोगों ने आपको ट्रस्टी बनाकर अपने घरकी सुव्यवस्था करने व धर्मादे वगैरह का उपयोग बराबर चलाते रहने को आपके सुपुर्द किया है उन सब की आप घरसे ज्यादा फिकर रखते है और उसके उद्देश माफिक बराबर उपयोग होने का प्रबंध रखते है दाम्पत्य

प्रेम भी सेठ साहब का अकाट्य है श्रीमती सौभाग्यवती सेठानीजी की बीमारी के मौकों पर आपने हजार हजार रुपये रोज के डाक्टर वैद्यों को बुलाने में आना कानी नहीं की लाखों रुपया उनकी बीमारी के मौक्रों पर दान पुण्य में लगा दिया सम्वत १८७८ में जब सेठानीजी अस्वस्थ थीं। उस समय आपने संकल्प किया था कि अमुक तिथि तक सेठानीजी आरोग्य हो जावेंगी तो एक लाख रुपये की चांदी की प्रतिमा बनाऊंगा धर्मके आतिशय से उस तिथी के पहले ही सेठानीजी स्वस्थ हो गई आपने एक लाख रुपया दे दिया और प्रतिमाजी बनाने के लिये गुमाश्ते भेजे जाने लगे उस समय देश काल की परस्थिति चांदी की प्रतिमा के लिये अनुकूल नहीं होने से यह रुपया स्त्रीयों के उपकार में लगे तो अच्छा हो, ऐसी राय हुई सेठानीजी को यह राय जच गई और इस एक लाख से विधवा सहायता असहाय भोजनशाला खोलदी गई इसी प्रकार पिछले वर्ष पुनः सेठानीजी के कठिन आपरेशन से आरोग्य होने पर एक लाख रुपये से महाराजा तुकोजीराव अस्पताल के पास आंख अस्पताल बनवाया गया इसी तरह कुटुम्ब में जरा भी कोई को रोग हुआ कि खर्च की परवाह न कर सेठ साहब रोग शत्रु को शीघ्र मिटाने का सतत प्रयत्न करने में नही चूकते इसी तरह आपका जाति प्रेम भी अवर्णीय है आज जाति प्रेम के कारण सेकडों जैनी और वैश्नव महाजन आपकी मीलों व संस्थाओं द्वारा आजीविका से लग रहे हैं।

सेठ साहब और व्यायाम

बचपन से ही आपको व्यायाम का अभ्यास है इंदोर बंबई वगैरह में ८-८-१०-१० मील तक आप तेज चाल से नित्य वायू सेवन के लिये जाते रहे आज साठ वर्ष की अवस्था में भी १००-१५० डंड

बैठक मुद्गर वगैरह द्वारा रोज व्यायाम करते हैं पाव भर तेल से नित्य आपकी मालिश होती रहती है इन्ही कारणों से आज भी आपका स्वास्थ नवयुवकों से अच्छा है आपके शरीर पर तेज है दिव्यता है व्यायाम के फल स्वरूप आपका स्वास्थ अच्छा रहता है रोग को व्यायाम के आगे शरीर में स्थान नहीं मिलता है इसी से सेठजी को रोग बहुत ही कम सताते है पच्चीस तीस वर्षों में दो चार वार ही साधारण बुखार वगैरह कान के दर्द के सिवाय कोई बीमारी देखने सुनने में नहीं आई थोडी बहुत बीमारी की तो सेठजी पर्वाह ही नहीं करते।

सेठजी का भोगोपभोग

बहुत से भाग्यवानों को देखा है कि धन होते उसका भोग नहीं कर सक्के माशा तोलों से तोलकर खाते भी अजीर्ण हो जाता है हमारे सेठजी उनमें नहीं है आपको अच्छे पहरने अच्छे खाने बढिया से बढिया मोटर बग्गीयों पर चढ़ने का शोख है भोगोपभोग की बढिया सामग्री संग्रह करना और उनका उपभोग करना बढिया से बढिया चांवल, मंहगे से महगा साग, फल, मिष्ठान्न, आदि का आप सेवन करते हैं दूसरे तिसरे दिन पांच मित्र मंडली को साथ ले बगीचों वगैरह में रसोई बनती है वहीं जीमते है सादगी मिजाज में इतनी है कि गरीब से गरीब जाति भाई के जीमने चले जाते है और पातल पर ही बैठ कर सादगी से जीम लेते हैं जाति बिरादरी के कामों में सबसे पहले पहुंच कर उसकी शोभा बना देते हैं वैसे आप नित्य चांदी के पाट चांदी सोने के थालों में भोजन करते है कई वार बढ़िया रसोइयों द्वारा राजसी भोजन बनवाते है सारांश यह है कि धन कमा कर जैसा उसका भोगोपभोग करना चाहिये वैसा ही सेठजी करते है इसी से लोग कहते हैं कि सेठजी को

धर्म के प्रसाद से सातों सुख की प्राप्ति है। आपके यहां १ हाथी, २९ घोड़े, १५ बग्गी, २०-२५ बढ़िया मोटरें, पहरे, चौकी, हल्कारे हुजूर व सब राजसी ठाठ मौजूद होते हुए आप अपने तांई पब्लिक और समाज का सेवक मानते हैं और सेवा धर्म से ही आपने इतनी ख्याति प्राप्त की है। आपका हाथी, सामियाना, बग्गी, घोड़े लोगों को ब्याह शादी में जरासे कहने पर मिल जाते है यहां तक कि सेठजी के यहां से हीरे मोती के कंठे भी योग्यता माफिक लोगों को ब्याह शादी के लिये मांगे मिल जाते हैं। इतना वैभव होते हुए भी कोई व्यसन आपके पास तक नहीं फटकने पाते। सिर्फ मन बहलाने के लिये पांच इष्टमित्रों के साथ ताश के खेल द्वारा मनोबिनोद कर लेते हैं इसी तरह सेठजी को प्रवास में जाते रहने का भी बड़ा उत्साह है। कैसी ही सरदी गर्मी क्यों न हो आप जाने आने में जरा संकोच नहीं करते हमेशा फर्स्ट क्लास में सफर करते हैं ५-७ नौकर व प्राइवेट सेक्रेटरी वगैरह आपके साथ रहते है। हजारों मील मोटरों की सफर करते रहते है आपके व्यक्तित्व व पुण्य के आगे आपको कोई असुविधा नहीं रहती आगे से आगे सब व्यवस्था मिल जाती है यह सब पूर्वोपार्जित पुन्याई का ही फल है।

सेठजी को बिल्डिंग्ज् बनाने का शौख

आज लगभग ३०-३२ वर्षों से सेठजी के यहां इमारत बनाने का काम चल रहा है ऐसा दिन नहीं हुआ कि जिसमें १००-५० कारीगर, मजूर किसी न किसी रूप में आपके यहां काम न करते हों। आपकी भव्य इमारतें जैसे शीश महल, रंग महल, मोती महल, इन्द्रभवन, जंवरीबाग, दितवारिया मंदिर आदि लाखों रुपये की लागत की इमारतें इंदौर में मोजूद हैं ऐसे ही इन्द्रभवन बगीचा, कंचनबाग, सर हुकमचंद

सीड फार्म आदि बगीचे तथा हीरामहल, राजमहल, बंबई, कलकत्ते और उज्जैन में बड़ी बड़ी बिल्डिंगज् आपके कीर्ति रूपी ध्वजा को फहरा रहीं है। आप बिना इंजीनीयर के स्वयं ही डिजाइन बताते हैं, पैसे पैसे के खर्च पर ध्यान रखते है बने बाद भी आपको पसंद नहीं आवे तो कई बार बना बनाया काम गिरवा देते हैं पैसे की परवा नहीं करते काम पसंद माफक होना चाहियें। आपकी बिल्डिंग्ज् विशाल व भव्य होते हुए भी विशेष मजबूत बनती है सैंकड़ो आदमी आपकी इमारतों को देखने नित्य आते रहते है आपकी तरफ से कोई मनाई नहीं है जैसी बिल्डिंग्ज् बनी है वैसी ही उनकी सजाई, फरनीचर वगैरह की भी दर्शनीय व्यवस्था रक्खी गई हैं।

सेठ साहब का न्याय व आलोचना

सेठ साहब का न्याय निर्णय बहुत ही अद्वितीय है। झूठी शिकायत करने वालें को तो सेठ साहब के न्याय के आगे नीचा देखना पड़ता ही है। सेठजी फौरन झूंठे को ताड लेते हैं और उसके मूंह से उसकी भूल स्वीकार कराके ही पीछा छोडते हैं, नौकरों पर शिक्षा रूप से दंड जुर्माना करते है और जुर्माने के पैसे नौकरों में ही बांट देते है। कई बार देखा गया हैं कि सेठजी को खुद की भूल मालूम पडने पर आप फौरन पश्चाताप करते है और साधारण व्यक्ति के सामने भी अपनी भूल निसंकोच कह डालते हैं। आपको तत्कालिक क्रोध एक दम उमडता है परन्तु दूसरे क्षण ही उसे भूल जाते हैं और स्वयं सामनेवालों को ठंडा कर लेते हैं कैसाही अपराध करके उनके सामने सच्ची बात कह देने पर क्षमा कर देते हैं। गरीब अमीर सब की सुनते है और यथावत जवाब देते हैं।
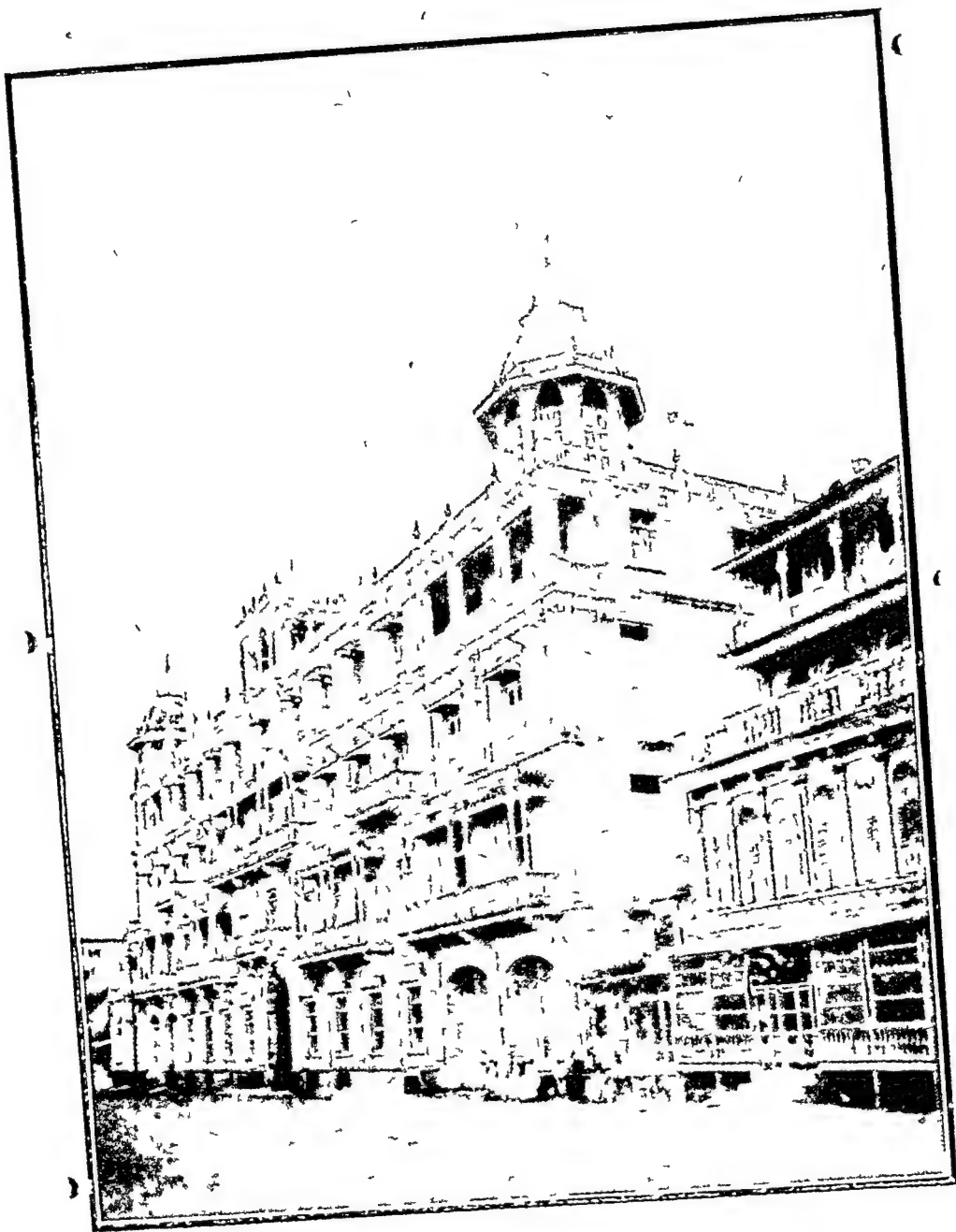
सेठजी का रंग महल जो इतवारे बजारमें हैं.

सेठ साहब को स्वाभाविक विश्वास

सैंकडो आदमी सेठ साहब से धन मांगने आते रहते हैं व कई बार हजार पांच सौ रुपये दिये हैं देते हैं परन्तु जब तक उन्हें विश्वास रहता है कि रकम को जोखम नहीं या दिया हुआ रुपया दुरुपयोग में न लगेगा तो ही देते हैं वरना कह कर भी ऐन मौके पर या तो जमानत मांग लेते है या इनकार कर देते हैं इसीसे आपकी रकम बहुत कम डूबने का मौका आया है। बिश्वास भी सेठ साहब करने में एक ही हैं जिसका विश्वास उनके चित पर अंकित हो जाता है फिर लाखों रुपये के नफे नुकसान की परवाह न करके भी विश्वास पर दृढ रहते हैं परन्तु जरा सी भी बेईमानी मालूम पड जाने पर फिर एक मिनट व एक पैसे का विश्वास नही करते। पचास बरस के घरोपे को एक क्षण में मिटा देते है क्योंकि सेठजी के स्वभाव में स्वाभाविक जल्दी है आज का काम कल पर रखना उन्हें पसंद नहीं है।

सेठजी और दूध की डेहरी

सेठजी को दूध दही के लिये अच्छे अच्छे चौपाये रख कर उनकी अच्छी व्यवस्था रखने से प्रसन्नता रहती है। आपने सिंध, पंजाब और हरियाने की कोई १००-१२५ अच्छी अच्छी गाय भैंसों का संग्रह किया हुआ है। डेहरी के प्रबन्धपर आपकी खास निगाह है, उनके खान पान की सुंदर व्यवस्था, अच्छी से अच्छी घास कडबी की सुव्यवस्था देखकर प्राचीन कालकी पशुपालन की बात याद आये बिना नहीं रह सक्ती। स्वास्थ के लिये जिस अच्छे घी दूध की मनुष्य को आवश्यक्ता है यह सब साधन सेठजी ने व्यवस्थित रूप में कर रखे हैं।

इस प्रकार एक पुन्यवान धर्मात्मा व्यापारी समाज के प्रमुख में जितनी बातें होना चाहिये सबही सेठजी में विद्यमान होने से आज सेठजीने इस संसार में महा पुरुषों में अग्र होकर जो कुछ कार्य किये हैं उन्हीं बातों का संक्षिप्तसा परिचय इस जीवनी में बताने का प्रयत्न किया गया है क्यों कि संसार असार है। पुण्यवान पुरुषों के चरित्रही हमारे लिये स्मारक रह जाते हैं।

अन्त में हम श्री जिनेन्द्र देव से यही प्रार्थना करते है कि सेठजी सरीखे परोपकारी पुण्यवान दीर्घायु हों और इससे भी ज्यादा सुख-यश भोगते हुए व परोपकार करते हुए पुनः हमें दूसरी हीरक जयन्ति मनाने का अवसर प्राप्त हो।

विगत सन्मान पत्र जो सेठजी को समय समय पर बड़े बड़े समारंभों में प्राप्त हुए

(स्थानाभाव से उनकी पूरी नकल नहीं दी जा सकी)

नं.	तारीख	किसकी तरफ से
१	७ दिसंबर १९३०	पारमार्थिक संस्था जंवरीबाग इंदौर
२	३० जुलाई १९१८	इंदोर के ग्यारा पंच, व्यापारी वर्ग व हुकमचंद मिल स्टाफ
३		पारमार्थिक जैन पुस्तकालय जैपुर
४	ता.६ जून १९१८	बंबई दिगम्बर जैन समाज हीराबाग
५	२३ जून १९१८	ग्रेन मरचेन्ट एसोसीएशन और सीड मर्चेन्ट बंबई के तरफ से
६	३० जून १९१८	मारवाडी चेम्बर ऑफ कामर्स बंबई
७	३ फरवरी १९२३	दिल्ली जैन हाई स्कूल पहाडी
८	चेत शु. १३ २४४९	जैन क्लब इंदौर
९	१८ जुलाई १९१८	मध्य भारत हिन्दी साहित्य समिति इंदौर
१०	मगसर बुद ११ २४५७	दि. जैन खंडेलवाल मंडल और व्यायामशाला
११	अषाढ शुद १ २४५१	पंडित गजानन करमलकर शास्त्री
१२	कार्तिक शुद १० १९७०	भा. दि. जैन महासभा मथुरा
१३	चेत शुद १२ १९८०	पारमार्थिक संस्थाएं जंवरीबाग इंदौर
१४	५ जून १९११	श्री नगर–हितकारिणी सभा इंदौर

१५	१४ मार्च १९२२	जैन समाज बडवानी
१६	जनवरी सन १९२३	श्री गणेश आश्रम इंदौर
१७	मार्च सन १९२४	दुरगाशंकर वाजपेई फतहपुर
१८	अषाढ वुद ४ १९८६	मारवाडी हिन्दी विद्यालय हेद्राबाद
१९	२९-१२-१९२१	सकल पंच दिगम्बर जैन लशकरी गोट इंदौर
२०	आषाढ शुद १ २४५८	संस्कृत संजीवनी सभा जंवरीबाग इंदौर
२१		स्याद्वाद महाविद्यालय बनारस
२२	अषाढ शुद १ २४४१	श्री महाविद्यालय जंवरीबाग इंदौर
२३	चेत शुद १२ २४५९	श्री दिगम्बर जैन खंडेलवाल स्वयं सेवक मंडल इंदौर
२४		हिन्दी साहित्य रत्न मंदिर इंदौर
२५	अषाढ शुद १ १३-७-१९१५	श्री दिगम्बर जैन मालवा प्रान्तिक सभा
२६	१७-६-२९	श्री श्रवण बेलगोला दिगम्बर जैन समाज चांदी के पत्र पर
२७	१९३२	दि. जैन मालवा प्रान्तिक सभा की ओर से तीर्थभक्त शिरोमणि का

सेठजी जिन संस्थाओं के सभापति रह चुके और हैं उनके नाम

पालीताना में सभापति—बंबई दिगम्बर जैन प्रान्तिक सभा के अधिवेशन पर स्वयंसेवकों ने बग्गी के घोडे हटा कर स्वयं खींची।

अ. भा. दि. जैन महासभा के अधिवेशन पर श्री सम्मेद शिखरजी पर, मालवा प्रान्तिक सभा के स्थाई सभापति, इंदौर की नगर हित कारिणी के सभापति, अहिल्या माता गोशाला पिंजरापोल कमेटी के प्रेसीटेन्ट, ग्यारह पंच कमेटी के प्रमुख पंच, श्रवण बेलगोला में श्री. भा. दि. जैन तीर्थ कमेटी के अधिवेशन के सभापति.

महाराजा तुकोजीराव क्लाथ मार्केट कमेटी के प्रेसीडेन्ट

मील एसोसीएशन कमेटी के प्रेसीडेन्ट

काटन अड्डा कमेटी के सभापति

श्री मध्य भारत हिन्दी साहित्य समिति के अष्टम अधिवेशन के स्वागत कारिणी के सभापति

श्री मध्य भारत हिन्दी साहित्य समिति के स्थाई सभापति
तीर्थ क्षेत्र कमेटी के कई वर्ष से सभापति है

सम्मेद शिखरजी पर सभापति तीर्थ क्षेत्र कमेटी के मुनि संघ के वख्त अधिवेशन में

कई बार मालवा प्रांतिक सभा के अधिवेशनों पर सभापति जैसे बडवानी, बडनगर

श्री दानवीर राय बहादुर राज्य भूषण रावराजा

सर सेठ सरूपचंदजी हुकमचंदजी दि. जैन पारमार्थिक संस्थाएं—इन्दौर

का

संक्षिप्त परिचय और वी. सं. २४५९ की संक्षिप्त रिपोर्ट

श्रीमान् दा. वी. रा. ब. रा. भू. ती. शि. रावराजा सर सेठ हुकमचंदजी साहिब द्वारा संस्थापित दिगम्बर जैन मंदिरजी, जँवरीबाग, विश्रान्ति भवन, महाविद्यालय, बोर्डिंग हाउस, सौ. दानशीला कंचनबाई श्राविकाश्रम, प्रिंस यशवंतराव आयुर्वेदीय जैन औषधालय, दि. जैन असहाय विधवा सहायता फंड व भोजनशाला, सौ. कंचनबाई प्रसूतिगृह व शिशु स्वास्थ्य रक्षा संस्था ये आठ संस्थायें हैं। सेठजी साहिब ने इनका कार्य चलाने के लिए अभी तक कुल ११२८१२१) रु. प्रदान किये है।

संस्थाओं की स्थावर व जंगम कुल सम्पत्ति का सेठजी साहिब ने दान पत्र लिख कर होलकर गवर्नमेन्ट ट्रस्ट डीड एक्ट के अनुसार उसकी रजिस्ट्री करादी है और कुल सम्पति सात सदस्यों की एक ट्रस्ट कमेटी के सुपुर्द कर दी है। संस्थाओं के प्रबन्ध के लिये इक्कीस सभासदों की एक प्रबन्ध कारिणी कमेटी है। दोनों कमेटियों की बैठकें नियम और आवश्यकता के अनुसार समय २ पर होती रहती हैं। इन्हीं के द्वारा संस्थाओं के वार्षिक खर्च के बजट, नियत आडीटरों द्वारा
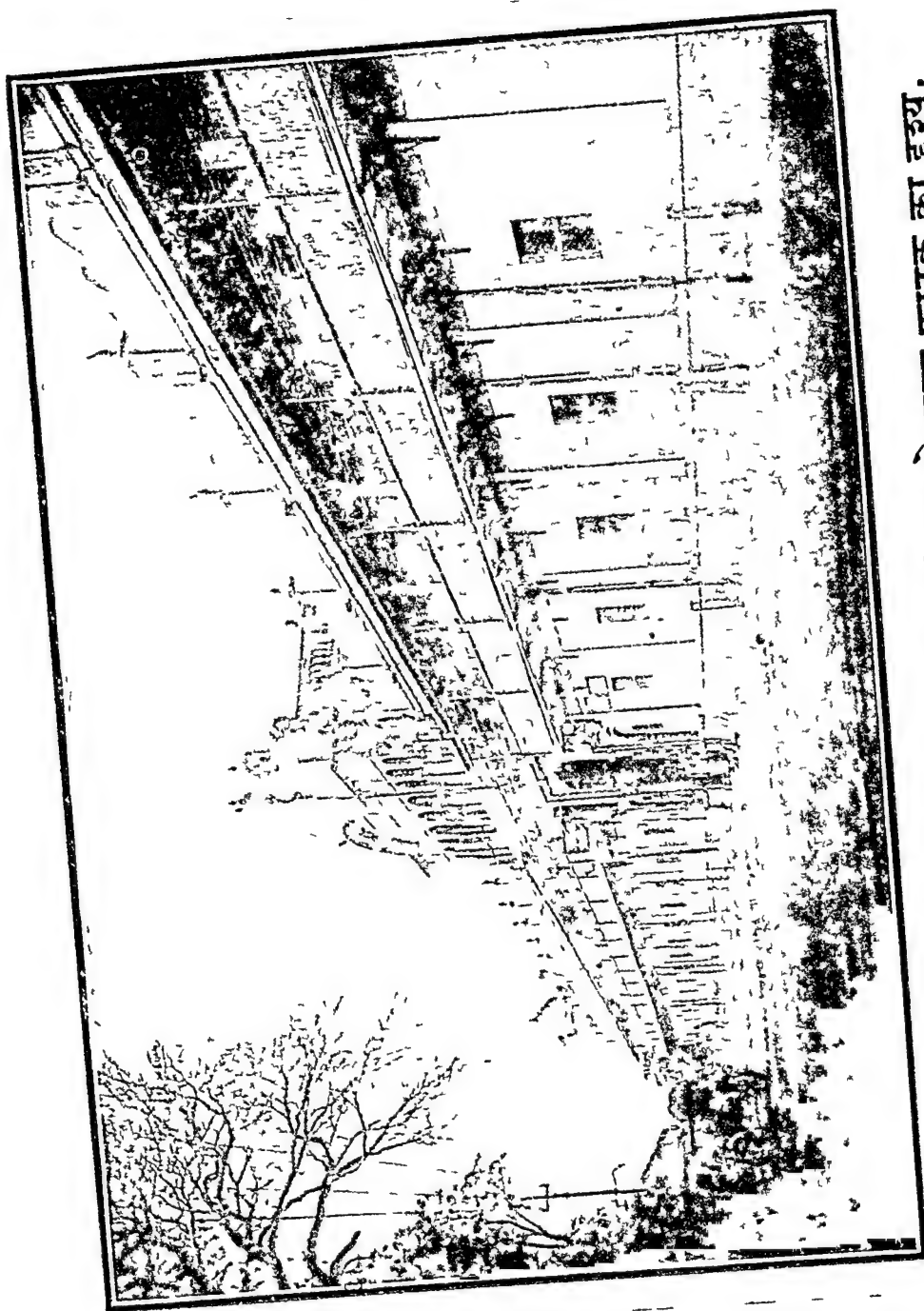
पारमा० संस्थाओं का मुख्य स्थान जंवरीवाग के सदर फाटक का दृश्य.

आडिट किया हुआ वार्षिक हिसाब, संस्थाओं की वार्षिक रिपोर्ट एवं प्रबन्ध सम्बन्धी आवश्यकीय प्रस्ताव पास किये जाते हैं। वार्षिक रिपोर्ट मय आमद खर्च के आंकडे के प्रति वर्ष प्रकाशित होती है।

प्रत्येक संस्था का सम्वत २४५९ वि. १९९० का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है।

१. दिगम्बर जैन मंदिरजी जंवरीबाग

इस भव्य इमारत का निर्माण और उसकी प्रतिष्ठा सं. १९५९ में हुई थी जिसमें दो लाख रुपया खर्च हुआ था। इस जिनालय से संस्थाओं के कार्य कर्ताओं, छात्रों, विश्रान्ति भवन के यात्रियों और आसपास के जैनी भाईयों को धर्म साधन का अपूर्व लाभ मिलता है। पूजन प्रक्षाल, शास्त्र सभा नित्य प्रति होते है तथा समय समय पर मंडल विधानादि धर्म के कार्य होते रहते है। सरस्वती भंडार में स्वाध्याय के लिये ४७६ जैन शास्त्रों का संग्रह है।

इसका ध्रौव्य फंड ९१७५) रु. का है, इस वर्ष खर्च के लिये २४०५।-)। मंजूर हुए, १०६३-) की आमदनी हुई और २३२०-)। खर्च हुए। आमदनी से अधिक खर्च की पूर्ति पुरानी बचत से की गई। इस वर्ष रंगाई व भाव सुधराई में १९८०।-)। लगे वे भी खर्च में शामिल हैं।

२. जंवरीबाग विश्रांति भवन

इन्दौर जैसे प्रसिद्ध और व्यापारिक नगर में बाहर से आने वाले यात्रियों के ठहरने की सुविधा के लिये सं. १९५९ में इसकी स्थापना

हुई। सं. १९७१ में इसकी पक्की इमारत बनवाई गई जिसका उद्घाटन श्रीमंत महाराजाधिराज रावाई सर तुकोजीराव होलकर भूतपूर्व इन्दौर नरेश के करकमलोंद्वारा ता. ३-४-१९१४ को हुआ। सं. १९७८ में इसकी दूसरी मंजिल तैयार की गई। वर्तमान में इसमें ६० कमरे, ४ दीवानखाने, ४० अलमारी, एक बंगला, रसोईघर, स्नानघर आदि पाच सौ यात्रियों के ठहरने योग्य स्थान बना हुआ है। साधारणतः यहां आठ दिन तक यात्री ठहर सकते है विशेष कारण होने पर ठहरने की अवधि बढाई भी जाती है। कमरा, बिस्तर, बर्तन, फर्नीचर आदि आवश्यकीय वस्तुएं बिना किसी चार्ज के यात्रियों को दी जाती है। यहां मोदी, हलवाई, चाय पान की दुकानें तथा कच्ची रसोई का भोजनालय भी है जहा उचित मूल्य में शुद्ध व उत्तम खाद्य पदार्थ मिल सकते है। प्रबन्ध के लिये एक सुपरिटेंडेंट व कर्मचारी नियुक्त हैं। गेट पर रात्रि दिवस पहरा रहता है। इस वर्ष ४००९३ यात्रियों ने यहां विश्राम लिया।

इसका ध्रौव्य फंड १७९१० रु. का है। ध्रौव्य फंड की व्याज की आमदनी के सिवाय दी हुकमचंद मील से बाहर जाने वाले कपड़े पर चार आने सैकडे की लाग के करीब चार हजार रुपये प्रतिवर्ष आते है। इस वर्ष के लिये ४२४६) रु. का बजट मंजूर हुआ ५१५३।-। रु. की आमदनी हुई और ४१५५॥।-। रु. खर्च हुए।

महाविद्यालय

इसकी स्थापना आसौज सुदी १ सं. १९७० को हुई तब से इसका कार्य उत्तम रीति से चल रहा है। इसमें जैन सिद्धांत, न्याय व्याकरण, साहित्य आदि विषयों की ऊंचे दर्जे की शिक्षा दी जाती

सर सेठ स. हु. दि. जैन महाविद्यालय जँवरीबाग.
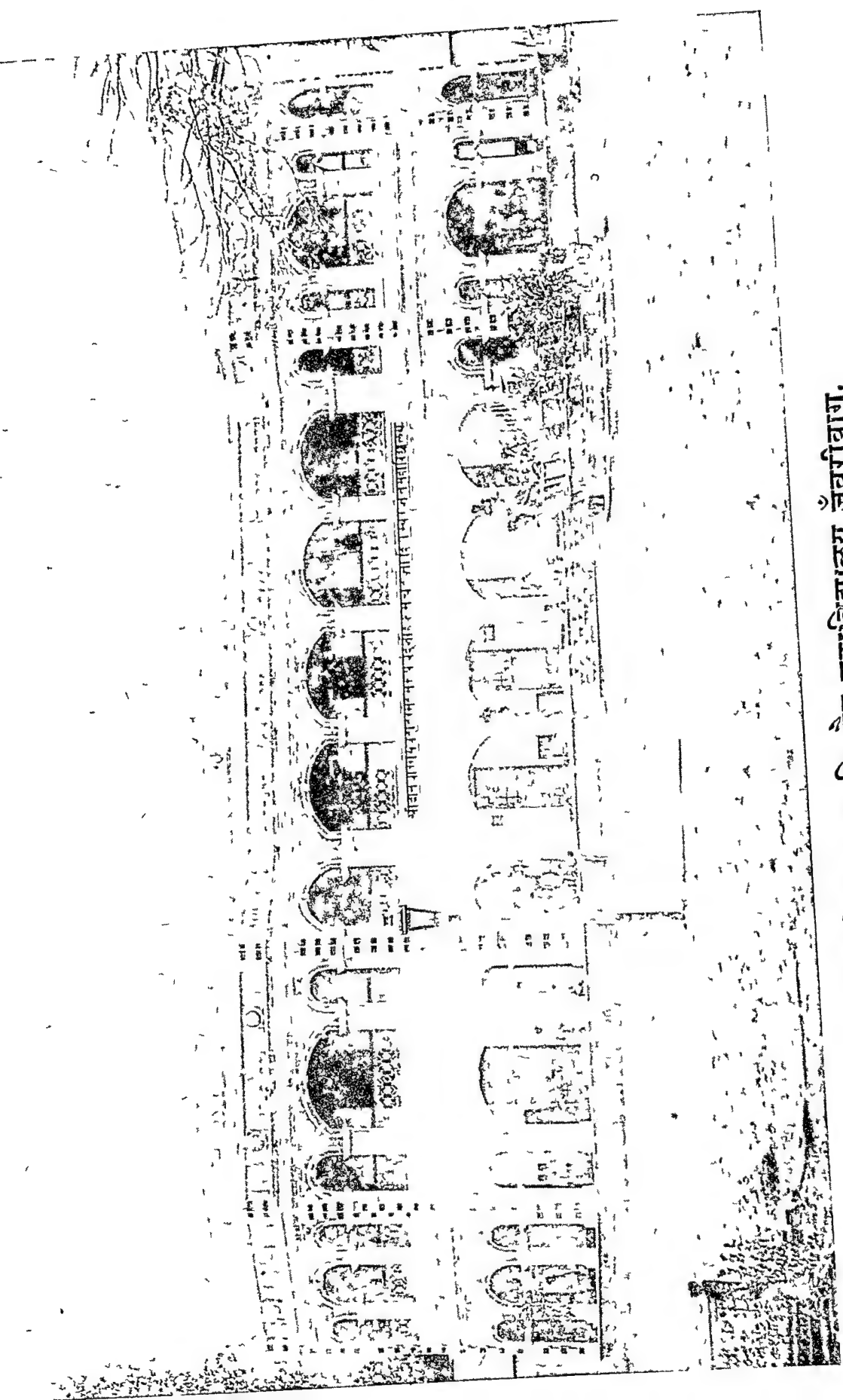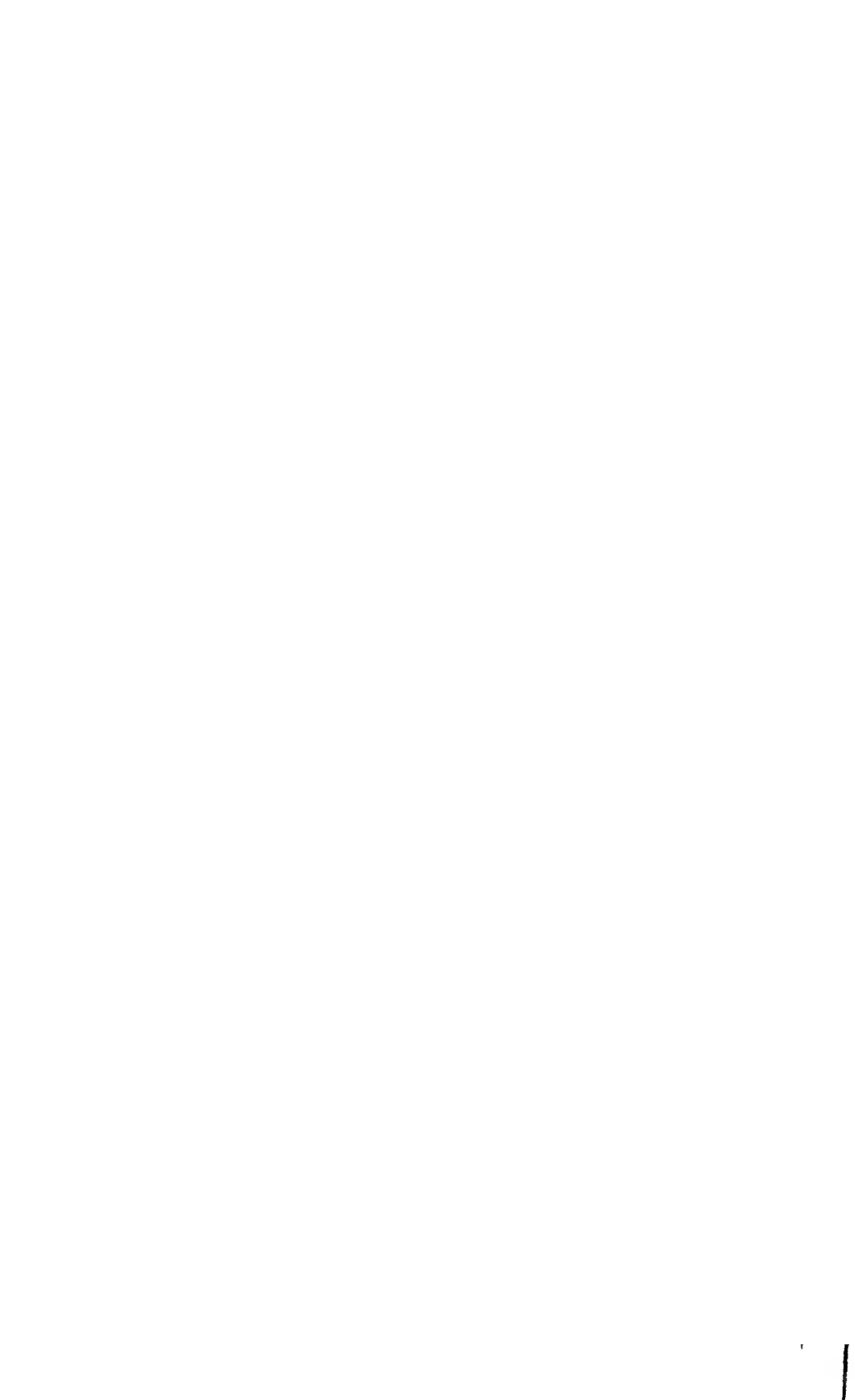
है। अंग्रेजी, टेलरिंग, वैद्यक और घरु इन्डस्ट्रीज की भी शिक्षा देने का प्रबन्ध है। अध्यापन कराने के लिये नौ योग्य अध्यापक नियुक्त हैं।

वार्षिक परीक्षा माणिकचंद्र दि. जैन परीक्षालय बम्बई से, न्याय की परीक्षायें गवर्नमेंट संस्कृत ऐसोसिएशन कलकत्ता से और व्याकरण की परीक्षायें कीन्स कॉलेज बनारस से दिलाई जाती हैं। अच्छे नंबरों से पास होनेवाले छात्रों को पारितोषिक दिया जाता है। ये महाविद्यालय होल्कर गवर्नमेन्ट के शिक्षा विभाग से रिकग्नाईज्ड है।

इंग्लिश विभाग के छात्रों को धर्मशास्त्र की शिक्षा यहीं से दी जाती है। अभी तक बहुतसे छात्र गोमट्टसार, पंचाध्यायी आदि जैन सिद्धान्त के ऊंचे २ ग्रन्थों का अध्ययन कर धर्मशास्त्र में अच्छी योग्यता प्राप्त कर चुके है। छात्रों के ज्ञान वर्द्धनार्थ संस्कृत, हिन्दी और इंग्लिश के दो पुस्तकालय भी हैं जिनमें छात्रोपयोगी उत्तम २ पुस्तकों का संग्रह है। संस्कृत हिन्दी पुस्तकालय में १८५१ ग्रंथ हैं और समाचार पत्र आते है तथा इंग्लिश लाइब्रेरी में ६०७ पुस्तकें हैं और १० समाचार पत्र आते है।

महाविद्यालय के पठनक्रम के अनुसार शिक्षा लेनेवाले छात्रों की संख्या इस वर्ष ३८ रही तथा सिर्फ धर्मशास्त्र पढनेवाले इंग्लिश विभाग के ५१, कुल ८९ छात्र रहे।

इस वर्ष के खर्च के लिए ६५७१) रु. का बजट मंजूर हुआ और ६०४४।-।रु. खर्च हुए। महाविद्यालय, बोर्डिंग का ध्रौव्य फंड शामिल होने से बोर्डिंग के विवरण के साथ इसका ध्रौव्य फंड व आमद दिखलाई गई है।

बोर्डिंग हाउस

यह बोर्डिंग हाउस सं. १९६२ से स्थापित हुआ है। सं. १९७० में इसकी एक मंजिल नवीन पक्की इमारत बनी और सं. १९८२ में दूसरी मंजिल के २० कमरे तथा एक लाईब्रेरी भवन बना जिसकी ओपनिंग सेरेमनी ता. १६ जनवरी सन् १९२७ को श्रीमान आनरेबिल आर. सी. आर. ग्लान्सी साहब ऐजेन्ट टू दी गवर्नर जनरल इन सेन्ट्रल इन्डिया के कर कमलों द्वारा हुई। स्थान की कमी को देखकर सं. १९८४ में एम. ए. और एल. एल. बी. क्लास वालों के लिये १२ कमरे बनवाये गये। वर्तमान में यहां सौ छात्र आराम से निवास कर सकते है। यहां दो प्रकार के छात्र प्रविष्ट किये जाते हैं एक वे जो महाविद्यालय के कोर्स के अनुसार पढते हैं और दूसरे वे जो स्थानीय स्कूल, कॉलेज और मेडीकल स्कूल में शिक्षा लेते है। तथा महाविद्यालय में धर्मशास्त्र की शिक्षा लेते है। छात्रों की भाषण व लेखन शक्ति बढाने के लिए संस्कृत, हिन्दी और अंग्रेजी की सभायें होती है और हस्त लिखित पत्रिकायें निकाली जाती हैं। यहां से बहुतसे छात्र बी. ए., एम. ए, एल. एल. बी., एल. एम. पी. (मेडिकल) न्याय तीर्थ व शास्री कक्षाएं पास करके गवर्नमेन्ट, देशी राज्य और समाज में ऊंचे २ पदों पर कार्य कर रहे है। और बहुतसे छात्र अपने धरू कार्यों को योग्यता के साथ सम्पादन कर रहे है।

छात्रों के खानपान, रोशनी, फर्नीचर आदि की कुल व्यवस्था बोर्डिंग की तरफ से होती है। बोर्डिंग के प्रबन्ध के लिए एक सुयोग्य सुपरिन्टेंडेन्ट नियुक्त है।

छात्रों के रहन सहन, खान पान, आचरण, स्वास्थ्य आदि का पूरा ध्यान रक्खा जाता है। देशी व्यायाम, टेनिस, व्हालीबॉल, फुटबॉल,

श्री से० हु० बोडिंग
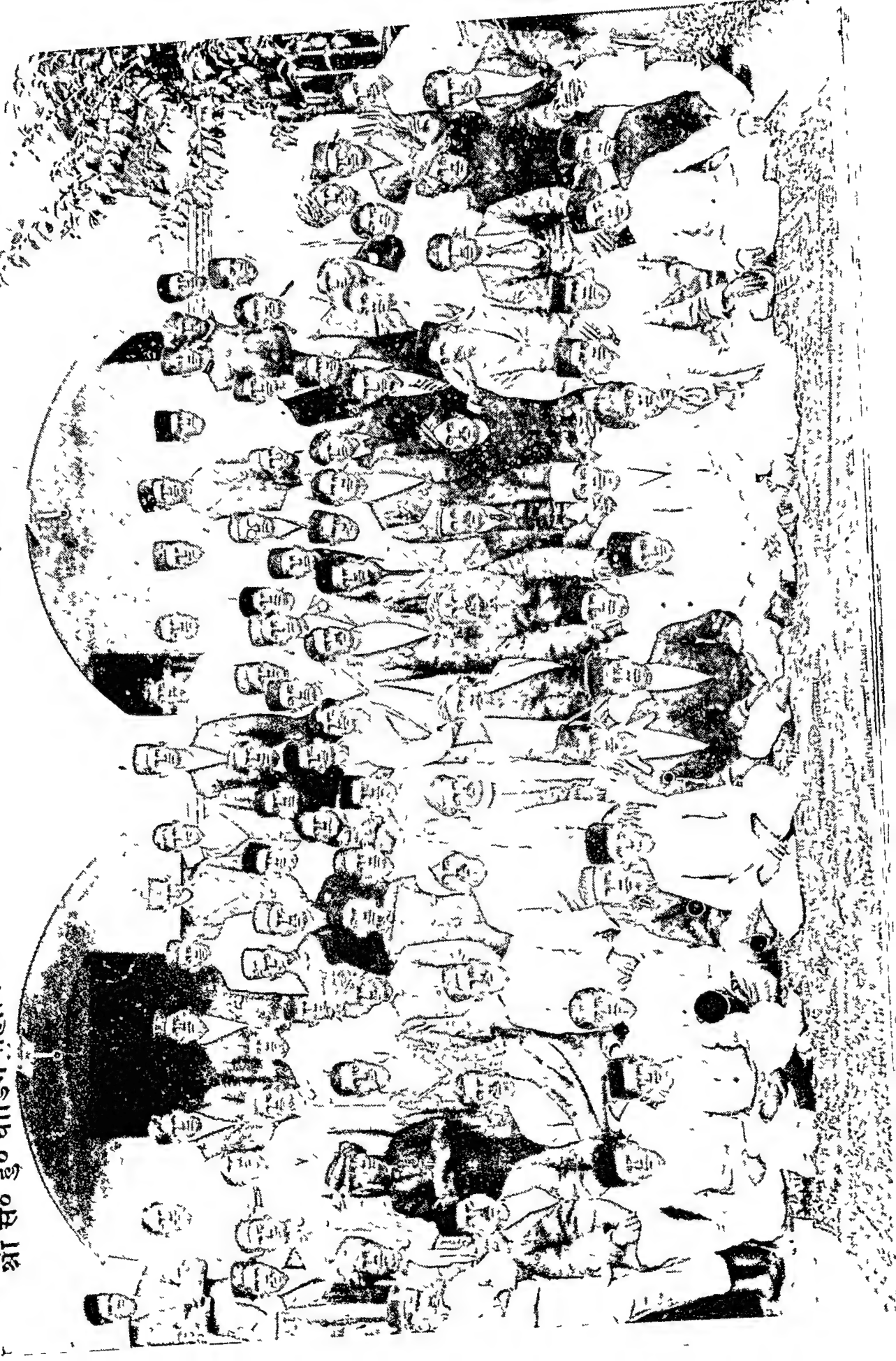
केरम आदि खेलों का भी प्रबन्ध है। रुग्णावस्था में छात्रों की संभाल के लिये एक सुयोग्य अनुभवी डाक्टर नियुक्त हैं। इस वर्ष बोर्डिंग में नीचे लिखे माफिक ९० छात्र रहे है। मेडिकल १, एम. ए. १, एल. एल. बी. ५, बी. ए. प्रीवियस ५, फाइनल ५, एफ ए. प्रीवियस ९, फाइनल ९, मॅट्रिक ७, प्री मॅट्रिक ६, आठवीं ५, शास्त्री तृ. खं. ४, द्वि. खं. ३, प्रथम खं. ४, विशारद द्वि. खं. ५, प्र. खं. ३, प्रवेशिका तृ. खंड ५, द्वि. खं. ६, तृ. खं. ३, बालबोध ४.

महाविद्यालय बोर्डिंग हाउस का ध्रौव्य फंड २५३६१०) रु. का है इस वर्ष १५०००) रु. की व्याज की आमदनी हुई बोर्डिंग के खर्च के लिये ८७७४) रु. का बजट मंजूर हुआ और ८५८३।-) रु. खर्च हुए।

दानशीला कंचनबाई श्राविकाश्रम.

यह आश्रम नरसिंह बाजार में सं. १९७१ से स्थापित है। यहां शिशु वर्ग से सातवीं कक्षा तक धर्म शास्त्र, हिन्दी, गणित, भूगोल, जैन-इतिहास आदि विषयों की शिक्षा दी जाती है। कसीदा काढना, गोटे का काम करना, तोरण बनाना, गॉजे, गुलूबंद बुनना, कमीज, कोट, जंफल, पोलका, दरी, निवाड बुनना आदि औद्योगिक कार्य भी सिखाये जाते हैं। छात्राओं के ज्ञान वर्द्धनार्थ एक पुस्तकालय भी है जिसमें स्त्रियोपयोगी ६६० पुस्तकें हैं और ४ समाचार पत्र आते हैं। भाषण शक्ति बढ़ाने के लिये प्रत्येक अष्टमी को व्याख्यान सभा होती है।

अध्यापन कार्य के लिए दो वयोवृद्ध अध्यापक और दो अध्यापिकायें नियुक्त है। वार्षिक परीक्षा मा. दि. जैन परीक्षालय बम्बई से दिलाई जाती है। उत्तीर्ण छात्राओं को पारितोषिक दिया जाता है।

बहुतसी छात्रायें यहां की पढाई पूर्ण कर कई स्थानों में अध्यापिका का कार्य योग्यतापूर्वक कर रही है।

छात्राओं के खान, पान, वस्त्र, पुस्तक आदि का कुल प्रबन्ध आश्रम की तरफ से ही होता है। देखरेख के लिए एक सुपरिन्टेन्डेन्ट बाई नियुक्त हैं। इस संस्था का संचालन सौ. दा. शी. सेठानीजी साहिबा बड़ी उत्सुकता से स्वयं करती है। इस वर्ष ३७ छात्राओं ने यहां अध्ययन किया।

इसका ध्रौव्य फंड ८६३८५) रु. का है इस वर्ष के लिए ४९८५) रु. का बजट मंजूर हुआ, ५१००) रु. की आमदनी हुई और ४४४३।-॥ रु. खर्च हुए।

प्रिन्स यशवंतराव आयुर्वेदीय जैन औषधालय

यह औषधालय सं. १९७१ से स्थापित है। प्रारम्भ में दीतवारा बाजार में इसका कार्य साधारण रूप से चलता था किन्तु सं. १९७५ में सेठजी साहब ने आयुर्वेद के प्रचार के लिए डेढ़ लाख रुपये दिये तब से इसकी विशेष उन्नति हुई व बियाबानी मुहल्ले में बड़ी इमारत बनवाई गई जिसकी ओपिनिंग सेरीमनी श्रीमंत राजराजेश्वर सवाई श्री तुकोजीराव होलकर भूतपूर्व इन्दौर नरेश के करकमलों द्वारा ता. ४-१-२२ को हुई इस अवसर पर सेठजी साहब ने औषधालय के लिए साठ हजार रुपये और भी प्रदान किये।

यहां बीमारों को सम्पूर्ण औषधियां फ्री दी जाती है स्थानीय तथा बाहर से आने वाले रोगियों के लिये दो वार्ड भी बने हुए है। दो सुयोग्य वैद्यों के अतिरिक्त सर्जरी के लिये एक योग्य डॉक्टर भी

नियुक्त हैं। सर्जेरी के सिवाय सभी औषधियां आयुर्वेदीय पद्धति से तैयार की हुई प्रयोग में लाई जाती हैं।

औषधि निर्माण के लिये यहां एक रसायनशाला भी है ऊंची से ऊंची रस मात्रायें, सम्पूर्ण प्रकार की काष्ठौषधियां, आसव, अरिष्ट, तैल, अवलेह आदि शास्त्रोक्त प्रक्रिया से तैयार होते हैं। संस्कारित पारद भी तैयार किया गया है।

औषधालय के कार्य में समय २ पर स्थानीय वैद्यों को आमंत्रित करके उनकी भी राय ली जाती है विशेषकर वैद्यराज पं. ख्यालीरामजी द्विवेदी की सहानुभूति प्रशंसनीय है। इस वर्ष ४०२७४ बीमारों ने यहां से दवा ली और १२६ बीमारों ने वार्डों में ठहर कर इलाज कराया।

इसका ध्रौव्य फंड १६२६८०) रु. का है, इस वर्ष के खर्चे के लिये १०८४५) रु. का बजट पास हुआ ९६००) रु. की ब्याज की आमदनी हुई संस्था से ८४७४।)॥ दिये बाकी औषधि बिक्री व वार्ड की आमदनी खर्च हुई।

दि० जैन असहाय विधवा सहायता फंड व भोजनशाला

इसकी स्थापना सं. १९७५ से हुई है। इस फंड से दि० जैन असहाय विधवाओं को पांच से सात रुपये तक की मासिक सहायता भेजी जाती है जिससे कि वे उदरपोषण की चिन्ताओं से रहित होकर धर्मध्यान में अपना समय व्यतीत करें। भोजनशाला से असहाय और अपाहिज जैनी भाइयों को वस्त्र व भोजन दिया जाता है तथा बेरोजगार जैनी भाइयों को एकमुश्त सहायता दी जाती है।

इस वर्ष यहां से ४४ विधवा बाइयों को मासिक सहायता भेजी गई, १८५ मनुष्यों ने भोजन किया, ७१॥≡)॥ वस्त्र व अपाहिज सहायता में खर्च हुए और २२६॥=) की एकमुश्त सहायता दी गई।

इसका ध्रौव्य फंड १०२४००) रु. का है। इस वर्ष के खर्चे के लिए ५८०३) रु. का बजट पास हुआ, ६०००) रु. की आमदनी हुई और ४२९५|||-)||| खर्च हुए।

दानशीला कंचनबाई प्रसूतिगृह व शिशु स्वास्थ्य रक्षा संस्था

सर्व साधारण के घरों पर प्रसव की उचित व्यवस्था न होने से स्त्रियों की मृत्यु संख्या अधिक देखकर इस संस्था की स्थापना संवत १९८१ में हुई थी। प्रसूताओं के लिए चौवीसों घंटे ये संस्था खुली रहती है और कठिन से कठिन प्रसव बड़ी सावधानी से कराये जाते हैं। यहां पर दो वार्ड बने हुए हैं जिनमें २० प्रसूताएं एक समय में रह सकती है। प्रसूताओं को पलंग, बिस्तर, औषधि फ्री दी जाती है गरीब प्रसूताओं को दूध व भोजन भी दिया जाता है।

बीमार औरतों और बच्चों के लिए एक डिस्पैन्सरी भी है जिसमें उन्हें फ्री औषधि दी जाती है। छोटे २ बच्चों के स्वास्थ्य की देख-भाल करने का भी यहां प्रबन्ध है उनकी माताओं को उन्हें स्वच्छ रखने की शिक्षा दी जाती है।

इस संस्था का भी संचालन श्रीमती सौ. दा. शी. सेठानीजी साहिबा स्वयं करती हैं। इसके कार्य में भूतपूर्व स्टेटसर्जन रा. ब.
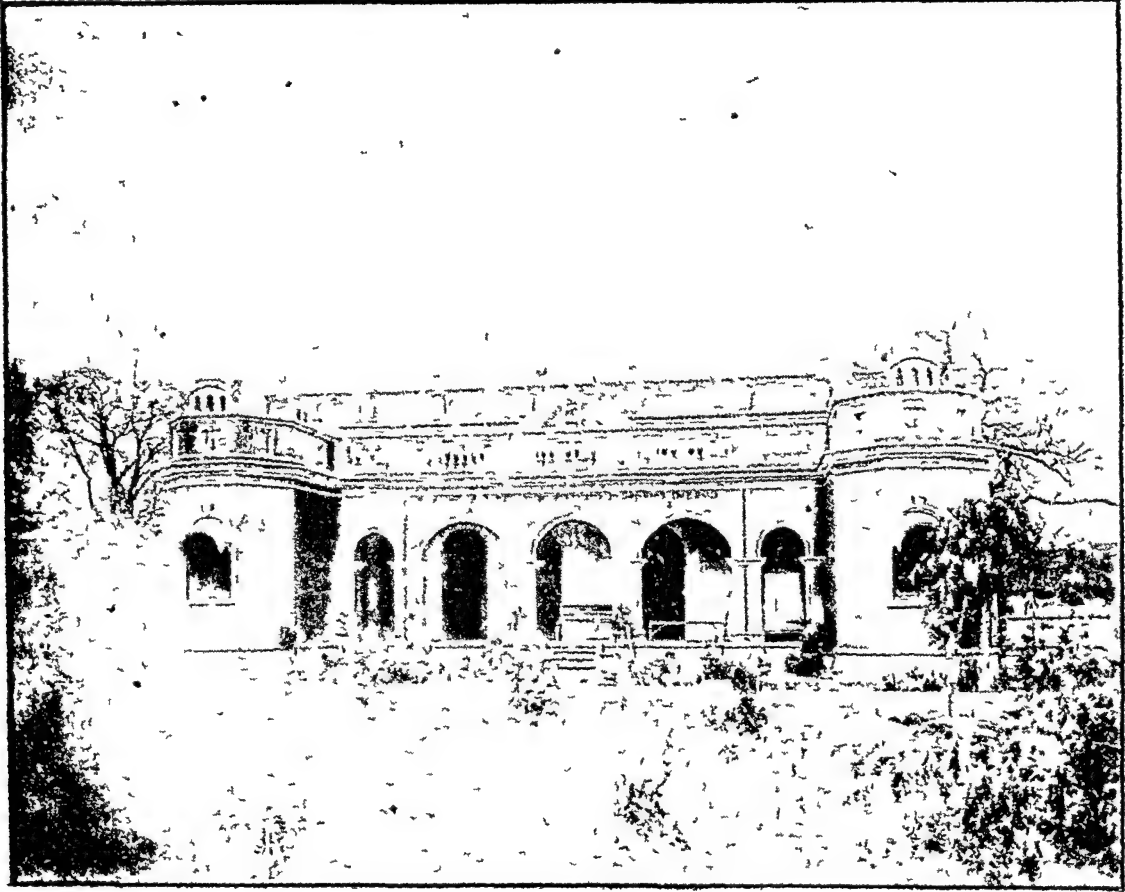
श्री० दानशील सौ० कंचनबाई प्रसूतिगृह व शिशु रक्षा संस्था.

मु. ब. डाक्टर सरजूप्रसादजी सा. तिवारी और लेडी डाक्टर मिस मोताबाई एफ. थानेवाला एल. एम. पी. की विशेष सहायता प्राप्त होती रहती है। यहां एक सर्टीफाईड लेडी डाक्टर, अनुभवी नर्सेज और मरहठी नियुक्त हैं।

इस वर्ष यहां स ६६९१ बीमारों ने दवा ली और २८३ प्रसव हुए।

इसका ध्रौव्य फंड ४२९३०) रु. का है। इस वर्ष के खर्च के लिये ५६६५) रु. का बजट मंजूर हुआ, २५७५) रु. की आमदनी हुई और ५२६४)॥ खर्च हुए। इस विभाग के घाटे की पूर्ति अन्य विभागों की बचत से की जाती है।

प्रबन्ध विभाग

सम्पूर्ण पारमार्थिक संस्थाओं के प्रबन्ध के लिए इस की स्थापना की गई है इसका ऑफिस जँवरीबाग में है मंत्री पारमार्थिक संस्थाओं की देख रेख में इस कार्यालय द्वारा सम्पूर्ण विभागों का प्रबन्ध किया जाता है। ट्रस्ट कमेटी व प्रबन्ध कारिणी कमेटी की बैठकें करना, हिसाब आडिट कराना, रिपोर्ट प्रकाशित करना, छात्र व छात्राओं को भर्ती व खारिज करना, परीक्षाओं का प्रबन्ध करना विधवाओं को सहायता देना आदि सम्पूर्ण कार्य यहीं से होते हैं। इस कार्यालय में एक मैनेजर व क्लर्क आदि नियुक्त हैं।

इसका ध्रौव्य फंड ४०९६०) रु. का है इस वर्ष के खर्च के लिये २२६४) का बजट पास हुआ, २४००) रु. की आमदनी हुई और २०९४॥)॥। खर्च हुए।

द. हजारीलाल जैन, मंत्री.

संस्थाओं के मुख्य २ कार्य कर्ता वर्तमान में इस प्रकार हैं

प्रवन्ध विभागः—बा. जयकुमारजी जैन, मैनेजर

विश्रान्तिभवनः—भैयालालजी सुपरिन्टेन्डेन्ट

महाविद्यालयः—सिद्धांतशास्त्री पं. वन्शीधरजी प्रधानाध्यापक
पं. जीवन्धरजी न्यायतीर्थ न्यायाध्यापक.

बोर्डिंगहाउसः—पं. अमोलकचंदजी सुपरिन्टेन्डेन्ट.

दा. शी. सौ. कंचनबाई श्राविकाश्रमः—सुन्दरबाई सुपरिन्टेन्डेन्ट
प्यारीबाई अध्यापिका.
पं. सुंदरलालजी अध्यापक.

औषधालयः—वैद्यराज पं. कालूशंकरजी शर्मा प्रधान वैद्य.
आयुर्वेदाचार्य पं. कन्हैयालालजी जैन वैद्य.

भोजनशालाः—मुन्नालालजी सुपरिन्टेन्डेन्ट.

प्रसूतिगृहः—मिस भान्डारकर L. M. P. लेडी डाक्टर,
कृष्णाबाई सहायक.

श्री पारमार्थिक संस्थाओं में समय २ पर श्रीमंत महाराजाधिराज होल्कर नरेश, श्रीमंत महाराणी साहिबा, एवं श्रीमान् ए. जी. जी. महोदय, प्राइम मिनिस्टर सा० तथा अनेक ऑफिसर साहिबान एवं प्रतिष्ठित २ धीमानों श्रीमानों ने पधारने की कृपा की है और संस्थाओं के कार्यों का निरीक्षण कर अपनी शुभ सम्मतियां प्रदान की हैं जिन में से श्रीमंत महाराजा साहिब, श्रीमंत महारानीजी साहिबा तथा श्रीमान् ए. जी. जी. साहिब की सम्मतिया पाठकों के अवलोकनार्थ दी जाकर विवरण समाप्त किया जाता है:—

जँवरीबाग विश्रान्ति भवन (धर्मशाला) के उद्घाटनोत्सव पर दिये हुए श्रीमंत हिज हाईनेस महाराजा सवाई तुकोजीराव होल्कर बहादुर इन्दौर नरेश के अंग्रेजी भाषण का अनुवाद। ता. ३-४-१९१४

आज मुझे हर्ष है कि मैं सेठ हुकमचंदजी के निमंत्रणानुसार इस धर्मशाला के उद्घाटनार्थ यहां आया हूं जो कि उनके उदार दान का परिणाम है। उक्त सेठ इन्दौर नगर के एक प्रसिद्ध धनिक हैं, जिनने व्यापारिक ज्ञान तथा साहस से उज्वल कीर्ति प्राप्त की है। मैने सेठ साहब के निमंत्रण को सहर्ष स्वीकार किया क्यों कि उन्होंने ऐसे प्रशंसनीय दान से यह दर्शा दिया है कि परमात्मा ने उनको इतनी विभूति के साथ यह परोपकार बुद्धि भी दी है कि जिसमें वह अपने धनसे केवल स्वार्थ वा कुटुम्ब के अर्थ ही प्रेम नहीं करते किन्तु वह विशेषकर अपने अन्य बन्धुगण के उपकार के लिए भी करते हैं।

यह ही सर्वोत्तम उद्देश है कि प्रत्येक धनाढ्य को ध्यान में रखकर मनन करना चाहिये दया अथवा दान का महत्व जो जैनियों में है वही हिन्दू धर्म में भी है दोनों ही मत इस बात को मानते हैं कि मनुष्य को जो सुख दान देने से होता है वह दान लेने से कदापि नहीं होता। हमारी प्रजामें ऐसे अनेक मनुष्य हैं जिनमें दानकी प्रवृत्ति पाई जाती है किन्तु सखेद यह देखने में आता है कि यहां के धनाढ्य लोग भली भांति दानोपयोग करना नहीं जानते। ऐसा कहते हैं और यह ठीक भी है कि वह दान को कुमार्ग में लगाकर देशमें आलस्य का प्रचार करते हैं। आप लोग इस बात में सहमत होंगे कि सेठ हुकमचंदजी के दान के लिये ऐसा नहीं कहा जा सकता। यह संस्था, इसका उद्देश तथा जो लाभ अबतक इससे हुआ है वे सब सेठजी की बुद्धिमानी का परिचय देते हैं। प्रथम जैन मंदिर को लीजिए कि

उक्त सेठजी ने बड़ी बुद्धिमानी की है कि अपने दान को धर्म स्वरूप में आरम्भ किया है क्योंकि दान धर्म का एक मुख्य अंग है। हमारे हिन्दू लोगों में चाहे जैन हो या अजैन दोनों एकही नाम से धर्म कहकर पुकारते हैं किन्तु धर्म उस समय तक धर्म नहीं कहा जा सकता जबतक कि उसकी शुचि (पवित्रता) सहानुभूति और परोपकारी मार्ग को नहीं दिखलाती। अतएव सेठ हुकमचंदजी ने मंदिर के साथही एक धर्मशाला और एक बोर्डिंग पाठशाला भी खोलदी है। अभी जो रिपोर्ट पढ़ी गई है उससे यह जानकर मुझको आनंद हुआ कि ये दोनों संस्थाएं बहुत विख्यात और चित्ताकर्षक है। मुझको सबसे अधिक सन्तोष यह जानकर भी हुआ है कि इस छात्रालय के विद्यार्थी नियमानुसार अनुशासन में रहते हैं, व्यायाम करते हैं और यथाविधि शुद्धाचरण से रहते हैं विशेषकर इस बात से मुझे और भी प्रसन्नता हुई कि सुपरिन्टेन्डेन्ट विद्यार्थियों पर पूरा २ रौब रखते हैं तथा अध्ययन और आचरण पर पूरी निगरानी करते हैं। ठीक ऐसा ही होना चाहिये। विद्या उस समय तक विद्या नहीं कही जा सकती जब तक विद्यार्थियों को विनय व नियमों की पाबन्दी नहीं सिखाई जावे ऐसी कहावत भी है कि जिसने पहिले आज्ञा पालना नहीं सीखा वह दूसरों पर प्रभुत्व नहीं कर सकता। मै आशा करता हूं कि बोर्डिंग के छात्र इस को भलीभांति ध्यान में रखेंगे और यदि वे ऐसी अवस्था में रह कर बड़े होंगे तो पश्चात् वे सेठ हुकमचंदजी को उस दान के बदले में जिसने उनकी सहायता की है अनेक प्रकार से सुख और शान्ति पहुँचावेंगे। उनको स्मरण रखना चाहिए कि वे एक ऐसे धर्म के पालने वाले हैं जो कि अहिंसा का प्रचार ही नहीं वरन मनन भी करता है अतः शुद्धाचरण से जीवन व्यतीत करते हुए उनको यह दर्शा देना चाहिये कि वे जैन धर्म के अपूर्व अहिंसा रूपी आदर्श की ओर निरंतर पहुँचने का प्रयत्न कर रहे हैं।

अब मैं सेठ हुकमचंदजी को इस दान के लिए बधाई देता हूं और चाहता हूं कि इस संस्था की सदा उन्नति हो। मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि वह इन संस्थाओं को मंगलमई बनावे। मेरी अन्तिम अभिलाषा यह है कि आज का समारोह अन्य धनिक गणों को भी ऐसी उत्तेजना दे कि वे भी अपने द्रव्य का ऐसे श्रेष्ठ दान कार्य में प्रयोग करें जैसा कि हम यहां पर देखते है। अब मैं बहुत हर्ष के साथ इस संस्था का उद्घाटन करता हूं।

श्रीमंत सौभाग्यवती महाराणी चन्द्रावतीबाई साहिबा होल्कर का श्री कंचनबाई श्राविकाश्रम के उद्घाटनोत्सव पर दिया हुआ भाषण ता. ९ मार्च १९१६ ई०

श्रीमती सौभाग्यवती कंचनबाई और सभ्य महिलाओं!

आज आपके श्राविकाश्रम के खोलने के इस शुभ समय को देखकर मुझे परम आनंद होता है। सकल भारत खंड में वैसेही अपनी इन्दौर रियासत में स्त्री शिक्षा की अत्यंत आवश्यकता है और उसी शिक्षा की वृद्धि होने के हेतु शक्य उतना प्रयत्न तथा सहायता करना यह अपने सबों का आद्य कर्तव्य है। राजा और प्रजा, पुरुष और स्त्री इन सबों ने मिलकर इस पवित्र कार्य को उठाना चाहिये क्यों कि केवल राज्य नियमों से प्रजाजन की सहायता तथा सहानुभूति के बिना इस पवित्र कार्य की सिद्धि शीघ्रता से नहीं हो सकती इसलिए आपने बड़ी उदारता से जो यह आश्रम स्थापित किया है उससे मुझे बड़ी खुशी हुई है। आपने अन्य धनिक महाजनों के स्त्रीजन को इस कार्य में अत्यंत उपयुक्त उदाहरण बतलाया है। इस आश्रम का कार्य एक वर्ष से अबाधित चला है। यह देख कर मुझे उम्मेद है कि

आश्रम का प्रबंध व्यवस्थित रहेगा और उससे बहुत दिन तक जैन स्त्रियां लाभ उठावेंगीं। देहली से श्रीमती रामदेवी बाई ने इतने दूर आकर आनरेरी सुपरिन्टेन्डेटी का काम स्वीकार कर स्त्री जाति की उन्नति के लिए जो स्वार्थत्याग दिखाया है वह प्रशंसनीय है। स्त्री शिक्षा की संस्थाओं में कार्य करने योग्य विदुषी स्त्रियां मिलना कठिन है, तिस पर भी आपके आश्रम में ऐसी स्त्रियों ने सेवा करना स्वीकार किया है यह एक शुभ चिन्ह है। इतनी दूर और बहुत जगहों से शिक्षा के लिये आपके आश्रम में इतनी स्त्रियां आती है यह आश्रम का भूषण है और भावी सिद्धि का सूचक है। रिपोर्ट परसे मालूम होता है कि गत वर्षमें ४२ विद्यार्थिनियां दाखिल हुई उनमें से केवल २३ विद्यार्थिनियां आश्रम में अभी हाल में पढ़ रही है यानी बहुतसी स्त्रियां बहुत ही थोड़े काल तक आश्रम में पढ़कर अपने २ घर चली गईं इतने अल्प कालमें ज्यादा शिक्षण होना संभव नहीं अगर वे बहुत काल तक आश्रम में रहकर अभ्यास का परिश्रम उठाती तो उनकी शिक्षा पूर्ण पने से होकर और कन्याओं को भी फायदा दे सकतीं। इस समय पाठिकाओंकी अपने देश में बहुत आवश्यकता है इसलिए आपके आश्रम में यह अध्यापिका तैयार करने का प्रबन्ध अच्छीतौर से हो जावेगा और यहांपर आनेवाली स्त्रियां पाठिकाओं का काम करने लायक बन जावेंगीं तो उनके जीवन की सफलता होकर स्त्री शिक्षा के कार्य में विशेष सहायता हो सकेगी।

अन्त में आज जो आपने मुझे सन्मान पत्र देने का परिश्रम उठाया है उसके लिये मै आपको धन्यवाद देती हूं और आपके आश्रम के हित के बारे में मुझे हमेशा चिन्ता रहेगी। चारों ओर से आपके आश्रम में विद्यार्थिनियां आवे और जैन स्त्रियोंमें दिनपर दिन विद्या की वृद्धि होवे यह इच्छा प्रदर्शित करके अन्त मै आपका यह श्राविकाश्रम खोलती हूं।

Presidential speech by Hon'ble Mr. R. C. R. Glancy, C. S. I., C. I. E., I. C. S. Agent to the Governor General in C. I. on the occasion of the 12th year's anniversary of the Institutions, on 16 January 1927.

I have listened with great interest to the report of the Managing Committee on the working of the various Institutions which owe their existance to the generosity and public spirit of Sir Sarupchand Hukamchand.

I understand that one of the obligations laid on every Jain by his creed is that of giving charity in the form of knowledge, medicine, comfort & food; and I observe that each and all of these injunctions are served by one or the other of the various institutions combined in this charitable organization. We must therefore commend both of the piety and generosity of the benefactor who has endowed the foundation.

The Jains are a wealthy Community and their charities are numerous but this donation of over eleven lakhs from one individual must even amongst Jains be remarkable.

I wish every success to these institutions and I shall have very much pleasure in opening this extention of the Boarding House. I hope the scholars, who find a home here, may by their learning bring honour and credit to the foundation and to their benefactor Sir Sarupchand Hukamchand.

उपरोक्त भाषण का अनुवादः—

मैंने उन संस्थाओं के कार्य की जो कि सेठ सरूपचंदजी हुकमचंदजी की उदारता एवं सार्वजनिक सेवाके ध्येय से स्थापित की है मैनेजिंग कमेटी की रिपोर्ट ध्यान पूर्वक सुनी है।

मैं समझता हूं कि जैन धर्म की पद्धति के अनुसार प्रत्येक जैनी का कर्तव्य है कि वह आहारदान, औषधिदान, विद्यादान और अभयदान करे तदनुसार मै देखता हूं कि उपरोक्त सब प्रकार के दानों की इन संस्थाओं से जो कि एक ही संस्थापक द्वारा स्थापित की गई है, एक न एक रूप में पूर्ति की जाती है। अतएव हमको इन संस्थाओं के संस्थापक की उदारता व धार्मिक बुद्धि की प्रशंसा करना चाहिये।

जैन जाति बहुत धनाढ्य है और जैनियों द्वारा दान भी बहुत किये गये है किन्तु ग्यारह लाख से भी अधिक दान एकही व्यक्ति के द्वारा होना जैन जाति के लिए उल्लेखनीय एवं प्रशंसनीय है।

मै इन संस्थाओं की हरएक प्रकार से सफलता की इच्छा करता हूं और मुझे बोर्डिंग हाउस की मंजिल के उद्घाटन में बहुत प्रसन्नता है। मुझे आशा है कि जो विद्यार्थी यहां आश्रय पावें वे विद्या का लाभ उठाकर संस्था व संस्थापक सेठ सरूपचंदजी हुकमचंदजी की कीर्ति को बढ़ावें।

× × × ×

सज्जनो! जो महाशय शुभकार्य में द्रव्य खर्च करते हैं, दान देते हैं, समाज सेवा के लिये भिन्न भिन्न पारमार्थिक संस्थाएँ खोलते हैं,

धार्मिक कार्यों में यथाशक्ति अपना तन, मन, धन, अर्पण करते हैं
उनके द्वारा जो समाज को लाभ होता है उसका श्रेय उन दानी महाशयों
को तो है ही किन्तु उससे कई गुना अधिक श्रेय उन प्रजापालकों
को है जिनकी छत्र छाया में वे संस्थाएँ जनता की सेवा करती हुई अपने
उद्देश्य की पूर्ति निर्विघ्नतया करती हैं--हमारे भूतपूर्व महाराजा साहब श्रीमंत
हिज हाईनेस सर तुकोजीराव होल्कर बहादुर ने जो ३-४-१९१४ को
जँवरी बाग धर्मशाला (जो वर्तमान में विश्रांतिभवन के नाम से प्रसिद्ध
है) के उद्घाटन अवसर पर अपना भाषण दिया था उसमें यह
फरमाया था कि " मै सेठ हुकमचंदजी को इस दान के लिये बधाई
देता हूं और चाहता हूं कि संस्था की सदा उन्नति हो। मैं ईश्वर से
प्रार्थना करता हूं कि वह इन संस्थाओं को मंगलमयी बनावे...." । इनही
उत्साह वर्द्धक वाक्यों से व समय समय पर कई तरह की सुविधाओं
के प्रदान करने से इन संस्थाओं ने दिनो दिन सार्वजनिक सेवा
करते हुए अधिक उन्नति करली है जिसके लिये हम श्रीमंत भूतपूर्व
महाराजा साहब के अत्यंत आभारी हैं।

हमारे वर्तमान नरेश श्रीमंत महाराजाधिराज राजराजेश्वर सवाई
श्री यशवंतराव होल्कर बहादुर, जिनके शुभ नामसे सेठ साहब का श्री
प्रिन्स यशवंतराव आयुर्वेदीय औषधालय बियाबानी में गरीबों की निःस्वार्थ
सेवा कर रहा है, के हम अत्यंत आभारी हैं जिनकी इन संस्थाओं के प्रति
पूर्ण सहानुभूति रहती है। सर हुकमचंद आईहॉस्पिटल तथा कल्याणमल
नर्सिंगहोम इनका उद्घाटन समारंभ भी श्रीमंत ने अपने करकमलों
द्वारा किया था संस्थाओं के संस्थापक, प्रबन्ध कारिणी कमेटी तथा
प्रजाजन श्रीमंत के चिरकृतज्ञ हैं और श्रीमंत के पूर्ण दीर्घायु होने की श्री
जिनेन्द्रभगवान् से प्रार्थना करते है।

श्रीमान् वजीरूद्दौला रायबहादुर एस. एम. बापना साहब सी. आई. ई., बी. ए., बी. एस सी. एल एल. बी., प्राईम मिनिस्टर होल्कर स्टेट की, शुभ प्रेरणा से सेठ साहब द्वारा समय समय पर लोकोपयोगी संस्थाएँ (आंख का अस्पताल, नर्सिंग होम आदि) खोली गई। आपही ने जब आप होम मिनिस्टर के पद पर थे श्री प्रिन्स यशवंतराव आयुर्वेदीय औषधालय तथा प्रसूतिगृह की जमीन पसंद करके उक्त दोनों संस्थाओं के लिये इमारतें बनवाने की शुभ सम्मति दी। इस तरह आपकी इन संस्थाओं के लिये पूर्ण सहायता रही है तथा आप स्वयं भी समय समय पर संस्थाओं का निरीक्षण करते रहने की कृपा करते है, जिसके लिये हम आपके अत्यंत आभारी है। स्वर्गीय सर चन्दावरकर साहब की भी, जो होल्कर स्टेट के भूतपूर्व प्राईम मिनिस्टर थे, उस समय मे संस्थाओं पर पूर्ण कृपा दृष्टि थी।

श्रीमान् एतमादुद्दौल्ला सरदार माधोराव विनायकराव कीबे, रायबहादुर एम. ए., मिसेस कीबे, श्रीमान् प्रफुल्लचन्द्र बसु, एम. ए. पीएच. डी., बी. एल. प्रिन्सिपाल होल्कर कॉलेज, डी. के. भावे साहब एम. ए., बी. एस. सी. (एडिन) म्युनिसिपल कमिश्नर साहब तथा मुन्तजिम बहादुर डी. बी. रानडे साहब एम. ए., सी. टी. डायरेक्टर ऑफ स्कूल एज्यूकेशन, मुंतजिम खास बहादुर रायबहादुर डाक्टर सरजूप्रसादजी भूतपूर्व स्टेट सर्जन व ले. कर्नल जे. आर. जे. ट्रिल, सी. आई. ई. इंस्पेक्टर जनरल ऑफ हॉस्पिटल आदि महाशयों को भी हार्दिक धन्यवाद देते है जिन्होंने समय समय पर इन संस्थाओं का निरीक्षण कर, उचित सम्मति प्रदान की और करते रहते हैं।

साथही हीरक जयन्ति महोत्सव के सदस्यों को जिन्होंने उत्सव को सफल बनाने में पूर्ण योग दिया है, हार्दिक धन्यवाद देते है।

अन्त में देवाधिदेव श्री जिनेन्द्र भगवान को स्मरण कर यही हार्दिक भावना है कि ये संस्थाएँ हरप्रकार से जनता की पूर्ण सेवा करती हुई दिनो दिन उन्नति को प्राप्त होवें और संस्थापक महोदय की विमल कीर्ति को चिरस्थायिनी बनावें।

पारमार्थिक संस्थाओं की प्रबन्ध कारिणी कमेटी के सदस्यों की नामावली.

१ श्रीमान् दा. वी. ती. शि. रा. ब. रा. भू. रावराजा सर सेठ हुकमचंदजी सा. [सभापति व कोषाध्यक्ष]
२ „ रा. ब. रा. भू. सेठ हीरालालजी सा. [उप सभापति]
३ „ जैन जाति भूषण लाला हजारीलालजी जैन इन्दौर (मंत्री)

—: सभासद :—

४ „ वाणिज्यभूषण रायसाहब सेठ लालचंदजी सेठी झालरापाटन
५ „ कुंवर भागचंदजी सोनी अजमेर
६ „ „ रतनलालजी मोदी इन्दौर
७ „ भैया साहब राजकुमारसिंहजी इन्दौर
८ „ मुन्तजिम बहादुर बा. जौहरीलालजी मित्तल एम. ए., एल. एल. बी. लीगल रिमैम्ब्रेन्सर व एडवोकेट जनरल होल्कर स्टेट इन्दौर
९ „ सेठ चाऊलालजी टोंग्या इन्दौर
१० „ सेठ गुलाबचंदजी टोंग्या इन्दौर
११ „ सेठ गेंदालालजी बडजात्या इन्दौर
१२ „ सेठ फतेहचंदजी जौहरी इन्दौर
१३ „ सेठ समीरमलजी अजमेरा इन्दौर
१४ „ भाई लक्ष्मीचंदजी काशलीवाल इन्दौर
१५ „ बाबू मानमलजी काशलीवाल इंदौर
१६ „ जैनजातिभूषण ला. भगवानदासजी बड़नगर
१७ „ स्या. वा. वि. वा. पं. खूबचंदजी शास्त्री इन्दौर
१८ „ बा. सुखचंदजी जैन बी. ए. हे. मा. ति. जैन हाई-स्कूल इन्दौर

१९ ,, प्रधानाध्यापकजी महाविद्यालय जँवरीबाग इन्दौर
२० ,, सुपरिन्टेन्डेन्ट जँवरीबाग बोर्डिंग हाउस इन्दौर
२१ ,, प्रधान वैद्यराज प्रि. य. आयुर्वे. जैन औषधालय इन्दौर

पारमार्थिक संस्थाओं की ट्रस्ट कमेटी के सदस्यों की नामावली.

१ श्रीमान् दा. वी. ती. शि. रा. ब. रा. भू. रावराजा सर सेठ हुकमचंदजी सा. इन्दौर (सभापति)
२ ,, रा. ब. रा. भू. हीरालालजी साहिब इन्दौर
३ ,, भैया साहब राजकुमारसिंहजी इन्दौर
४ ,, वाणिज्यभूषण रायसाहब सेठ लालचंदजी सा. सेठी झालरापाटन
५ ,, सेठ फतेहचंदजी जौंहरी इन्दौर
६ ,, बा. मानमलजी काशलीवाल इन्दौर
७ ,, जैन जाति भूषण ला. हजारीलालजी इन्दौर (मंत्री)

भावना
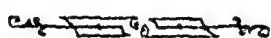
श्रीरावराजा भाग्यशाली सेठजी जयवन्त हों ।
दाम्पत्य सुख को भोगते सद्ज्ञान में भी लीन हों ॥
नर के यथोचित कार्य्य कर नरवीर पद भागी बनें ।
वीरत्व को निज साथ लेकर श्रेष्ठ संतति को जने ॥
रमते रहें शुभ कार्य्य में सन्मार्ग संचारी बनें ।
राजा प्रजा को प्रेम से वश में करें प्रेमी बने ॥
यह चंचला लक्ष्मी समझ परमार्थ में देते रहें ।
बहु दान दें जिससे दुखीजन शांति को पाते रहें ॥
हानी तथा लाभादि में गम्भीर भाव सदा धरें ।
दुर्वृत्तियों को त्यागकर सद्वृत्तियाँ धारण करे ॥
रजनी प्रथा को दूर कर गुण-चंद्र का आलोक दें ।
सब नीति गुण हिय में रखें निज बंधु गण को ज्ञान दें ॥
रवि तेज के सम आपका यश लोक मे फैले सदा ।
सेवी बनें जिन धर्म के सद्गुरु शरण हो सर्वदा ॥
ठग चोर दुर्जन मानवों से आप चिर रक्षित रहे ।
हुशियार होकर बुद्धि वैभव से सदा भूपित रहे ॥
कर्तव्य पथ में लीन हों सब में सदा समभाव हों ।
मन में हमेशा मोक्ष मग की प्राप्ति के सद्भाव हों ॥
चंद्रांशु के सम आपके गुणवृन्द नित शोभित रहें ।
दयनीय जन पर हो दया अरु आप चिरजीवी रहें ॥
जीतें सदा इन्द्रियऽरुमन को भव्य पद पाते रहें ।
हम छात्रजन आनंद से गुणगान नित गाते रहें ॥

जँवरीबाग छात्रमंडल.

सेठ साहब द्वारा समय समय पर दिये हुए दान की सूची आगे दी जाती है पाठक दान की पद्धति सीखना चाहें तो इस सूचीसे बहुत कुछ सीख सक्ते हैं ।

श्री.

सेठसाहब द्वारा किये गये दान तथा धर्म कार्य्य में खर्च की हुई रकम की विगत.

संवत्	विगत कार्य.	दानकी रकम.	संवत्	विगत कार्य.	दानकी रकम.
१९३७	बड़वानी सिद्ध क्षेत्र पर मंदिर बनवाने व प्रतिष्ठा के भाग में दिये ...	१०,०००	१९६८	दिल्ली दरबार से गिरनारजी की यात्रार्थ गये जिसमे खर्च ...	७,०००
१९५५	कछाल्या ग्राम में मंदिर बनवाने व प्रतिष्ठा कराने के लिये ...	१५,०००	१९७०	मथुरा महासभा के अधिवेशन के समय महासभा के चालू खाते मे दिये ...	२,५००
१९५७	मारवाडी मंदिर शक्कर बाजार पर कलश चढाने मे तीनो भाईयोंने खर्च किये ...	२५,०००		उक्त सफर खर्च ...	५००
१९५९	नसिया की इमारत व मंदिर बनाने और बिम्ब प्रतिष्ठा कराने मे खर्च किये ...	२,००,०००	,,	पालीताना में बम्बई प्रान्तिक सभा के अधिवेशन के समय दान दिया जिसमें ४ लाख जॅवरीबाग में महाविद्यालय, बोर्डिंग हाऊस, धर्मशाला, कंचनबाई श्राविकाश्रम आदि संस्थाओं में लगे। इसी में १००००) उदासनाश्रम मे लगे ...	४,००,०००
१९६३	जैन बद्री मूढ बद्री की यात्रार्थ जाने मे खर्च किये ...	१०,०००			

१९६३ से ७० तक	गमियाजी में बोर्डिंग १००) मासिक से शुरू किया सात वर्ष तक चलता रहा...	८,४००	१९७०	बड़वानी सिद्धक्षेत्र पर जीर्णोद्धार के लिये ...	२,१००
१९६०	प्लेग के समय गरीबों के झोपड़े बनवाने के लिये ...	१,०००	,,	श्री ऋषभ ब्रह्मचर्याश्रम को दिये मध्ये १६५००) के ...	१०,०००
१९६६ से १९७२	असहाय जैनियों के लिये एक चौका जवाहर बाजार में खुलवाया जिसमें १००) मासिक खर्च किया जाता था ...	७,२००	,,	बम्बई भोलेश्वर के मंदिर के लिये दिये पानडी में ...	१०,०००
			१९७०	श्रीमंत महाराजा सा० विलायत से सानंद पधारे इस खुशी में सेठजी ने दिये जिसके व्याज सहित ३४०००)...	३४,०००
१९६६	शिखरजी के पर्वत रक्षा फण्ड में इन्दौर से २५,०००) करवा दिये जिसमें आपके ...	५,०००	,,	महाराजा तुकोजीराव हॉस्पिटल में नरसेज इंस्टीट्यूशन में लगे ...	२०,०००
,,	शिखरजी पर महासभा के प्रबंध खाते में दिये जिसके व्याज से अब तक प्रबंध खाते का काम चल रहा है ...	१०,०००	,,	बडनगर में बिम्बप्रतिष्ठा के समय दि. जैन मालवा प्रान्तिक सभा के चिरस्थायी चंदे में दिये ...	३,६००
,,	उक्त जगह जाने आने में लगे ...	४,०००	१९७१	दीतवारिया में मंदिरजी बनवाने में कुल खर्च सवा पांच लाख हुआ जिसमें १ लाख दोनों भाईयों ने दिया, शेष १९८८ तक लगे ...	५,२५,०००
१९६८	श्रीमंत महाराजा साहब के कोरोनेशन के समय पब्लिक कार्य के लिये दिये ...	२१,०००			

संवत्.	विगत कार्य.	दानकी रकम	संवत्	विगत कार्य.	दानकी रकम,
१९७१	छावनी के वॉररीलीफ फंड के चंदे में दिये ...	८,०००	१९७२	इन्दौर कृष्णपुरा की जनरल लायब्रेरी को ...	१,०००
,,	श्रीमत महाराजा साहब की तबियत ठीक होने की खुशी में गरीबो को कपडा बाटा ...	५,००	१९७३	भय्यासाहब हीरालालजी के विवाह मे धार्मिक संस्थाओं को ...	५,०००
,,	किग एडवर्ड हॉस्पिटल छावनी मे वार्ड बनवाने को दिये .	४०,०००	,,	श्रीमती सौ सेठानीजी के व्रत-उद्यापन के समय दिया गया जिसमे १००००) दीतवारिया मंदिर मे, १६६२१) पारमार्थिक संस्था और ५०००) शेषमंदिरों को ...	३१,६२१
,,	लेडी ओडवायर गर्ल स्कूल छावनी के स्थाई फंड मे ...	१०,०००			
,,	दीतवारिया बाजार मे जाति की रसोई के लिये भोजनशाला बनवाने मे लगे .	९७,०००	,,	बुंदेलखंड की यात्रा मे खर्चे ...	५,०००
,,	४२ वे जन्मगांठ के समय जॅवरी-बाग बोर्डिग के कर्मचारी लोगो के लिये मकान बनवाने मे दिये ...	३०,०००		वारलोन एक, एक करोड का किया उस समय अवरडे फंड मे १०००) और चीफ कमिश्नर मार्फत गरीबों के लिये ५००) ..	१,५००

संवत्	विवरण	रुपये
,,	स्वर्गीय दानवीर सेठ माणिकचंदजी की शोक सभा के समय ५०००) जॅवरीबाग लायब्रेरी के लिये और १०००) स्मारक फंड में ...	६,०००
,,	हिंदू विश्व विद्यालय बनारस में जैन मंदिर बनवाने को तीनो भाईयोंने मिलकर १५०००) दिये जिसमे सेठ साहिब के ..	५,०००
,,	स्याद्वाद महाविद्यालय बनारस को दिये ...	१,०००
,,	अष्टम हिंदी साहित्य सम्मेलन में दिये जिसमे २००२) स्वागत कारिणी के खर्च के लिये, १००००) हिंदी साहित्य के कोप के लिये और ७५१) इन्दौरकी उन्नति के लिये ...	१२,७५३
१९७१ से १९७२	छावनी में मेडिकल स्कूलकी बिल्डिंग खरीदकर अस्पताल को दे दी...	२५,०००
१९७२	कान्यकुब्ज के अधिवेशनमे सहायता...	१,०००

संवत्	विवरण	रुपये
,,	गरीब प्रजाके लिये सस्ते भावका तौल गेंहू का लगाया उसमें घाटा उठाया ...	७५,०००
१९७४	दिल्ली में लेडी हार्डिंग मेडिकल हॉस्पिटल में वार्ड बनवाने को ...	४,००,०००
,,	मिशन गर्ल्स स्कूल छावनी की बिल्डिंग की खरीद करदी ...	२५,०००
,,	इन्दौर में एक आयुर्वेदीय औषधालय बनाने के लिये ...	१,५०,०००
,,	दि. जैन विधवा सहायता व असहाय भोजनशाला खोलने को दिये जो भोजनालय १००) रु. मासिक पर चल रहा था वहभी इससे मिला दिया गया ...	१,००,०००
१९७५	बम्बई चेम्बर ऑफ कामर्स को दान दिया ...	२५,०००
१९७६	दक्षिण फीमेल एज्यूकेशन सोसायटी पूना को दान दिया ...	१,०००

संवत.	विगत कार्य.	दानकी रकम	संवत	विगत कार्य	दानकी रकम
१९७६	श्रीमंत महाराजा साहब के पास यशवत क्लब मे लगाने को भेजे ...	५०,०००	१९७८	इदौर मे मोदीजी की नसियां मे जीर्णोद्धार के वास्ते ..	२,५००
,,	यशवत क्लब का काम अधूरा रहजाने से और जरूरत होनेसे सेठ साहब ने फिर दिये	२५,०००	,,	सेठ सरूपचदजी हुकमचदजी की पारमार्थिक सस्थाओ की ट्रस्टडीड रजिस्ट्री कराई रुपया ८६५०००) की रकम से ऊपर सब अलग अलग बतादी है और वह रकम यहां योग मे नही मिलाई गई ..	...
,,	जॉली क्लब की उद्योग शाला को .	२,१००			
,,	औषधालय, अनाथालय बडनगर ..	६०१			
,,	छावनी मे जैन मदिरजी की पानडी मे दिये ...	७०१	,,	श्रीमती इन्द्राबाई महाराणी साहिबा के नाम से स्त्रियोपयोगी नर्सों के लिये संस्था की बिल्डिग बनाने को दिये ...	२५,०००
१९७६	पब्लिक लाभार्थ मार्फत ग्वालियर महाराज के ...	११,०००			
,,	सर नाइट के इन्वेस्टीचर मे जैन धर्मशाला शिमला को ...	१,५०१	,,	बड्वानी मे धर्मशाला बनवाने को ४०००) और मूर्ति जीर्णोद्धार के के लिये १०००) ..	५,०००

,,	बीकानेर में पब्लिक लाभ के लिये मार्फत बीकानेर महाराज ...	५,०००
१९७६	श्रीमती तारादेवीजी के विवाह मे संस्थाओ को दान ...	२६,०००
-१९७७	प्रिन्स यशवन्तराव आयुर्वेदीय जैन औषधालय की ओपेनिंग सेरेमनी के समय दान दिया औषधालय ६००००) प्रबंध विभाग ४००००) ...	१,००,०००
,,	अहिल्या गोमाता गोशाला, पींजरापोल की पानडी में ...	३,१०१
१९७८	दिगम्बर जैन सिद्ध क्षेत्र शिखरजी के तीर्थ रक्षा फंड मे ...	११,०००
,,	पारमार्थिक संस्थाओ के शेअर घरू रखकर घाटा उठाया ...	३,००,०००
,,	स्वदेशी व स्वराज्य फंड मे हस्ते चांदकरणजी शारदा ..	२,५०१
,,	दिल्ली प्रतिष्ठा के समय दिया गया दान ...	५१,०००
,,	श्री सम्मेद शिखरजी की यात्रा में जगह जगह पर धर्मशाला व जीर्णोद्धार व मंदिर वगैरा बनवाने को दिये ...	३७,५००
१९८०	श्री सम्मेद शिखरजी की यात्रा का खर्च ...	१५,०००
,,	अभिनंदन पत्रों के गृहण करने के बाद पुनः पारमार्थिक संस्थाओं के प्रसूतिगृह आदि वास्ते दान ...	१,००,०००
१९८१	श्री जैन बद्री महामस्तकाभिषेक के समय यात्रार्थ खर्च और कलश वगैरा के लिये दिये ...	१३,०००
,,	मक्शीजी में मुकद्दमे खर्च व धर्मशाला जीर्णोद्धार के लिये ...	२,५००
,,	सागवाडा पाठशाला को ...	१,०००

संवत.	विगत कार्य.	दानकी रकम
१९८३	जॅवरीबाग मे संस्थाओ का द्वादश वर्षीय महोत्सव किया जिसमे सेठजी के खर्च हुए ...	१०,०००
१९८४	तीनों विवाह के उपलक्ष मे दान...	३१,०००
,,	शिखरजी की यात्रार्थ जाने आने व दान धर्म मे लगाये ...	५,०००
१९८४	शिखरजी पर भारत वर्षीय दि. जैन तीर्थ कमेटी के स्थायी फंड मे दिये ...	५,१००
१९८५	डेली कॉलेज मे विद्या दान मे ...	२५,०००
,,	इन्दौर के खेती वाडी मेहकमे मे स्कालर्शिप के वास्ते और ओद्योगिक शिक्षा वास्ते ...	४,०००
१९८६	अन्न, वस्त्र बाटा गया ...	१,०००
,,	स्याद्वाद महाविद्यालय काशी को सालाना तथा फुटकर ...	४,०००
,,	जैन बद्री, मूड बद्री की यात्रा मे खर्च हुये ...	६,५००
,,	थेन्क्स् गिविंग फंड मे ...	१,०००
,,	जैन सिद्धांत विद्यालय मोरेना को ५ साल तक ६००) साल और सात साल तक ३००) साल ...	५,१००
१९८८	पौत्र के जन्मोत्सव के समय संस्थाओं को दान ...	१,२५१

,,	श्रीमती सौ. सेठानीजी के सफलता पूर्वक ऑपरेशन की खुशी में आंख के अस्पताल के वास्ते ...	९१,०००	१९६० से १९८०	छोटी २ रकमे १००) से १०००) तक के भीतर की जो समय समय पर दान दी गई ..	४,००,०००
,,	प्रसूतिगृह के वार्ड बनवाने को ...	९,०००	१९८९	व्रत उद्यापन के समय दान व उत्सव खर्च ..	१,३५,०००
,,	गरीबों को अन्न, वस्त्र ...	५००			
१९८६	श्रीमती सौ. ताराबाई के मृत्यु समय एम. ए. एल–एल. बी. वार्ड बनाने वास्ते ...	५,०००	१९९०	श्रीमन्त महाराजा साहब के मार्फत किसानो को रिलीफ वास्ते दिये ...	२,००,०००
				टोटल ...	४१,१०,०००